जन्नती औरत

इस किताब में जन्नत में जाने वाली औरतों के औसाफ़
और उनकी निशानियों को तफ़सील से बयान किया गया है।

जिसका पढ़ना हर औरत के लिए बेहद ज़रूरी है

लेखक

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इरशाद क़ासमी

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ج

जन्नती औरत

इस किताब में जन्नत में जाने वाली औरतों के औसाफ़ और उनकी निशानियों को तफ़सील से बयान किया गया है।

जिसका पढ़ना हर औरत के लिए बेहद ज़रूरी है।

लेखक
मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इरशाद क़ासमी

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

जन्नती औरत

लेखक

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इरशाद क़ासमी

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Jannati Aurat

Author:
Maulana Mufti Muhammad Irshad Qasmi

Edition: **2016**

Pages: **232**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय-सूची

शौहर का मुक़ाम, मर्तबा और ख़िदमात का सवाब

हमल, रज़ाअत और परवरिश के बारे में

पर्दा वग़ैरह के बारे में अहादीस

लिबास वग़ैरह के बारे में अहादीस

ज़कात और सद्क़ात के बारे में अहादीस

जहन्नम में औरतों के ज़्यादा जाने के बारे में अहादीस

नफ़ा बख़्श बातें

जन्नत में ले जाने वाले आमाल का बयान

दुआएँ, अज़्कार व वज़ाइफ़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

पेश-ए-लफ़्ज़

ख़ालिके कायनात ने इन्सानी दुनिया में औरतों को जो मुक़ाम व मर्तबा बख़्शा है और जिन ख़ूबियों और सिफ़ात से नवाज़ा है और इस दुनिया में इन्सानी खुशगवार ज़िन्दगी और पुरसुकून ज़िन्दगी के लिए औरत को जो बुनियाद का दर्जा हासिल है वह अहले बसीरत व अहबाबे मारिफ़त पर छुपा नहीं।

इस ज़माने में इस बुनियाद को मग़िरबी तमद्दुन और नई तहज़ीब ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और घरेलू व समाजी निज़ाम जो बिगड़ा है और घरेलू पुरसुकून माहौल जो ख़राब हुआ है। उसमें इस नए तमद्दुन को बहुत दख़ल है। औरतों को घर के बआफ़ियत पुरसुकून माहौल से निकाल कर अजानिब और ग़ैरों से मिलाकर आफ़िस और दफ़्तर में बिठाकर बच्चों की तर्बियत और शौहर के हुक़ूक़ को पामाल किया है। मुसावात (बराबरी) का सब्ज़ बाग़ दिखाकर औरतों पर ज़ुल्म ढाया है। शरीअ़त से हटाकर नई तालीम दिलाकर यूरोपियन तहज़ीब से मुतास्सिर होकर उसके अम्न व सुकून व आफ़ियत और इफ़्फ़त की ज़िन्दगी को ख़ाक में मिला डाला है।

जिसने उसे पैदा किया, वुजूद बख़्शा, मादूम (नापैद) से मौजूद किया, वह उसके मिज़ाज व फ़ितरत से ख़ूब वाक़िफ़ है। उसने इसके नाज़ुक रिश्ते को क़ुरआनी तालीमात में ख़ूब अच्छी तरह बयान किया है। अपने नबी की ज़बानी इस सिन्फ़े नाज़ुक (औरतों) की सलाह (नेकी)

और उन उमूर को जिनसे दीनी व दुनियावी कामयाबी मुताल्लिक़ है जिस से इस दुनिया में जन्नत निशाँ ख़ुशगवार जिन्दगी वाबस्ता है। उनकी तालीमात व इर्शादात की रोशनी में वाज़ेह किया है और उसकी रहनुमाई की है। अफ़सोस कि हमारे माहौल में मर्दों को तो कुछ न कुछ दीनी मालूमात होती रहती हैं, मगर औरतों में दीनी मालूमात का अक्सर फ़ुक़दान (न होना) है। दीनी नादानी और जहालत की वजह से अक्सर उनकी दीन व दुनिया की भलाई जाती रहती है। आप इल्मी व किताबी दुनिया में औरतों के बारे में बहुत सी किताबें पाएंगे। दूसरी किताबों के मुक़ाबले में इस किताब की तर्तीब आप अलग और जुदागाना पाएंगे।

आजिज़ ने इस किताब में अहादीसे नबवी सल्ल० के ज़ख़ीरे से औरतों के मुताल्लिक़ तमाम तर बातें जिनकी दीनी और दुनियावी और ख़ुशगवार ज़िन्दगी में शौहर की इताअ़त फ़रमांबरदारी के एतिबार से ज़रूरत पड़ती है बयान कर दिया है। इर्शादाते नबवी सल्ल० के ज़रिए से औरतों की फलाह व बहबूद के रास्ते जिनसे दीन व दुनिया दोनों ही कामियाब व सआ़दतमन्द ज़िन्दगी हासिल हो सकती है और एक ख़ुशगवार माहौल जन्नत निशाँ ज़िन्दगी में रह सकती है। निहायत तफ़्सील से ज़िक्र कर दिया है। इसमें औरतों की फ़ितरत के तमामतर पहलुओं को सामने रखा गया है। औरतों के माहौल में जो सलाह (नेकी) व तक़्वा के ख़िलाफ़, राहे मुस्तक़ीम के ख़िलाफ़ बातें और अ़मल राइज हैं, जिनसे वे जन्नत के रास्ते से हटकर राहे जहन्नम पर लग गई हैं। उन उमूर की भी तफ़्सील अहादीसे किराम की रोशनी में कर दी गई है। अपनी माओं बहनों से हमें उम्मीद है कि उनके हक़ में यह किताब बे-इन्तिहा नफ़ा बख़्श होगी। इसके मुताले और इस पर अ़मल करके वह इस दुनिया

में भी अम्न व सुकून, इफ़्फ़त व आफ़ियत की ज़िन्दगी गुज़ारकर घरेलू खुशगवार माहौल में रहती हुई सलाह (नेकी) व तक़्वे के आमाल से आरास्ता होकर जन्नत की मुस्तहिक़ हो सकती हैं।

दुआ है कि खुदाए पाक औरतों की दुनिया में इसे क़्यामत तक क़ुबूल फ़रमाए और इस किताब के ज़रिए वे दीन व दुनिया की खुशगवार ज़िन्दगी हासिल कर सकें। जहन्नम वाले आमाल से बचकर जन्नत वाले आमाल में उनका रुख़ हो जाए। पूरी उम्मते मुस्लिमा को ख़ासकर औरतों को सिराते मुस्तक़ीम और सुन्नत व शरीअ़त वाली ज़िन्दगी नसीब फ़रमाए। आजिज़ की कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर अपनी रज़ामन्दी और आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। मेहशर के दिन दामने अफ़्व में जगह मरहमत फ़रमाकर सिद्दीक़ीन व सालिहीन के ज़ुमरे में शामिल फ़रमाए। आमीन

खुदाए पाक का बे-इन्तिहा फ़ज़्ल व करम और आजिज़ के लिए खुशी की बात है कि इस **"जन्नती औरत"** को हमारे मोहतरम व मुकर्रम भाई अलहाज मुहम्मद नासिर ख़ान साहब अपने इदारे فرید بکڈپو پرائیویٹ لمیٹڈ से छाप रहे हैं। खुदाए पाक क़ुबूल फ़रमाए, दोनों जहाँ की सआदत व खुशहाली से नवाज़े, उनके इदारे को दीन-ए-पाक की इशाअ़त, शरीअ़त व सुन्नत की तरवीज में आलमी पैमाने पर क़ुबूल फ़रमाए और उनकी इल्मी तिजारत को फ़रोग़ अता फ़रमाए। आमीन वस्सलाम

मुहम्मद इरशाद अल्-क़ासमी भागलपुरी
उस्ताज़े हदीस मद्रसा रियाज़ुल उ़लूम गौरेनी, जौनपुर
1-रबीउ़ल अव्वल 1421 हिज्री, जून 2000

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नेक औरतों का ज़िक्र और उनके फ़ज़ाइल

जन्नती औरत कौन?

عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِنِسَآءِ كُمْ فِي الْجَنَّةِ قُلْنَا بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ وَدُوْدٌ وَلُوْدٌ اِذَا غَضِبَتْ اَوْ اُسِئَ اِلَيْهَا اَوْ غَضِبَ زَوْجُهَا قَالَتْ هٰذِهٖ يَدِيْ فِيْ يَدِكَ لَآ اَكْتَحِلُ بِغَمْضٍ حَتّٰى تَرْضٰى ط (ترغیب،جلد۳،صفحہ۵۷)

तर्जुमाः– हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, क्या मैं तुमको जन्नती औरत के बारे में न बता दूँ, वह कौन है, हमने कहा ज़रूर ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप सल्ल० ने फ़रमाया, शौहर पर फ़रेफ़ता, ज़्यादा बच्चे जनने वाली, जब यह ग़ुस्सा हो जाए या उसे कुछ बुरा भला कह दिया जाए या उसका शौहर नाराज़ हो जाए तो यह औरत (शौहर को राज़ी करते हुए) कहे मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है मैं उस वक़्त तक न सोऊंगी जब तक कि तुम ख़ुश न हो जाओ।

फ़ायदाः– इस हदीसे पाक में जन्नती औरत की सिफ़ात बयान की गई हैं कि जन्नत में जाने वाली वह औरत है जिसमें ये सिफ़ात

पाई जाएं।

1. वदूदः– बहुत ज़्यादा शौहर से मुहब्बत करने वाली, शौहर पर फ़रेफ़ता, कि ज़रा सी नाराज़गी से उसका चैन व सुकून ख़त्म हो जाए, मुहब्बत व चैन का ताल्लुक़ उसका शौहर से जुड़ा हो, उसे नाराज़ छोड़कर अलग बैठने वाली न हो। फ़रेफ़ता और मुहब्बत का यह फ़ायदा होगा कि दूसरे की जानिब उसका ख़्याल और ध्यान न जाएगा और ज़्यादा मुहब्बत की वजह से शौहर की जानिब से कोई तक्लीफ़ वाली बात हो तो उसे बर्दाश्त कर लेगी, मुहब्बत की वजह से कड़वी बात भी मीठी हो जाती है। महबूब की तक्लीफ़ मुहब्बत की वजह से महसूस नहीं होती। जिससे घर का निज़ाम अच्छी तरह चलता है और हर एक को घरेलू सुकून हासिल होगा जिसकी आज कमी है कि मामूली बात भी आपसी मुहब्बत न होने की वजह से दिल में चुभ जाती है। औ़रत जब इश्क़े फ़रेफ़्तगी का बर्ताव करेगी तो सख़्त मिज़ाज मर्द भी मुतास्सिर होकर दिल में उसे जगह देगा और वह भी मुहब्बत की बुनियाद पर ना-मुनासिब कामों को बर्दाशत करता रहेगा और डांट डपट के बजाए मुहब्बत की बुनियाद पर दरगुज़र करता रहेगा और घरेलू निज़ाम अच्छी तरह चलता रहेगा।

2. वलूदः– ज़्यादा बच्चे जनने वाली औ़रत क़ाबिले तारीफ़ और अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नज़दीक बहुत पसन्दीदा है। इसीलिए सरकारे दो-आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ताकीद फ़रमाई है कि ज़्यादा बच्चे जनने वाली औ़रत से शादी करो। शादी का अहम तरीन मक़सद सिलसिला-ए-नस्ल को बाक़ी रखना है और उम्मत के लोगों का ज़्यादा से ज़्यादा होना है। इससे मालूम हुआ कि जो औ़रतें बच्चे नहीं चाहतीं या कम से कम चाहती हैं ताकि ऐश व आराम मिले और परवरिश की मशक़्क़त से बची रहें,

यह ख़ुदा व रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नज़दीक नापसन्दीदा है। हाँ मरज़ और बीमारी की वजह हो तो अलग बात है। आ़म तौर पर यूरोप वालों का मिज़ाज है कि वे बच्चे बिल्कुल नहीं चाहते या एक दो से ज़्यादा नहीं ताकि उनके ऐश व आराम में ख़लल न हो। घूमने-फिरने में आज़ाद रहें। अल्लाह की पनाह! औलाद और उसकी कस्रत (ज़्यादा होना) बड़ी नेमत और सवाब की बात है, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ज़्यादा बच्चे जनने वाली औ़रतों से शादी करो, मैं तुम्हारी कस्रत (ज़्यादा होना) पर क़्यामत के दिन फ़ख्र करूंगा। उम्मत की कस्रत (ज़्यादा होना) आप सल्ल० के लिए क़्यामत के दिन फ़ख्र की बात है। रही बात बच्चों की कस्रत (ज़्यादा होना) ग़रीबी की वजह, तो यह ग़लत है। बच्चे अच्छे होंगे, उनकी तालीम व तर्बियत अच्छी होगी, लायक़ और संजीदा होंगे तो ये ख़ुशहाली और मालदारी की वजह हैं। परेशानी और मुसीबत तो ग़लत तालीम व तर्बियत के न होने की वजह से होती है। ख़्याल रहे कि ये बच्चे और औलाद माँ-बाप के हक़ में दीन व दुनिया की भलाई की वजह और सद्क़ा-ए-जारिया होते हैं और हर एतिबार से ख़ैर की वजह हैं कि हमल और दूध पिलाने का बड़ा सवाब है। हदीसे पाक में है, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि जब तुम में से कोई अपने शौहर से हामिला हो जाती है और शौहर उस से राज़ी हो तो उसको ऐसा सवाब मिलता है जैसा कि अल्लाह के रास्ते में रोज़ा रखने वाले और रात को जागने वाले को सवाब मिलता है। और जब उसको दर्दे-ज़ेह (बच्चा जनने की तकलीफ़) होती है तो उसके (जन्नत में) जो आँखों की ठंडक का सामान होता है उसे आसमान व ज़मीन के फ़रिशते भी नहीं जानते। और पैदाइश के बाद जो बच्चा एक घूंट भी दूध पीता है या चूसता है उस पर एक नेकी मिलती

है। अगर बच्चे की वजह से रात में जागना पड़ जाए तो खुदा के रास्ते में सत्तर ग़ुलामों के आज़ाद करने का सवाब मिलता है।

(कन्ज़ुल उम्माल, हिस्सा 16, पेज 405)

एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औरत हमल से लेकर बच्चा जनने और दूध छुड़ाने तक ऐसी है जैसे इस्लाम की राह में सरहद की हिफ़ाज़त करने वाली। अगर इसी दर्मियान इन्तिक़ाल हो जाए तो शहीद के बराबर सवाब मिलता है। (कन्ज़ुल उम्माल, हिस्सा 16, पेज 411)

इस हदीसे पाक में जन्नती औरत की एक बहुत अहम सिफ़त व निशानी बयान की गई है कि वह शौहर की मुहब्बत बल्कि इश्क़ में सरशार होकर शौहर की ज़रा सी भी नाराज़गी को वह बर्दाशत न कर सके। अगर किसी बुनियाद पर शौहर नाराज़ या ग़ुस्सा हो जाए तो वह अपना हाथ उसके हाथ में देकर बहुत ज़्यादा मुहब्बत और ताल्लुक़ का इज़्हार करे कि जब तक आप राज़ी न होंगे, खुश न होंगे, मैं एक पलक भर भी न सोऊंगी। अल्लाहु अकबर! क्या शाने इक्राम व मुहब्बत व इश्क़ की।

क्या आजकल की मॉडरन औरतें ऐसा कर सकती हैं? अगर शौहर नाराज़ हो और उसका नाराज़ होना सही हो तो बेगम साहिबा पूछेंगी भी नहीं। मज़े से बेख़बर सो जाएंगी। अगर आज यह सिफ़त औरत में पैदा हो जाए तो घर जन्नत निशाँ बन जाए। शौहर कैसा ही बद-मिज़ाज, सख़्त मिज़ाज क्यों न हो। बीवी की ज़्यादा मुहब्बत से उसकी मुहब्बत व क़द्र ज़हन में बैठ जाए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी इसी क़िस्म की एक हदीस मरवी है जिसे इमाम निसाई रह० ने बयान किया है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया, मैं तुमको जन्नती औरत न बता दूँ, जो ख़ूब मुहब्बत करने वाली, ज़्यादा बच्चे जनने वाली, शौहर के पास ज़्यादा आने वाली, कि अगर उसे तक्लीफ़ दे दी जाए या हो जाए तो शौहर का हाथ पकड़कर कहे मैं पलक भर न सोऊंगी जब तक कि तुम ख़ुश न हो जाओगे। (किताब इशरतुन्निसा, पेज 219)

यह इस बात की तालीम है कि शौहर नाराज़ न रहे। अपनीं तरफ़ से उसे नाराज़ रहने या रखने की सूरत न पैदा की जाए कि उसकी रज़ा जन्नत है।

नेकी में शौहर की मदद करने वाली

٢- عَنْ ثَوبَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْضَلُهٗ لِسَانٌ ذَاكِرٌ وَّقَلْبٌ شَاكِرٌ وَّزَوْجَتُهٗ مُؤْمِنَةٌ تُعِيْنُهٗ عَلٰى اِيْمَانِهٖ ط

(ترمذی، ابن ماجہ، مشکوٰۃ، صفحہ ۱۹۸)

तर्जुमाः— हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम लोगों ने यह मालूम करना चाहा कि कौन माल नफ़ा बख़्श है ताकि उसे इख़्तियार करें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, सबसे नफ़ा बख़्श चीज़ यह है कि उसे ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल नसीब हो और ऐसी ईमानदार बीवी हो जो उसके दीन पर मदद करने वाली हो।

फ़ायदाः— आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीन नफ़ा बख़्श चीज़ों को बयान किया है।

1. वह ज़बान जो ख़ूब ख़ुदा को याद करने वाली हो, यानी हर वक़्त ख़ुदा की याद में लगी हो और उससे रत्बुल-लिसान हो मतलब यह है कि हर वक़्त ख़ुदा की याद में कभी नमाज़ में, कभी

तिलावत में; कभी दरूद में, कभी इस्तिग़फ़ार में, कभी सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह में, जागे हों तो ख़ुदा का ज़िक्र हो, सो रहे हों तो यादे ख़ुदा में, बाज़ार में हों तो ख़ुदा का ज़िक्र, जब देखो ज़बान यादे ख़ुदा में लगी रहती है। उसकी बड़ी फ़ज़ीलत है। यह अल्लाह के औलिया और मुक़र्रब बन्दे और अहले जन्नत की पहचान है। जब इसकी आदत हो जाती है तो जिस्मानी काम इसकी रोक नहीं बनता कि वे उधर काम भी करते रहते हैं, इधर ज़बान ख़ुदा के ज़िक्र में मशग़ूल। तुम से भी ऐ माओ और बहनो! हो सकता है कि पकाती और घर का काम करती रहो और ज़बान ख़ुदा के ज़िक्र में मशग़ूल रखो।

2. शुक्र अदा करने वाला दिलः शुक्र अदा करने वाले दिल की बड़ी अहमियत है, शुक्र से नेमत में इज़ाफ़ा होता है, शुक्र का मतलब यह है कि ख़ुदा की दी हुई नेमत, सेहत और माल को ख़ुदा की नाफ़रमानी में न ख़र्च करे। गुनाह के अस्बाब न इख़्तियार करे। यह भी नाशुक्री में दाख़िल है।

3. तीसरी जो अहम चीज़ इस जगह के एतिबार से है वह यह है कि किसी की ऐसी बीवी हो जो शौहर की उसकी आख़िरत और दीन के कामों में मदद करने वाली हो। जैसे शौहर जमाअत में जाए, दीन का काम करे, मद्रसे में पढ़ाए तो वह उसके मुक़ाबले में दुनिया की तरफ़ माली फ़ायदा देखकर न उकसाए। और उससे न कहे कि इसमें माली परेशानी होती है। इसे छोड़कर दुनिया का कोई काम करो। बहुत-सी औरतों को देखा गया है कि शौहर मद्रसे में उस्ताद था, कम पैसे मिलते थे तो उसे छुड़वाकर दूसरे दुनियावी काम में लगवा दिया ताकि ज़्यादा माल मिले। जैसे दुकानदारी में या बाहर मुल्क सऊदिया भिजवा दिया। यह उसके दीन के ख़िलाफ़ मदद है।

मतलब यह है कि शौहर अगर दीन व आख़िरत के कामों को इख़्तियार करता हो और उससे कुछ दुनिया का नुक़सान मालूम होता हो तब भी औरत उसी दीन में रहने को कहती हो, हिम्मत बढ़ाती हो, दुनिया की तंगी और कमी की वजह से उसे परेशान न करती हो, ऐसी औरत मर्द के हक़ में बहुत बेहतर है और उसी की फ़ज़ीलत है।

वाक़िआ है कि एक साहब आलिम, हाफ़िज़, दीनदार थे, मद्रसे में दीनी ख़िदमत करते थे, शादी के बाद औरत ने कहा इतनी कम तन्ख़्वाह में क्या होगा? फ़लानी औरत को देखो किस तरह ऐश व इशरत के साथ रहती है, फलाँ घर को देखो किस क़द्र फ़रावानी है, फ़लाँ को देखो तिजारत या दुकानदारी या बाहर मुल्क में काम करने की वजह से किस क़द्र ख़ुशहाल है। किस क़द्र खाने पीने और अस्बाब की राहत है। उसने अपने शौहर को दीन की ख़िद्मत से हटाकर दुनियावी काम में लगवा दिया ताकि दुनिया की राहत हासिल हो। ऐसी औरत बेहतर नहीं कि उसने आख़िरत की हमेशा की राहत के मुक़ाबले में दुनिया की कुछ दिन की ज़िन्दगी की राहत को अच्छा जाना। इसी तरह इसका यह भी मतलब है कि नमाज़, रोज़ा, सद्क़ा, ख़ैरात में उसकी मदद करती हो। शौहर ज़रा ढीला हो, सुस्त हो तो उसे ताकीद करती हो, नमाज़ के लिए उठा देती हो, तब्लीग़ी दीनी कामों का शौक़ दिलाती हो। मद्रसा, मस्जिद और ग़रीबों की मदद में उसे उकसाती और ताकीद करती रहती हो ऐसी औरत शौहर के हक़ में नफ़ा बख़्श है कि उस औरत की वजह से उसकी आख़िरत बन रही है जिसकी वजह से उसका सवाब उस औरत को भी मिलता है, नेकी पर उभारने वाले को भी नेकी करने वाले की तरह सवाब मिलता है। बड़ी ख़ुशनसीब है वह औरत जो अपने शौहर को दीन पर, इबादत पर मदद करे। नमाज़ों को [illegible]

हो या सुस्त हो तो नमाज़ों की पाबन्दी की तर्ग़ीब देती हो, उसके कपड़े पाक साफ़ रखती हो। वुज़ू और ग़ुस्ल (नहाने) का इन्तिज़ाम कर देती हो ताकि वक़्त पर सुकून से नमाज़ पढ़ ले। ऐसी औरत खुद भी जन्नती है और अपने शौहर के लिए भी जन्नत का सबब, कि अगर शौहर दीनदार न हो तो ख़तरा है कि ऐसे शौहर का साथ जन्नत में न मिल सके। इसलिए उसे दीनदार बनाने की कोशिश करो ताकि दुनिया की तरह जन्नत में भी साथ रह सको।

नेक औरत कौन है?

٣— عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ كَانَ یَقُوْلُ مَا اسْتَفَادَ الْمُؤْمِنُ بَعْدَ تَقْوَی اللّٰهِ خَیْرٌ لَّهٗ مِنْ زَوْجَةٍ صَالِحَةٍ اِنْ اَمَرَهَآ اَطَاعَتْهُ وَاِنْ نَّظَرَ اِلَیْهَا سَرَّتْهُ وَاِنْ اَقْسَمَ عَلَیْهَآ اَبَرَّتْهُ وَاِنْ غَابَ عَنْهَا نَصَحَتْهُ فِیْ نَفْسِهَا وَمَالِهٖ ط (ابن ماجہ، صفحہ ۱۳۳، مشکوٰۃ، صفحہ ۲۶۸)

तर्जुमाः— हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया, मोमिन बन्दे ने तक़्वे की नेमत के बाद कोई ऐसी भलाई हासिल नहीं की जो नेक व सालेह बीवी से बढ़कर हो। (वह यह है) अगर शौहर कोई बात कहे तो उसे पूरा करे, अगर शौहर उसकी तरफ़ देखे तो उसे खुश कर दे। अगर शौहर किसी काम के बारे में क़सम दे दे तो उसे पूरी करे। अगर वह कहीं बाहर जाए तो अपनी जान और माल के बारे में ख़ैर का मामला करे।

फ़ायदाः— इस हदीसे पाक में तक़्वे की नेमत के बाद मर्द के

लिए नेक व सालेह बीवी को बयान किया है। मुत्तक़ी व परहेज़गार को नेक बीवी मिल जाए तो **नूरुन अ़ला नूरिन** (नूर पर नूर) दोनों जन्नती। ज़िन्दगी जन्नत नज़ीर हो जाएगी। नेक बीवी की कुछ अ़लामतें बयान की गई हैं।

1. शौहर देखे तो खुश कर दे। नेक बीवी की बहुत ही अहम अ़लामत है। मतलब उसका यह है कि अपना रंग ढंग, सफ़ाई सुथराई, शौहर की मर्ज़ी के मुताबिक़ रखे कि देखे तो उसका दिल खुश हो जाए। चेहरे की मुस्कुराहट से उसके साथ पेश आए। ऐसा नहीं कि घर में मर्द आया कि बस मुँह फुलाना शुरू कर दिया या तक्लीफ़ का इज़्हार करके उसको परेशान कर दिया। न ऐसा कि मेली कुचैली गन्दी फिर रही है। शौहर ने देखा तो उसका दिल कुढ़ गया। अच्छे उ़म्दा कपड़े नज़ाफ़त और सफ़ाई के सामान रखे हैं। मगर फिर भी गन्दी कि शौहर देखे तो मुँह फेर ले कि कैसी लग रही है। बाहर दूसरी औ़रतों पर जब उसकी नज़र पड़ती है तो यह भी सोचता है कि हमारे घर में भी सफ़ाई और ज़ीनत का ख़्याल रहे। हाँ जब बाहर जाएंगी, शादी ब्याह में जाएंगी। रिश्तेदारी में जाएंगी तो ख़ूब बन संवर कर अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर, क्यों? दूसरों को दिखाने के लिए, सुन लीजिए।

शादी से पहले बनाव सिंगार ज़ेब व ज़ीनत दुरुस्त नहीं। हाँ शादी के बाद दुरुस्त है और यह बनाव सिंगार शौहर के लिए है। न कि ग़ैर मेहरम के लिए, यह गुनाह का काम है। ऐसी औ़रत को एक हदीस में ज़ानिया कहा गया है। यह लोगों को आँख और दिल के ज़िना की दावत देती है। लोगों को अपनी तरफ़ माइल करती है। कम से कम यह [illegible] सोचती ही हैं, औरतों को अगर कोई मर्द देखे तो हैरत और त[illegible]ज्जुब में पड़ जाए, और तारीफ़ करे। कैसी बुरी

बात है, इफ़्फ़त, हया, शराफ़त के ख़िलाफ़ है। सजने संवरने से शौहर को खुश करो। क़सम पूरी करने का मतलब यह है कि शौहर बीवी पर एतिबार करते हुए क़सम खाए जैसे यह कहे, क़सम से तुम ऐसा ज़रूर करो तो शौहर की ख़ुशी की वजह से ज़रूर पूरा कर देती है चाहे परेशानी हो और मिज़ाज के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो।

शौहर के ग़ायबाना में जान व माल की भलाई का मतलब यह है कि आज़ाद न फिरे। अजनबी मर्दों से ताल्लुक़ पैदा न करे। कुछ औरतों को देखा गया है कि शौहर की गै़र हाज़िरी में बे-पर्दा या पर्दे ही से आज़ादाना फिरती रहती हैं। अजनबी मर्दों से बातचीत में झिझक महसूस नहीं करतीं, माल की भलाई का मतलब यह है कि बग़ैर ज़रूरत के माल न लुटाती हो। सामान हिफ़ाज़त से ख़र्च करती हो। इसी तरह जिन लोगों को मौजूदगी में माल और कोई सामान नहीं देती थी उनको शौहर की ग़ैर हाज़िरी में भी न देती हो, न अपने रिश्तेदारों को और न दूसरों के।

जन्नत में जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए

٤– عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِذَا صَلَّتِ الْمَرْاَةُ خَمْسَهَا وَحَصَنَتْ فَرْجَهَا وَاَطَاعَتْ بَعْلَهَا دَخَلَتْ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَآءَتْ ؕ (ابن حبان، ترغیب، صفحہ ۵۲)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औरत जब पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ती हो, अपनी इज़्ज़त की

हिफ़ाज़त करती हो और शौहर की इताअ़त करती हो तो वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।

फ़ायदाः— औ़रतों के लिए कितनी बड़ी फ़ज़ीलत और इज़्ज़त की बात है। जन्नत में दाख़िल होने का किस क़द्र आसान नुस्ख़ा है। आ़म तौर पर औ़रतें नमाज़ में कोताह होती हैं, पढ़ती नहीं या छोड़कर पढ़ती हैं या सुस्ती से वक़्त गुज़रने के बाद पढ़ती हैं। नमाज़ की पाबन्दी कर लो, शौहर की ख़िदमत कर लो, मज़े से जन्नत में चली जाओ, शरीअ़त ने औ़रतों से बहुत कम और आसान अ़मल पर जन्नत का वादा किया है। मर्दों के मुक़ाबले में उनसे कम अ़मल का मुतालबा है। औ़रतों का जन्नत में जाना आसान है। गुनाहों से बची रहें, नमाज़ को न छोड़ें, शौहरों को ख़िद्मत व इताअ़त से ख़ुश रखें बस! जन्नत का टिकट पा लें, जिस दरवाज़े से चाहें चली जाएं।

कौन औरत ख़ुश नसीब?

٥— عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَیُّ النِّسَآءِ خَیْرٌ ط قَالَ الَّتِیْ تَسُرُّهٗ اِذَا نَظَرَ وَتُطِیْعُهٗ اِذَآ اَمَرَ وَلَا تُخَالِفُهٗ فِیْ نَفْسِهَا وَلَا مَالِهَا بِمَا یَکْرَهُ ط (مشکوٰۃ، صفحہ ۲۸۳، بیہقی، جلد ۲، صفحہ ۳۱۶)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह पूछा गया कि कौन औ़रत बेहतर है? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, वह औ़रत कि शौहर उसे देखे तो उसे ख़ुश कर दे, जब किसी काम का हुक्म दे तो उसकी बात माने और अपनी

इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे और उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ माल ख़र्च न करे।

फ़ायदा:— मतलब यह है कि ऐसी ख़ुश मिज़ाज और ख़ुश अख़्लाक़ हो कि शौहर जब घर आए बीवी से मुलाक़ात व बातें करे तो उस से नर्मी से प्यार मुहब्बत, मुस्कुराते हुए बात करे, अगर परेशान, रंजीदा भी आए तो उसे हुस्ने बर्ताव व हुस्ने अख़्लाक़ से ख़ुश कर दे। ऐसा न हो कि मुँह बनाकर बैठी रहे, पूछे तो शिकायतों का अंबार (ढेर) शुरू कर दे, आते ही चिंगारी को आग बनाकर पेश कर दे। राई के दाने को पहाड़ बनाकर दिखलाए। मुबालग़ा आराई, झूठ और बदगुमानी की बुनियाद पर इधर उधर की लगाकर उसके दिमाग़ को परेशान कर दे। कुछ औरतें ऐसी होती हैं कि जहाँ शौहर घर में दाख़िल हुआ शिकायतों का अंबार (ढेर) उसके सामने ला खड़ा कर दिया। तुम्हारी माँ ने ऐसा कहा, बहन ने ऐसा किया। भाई ने यह मामला किया। भावज ने इस तरह ज़ुल्म किया। औरत की मीठी चाल से शौहर मुतास्सिर हो जाता है और माँ बहन का मुख़ालिफ़ होकर लड़ाई और झगड़े का एक लम्बा सिलसिला क़ायम कर देता है। यह औरत शौहर को ख़ुश करने वाली नहीं, उसे जहन्नम में डालने वाली है कि उसने उसे ख़ुश करने के बजाए रंजीदा कर दिया। इसलिए सुनो! शौहर को ख़ुश अख़्लाक़ी और अपनी प्यारी बातों से ख़ुश करो। शिकायत सुनाकर रंजीदा और झगड़ा मत कराओ। ख़ुदा के नज़दीक अच्छी और भली कहलाओगी और जन्नत पाओगी।

नेक औरतें जन्नत में पहले जाएंगी

٦— عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ مَرْفُوْعًا یَا مَعَاشِرَ النِّسْوَانِ اَمَا اِنَّ خِیَارَکُنَّ یَدْخُلْنَ

الْجَنَّةَ قَبْلَ خِيَارِ الرِّجَالِ فَلْيُغْسَلْنَ وَيُطَيَّبْنَ فَيُدْفَعْنَ اِلٰى اَزْوَاجِهِنَّ عَلٰى بَرَاذِيْنِ الْحُمْرِ وَالصُّفْرِ مَعَهُنَّ الْوِلْدَانُ كَاَنَّهُنَّ اللُّؤْلُؤُ الْمَنْثُوْرُ ط

(ابوالشیخ، کنز، صفحہ ۲۱-۲۲)

तर्जुमाः– हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फरमाते हैं कि नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ औ़रतों की जमाअ़तो! याद रखो जो तुममें से नेक हैं वे नेक लोगों से पहले जन्नत में दाख़िल होंगी फिर (जब उनके शौहर आएंगे तो) उनको ग़ुस्ल देकर और ख़ुश्बू लगाकर शौहरों के हवाले कर दी जाएंगी, सुर्ख़ और ज़र्द रंग की ख़ूबसूरत सवारियों पर, और उनके साथ, बच्चे होंगे जैसे बिखरे हुए मोती।

फायदाः– औ़रतों के लिए कितनी बड़ी फ़ज़ीलत की बात है कि जो उनमें नेक होंगी, नमाज़, रोज़ा, तिलावत की पाबन्द होंगी, गुनाहों से बचने वाली होंगी, शौहर की ख़िदमत व इताअ़त करने वाली होंगी, वे मर्दों से पहले जन्नत में जाएंगी। यह तो वाक़ई रश्क करने की बात है और किस तरह शान से अपने बच्चों को साथ लेकर जन्नत में जाएंगी।

आज नेकी वाली ज़िन्दगी इख़्तियार कर लो, कल शान के साथ मर्दों से पहले जन्नत में चली जाओ।

नेक औ़रत आधा दीन है

۷– عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ رَّزَقَهُ اللّٰهُ امْرَأَةً صَالِحَةً فَقَدْ اَعَانَهُ عَلٰى شَطْرِ دِيْنِهٖ فَلْيَتَّقِ اللّٰهَ فِى الشَّطْرِ الثَّانِىْ ط

(مجمع، جلد۴، صفحہ ۲۷۵)

तर्जुमाः– हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिसे अल्लाह पाक ने नेक औरत से नवाज़ दिया गोया कि अल्लाह ने आधे दीन से मदद कर दी और उसे चाहिए बाक़ी आधे दीन के बारे में अल्लाह का ख़ौफ़ इख़्तियार करता रहे। (यानी उसे भी हासिल करे)

फ़ायदाः– नेक औरत को आधा दीन कहा गया है। ज़ाहिर है कि ऐसी मुबारक औरत की वजह से दीन और दुनिया दोनों को फ़ायदा होता है। दुनिया का फ़ायदा तो यह है कि मुहब्बत सुकून से घरेलू ज़िन्दगी खुशगवार तरीक़े से गुज़रती है। ख़िद्मत व इताअत से शौहर को राहत मिलती है, सुकून मिलता है। बच्चों की तर्बियत बेहतर और दीनी होती है। और आख़िरत का फ़ायदा यह है कि दीन के मामले में शौहर की मदद करती है। नमाज़, रोज़ा, तिलावत दूसरे दीनी कामों में शौहर को आसानी होती है और इबादत का ज़्यादा मौक़ा मिलता है। बीवी की नेकी की वजह से गुनाह और बेजा ख़्वाहिश का घर में दख़ल नहीं होता। औलाद नेक होती है और नेक रहती है। जो माँ-बाप के हक़ में दुनियावी सुकून और आख़िरत के लिए सद्क़ा-ए-जारिया का सबब होते हैं। ख़ासकर इस ज़माने में नेक औरत बहुत बड़ी दौलत है जिसकी अहमियत आज के दौर में माल और ऐश की वजह से नहीं है।

नेक औरत बड़ी अहमतरीन दौलत

٨– عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لِمُعَاذِ
بْنِ جَبَلٍ یَا مُعَاذُ قَلْبًا شَاکِرًا وَّلِسَانًا ذَاکِرًا وَّزَوْجَةً صَالِحَةً تُعِیْنُكَ عَلٰی

اَمْرِ دُنْيَاكَ وَدِيْنِكَ خَيْرٌ مَا اكْتَسَبَهُ النَّاسُ ط (طبرانی، مجمع، جلد۴، صفحہ۲۷۶)

तर्जुमाः— हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुआज़ बिन जबल से फ़रमाया, ऐ मुआज़! शुक्र गुज़ार दिल, ज़िक्र से रतबुल लिसान ज़बान (हर वक़्त ज़िक्र में मशग़ूल), नेक बीवी जो तुम्हारे दीन और दुनिया के मामले में मददगार हो उन सबसे बेहतर है जिसे लोग हासिल करते हैं। (यानी माल वग़ैरह से)

फ़ायदाः— यानी नेक औरत जिस से दीन और दुनिया दोनों की मदद हो बहुत बड़ी दौलत है कि उससे दुनिया की ज़िन्दगी भी अच्छी खुशगवार राहत से गुज़रती है और दीन में मदद करेगी कि उसे गुनाह से बचाकर तक़्वे की ज़िन्दगी पर बाक़ी रखेगी। नेक और दीनदार होने की वजह से खुद भी गुनाह से बचेगी और शौहर को भी गुनाह से बचाएगी। नेकी की तरफ़ शौक़ दिलाएगी जिससे आख़िरत का फ़ायदा होगा और जिससे दीन व दुनिया का फ़ायदा होगा, इससे बड़ी क्या दौलत होगी। इसके बर्-ख़िलाफ़ औरत अगर बद-दीन है, खुदा, रसूल सल्ल० और आख़िरत की परवाह नहीं तो खुद भी गुनाह करेगी और शौहर को भी गुनाह की तरफ़ खींचेगी। जैसे बे-पर्दा शौहर को लेकर बन-संवर कर बाज़ार में घूमेगी, मेले और फ़िल्म में ले जाएगी। घर में टी०वी० न हो तो टी०वी० मंगवाएगी। औलाद को बद्-दीन बे-नमाज़ी बनाएगी, जहन्नम का माहौल घर में बनाएगी, खुद भी जहन्नम में जाएगी, शौहर को, औलाद को जहन्नम में जाने की वजह होगी। बहुत सों को जहन्नम लेकर जाएगी। ख़ाक हो ऐसी बद्-दीन बे-नमाज़ी औरत पर, चाहे ख़ूबसूरत और मालदार सही, आज बद्-दीन ख़ूबसूरत औरत के

आशिक़ हैं और जहन्नम के आमाल पर राज़ी हो रहे हैं, कल को जब आमाल की सज़ा का मुशाहदा होगा तब ख़ून के आँसू रोएंगे उस वक़्त रोना बेकार होगा।

बेहतरीन औरत

٩- عَنْ اَنَسٍ (مَرْفُوْعًا) خَيْرُ نِسَآئِكُمُ الْعَفِيْفَةُ الْغِيْمَةُ. عَفِيْفَةٌ فِىْ فَرْجِهَا غِيْمَةٌ عَلٰى زَوْجِهَا ط (كنز، جلد١٦، صفحه٣٠٩)

तर्जुमाः– हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औरतों में बेहतर वह है जो पाक दामन और मुहब्बत करने वाली हो, अपने नामूस इज़्ज़त की हिफाज़त करने वाली और शौहर से बहुत मुहब्बत यानी इश्क़ करने वाली हो।

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि औरत का शौहर से ज़्यादा ताल्लुक़ व मुहब्बत रखना अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के नज़दीक पसन्दीदा और क़ाबिले तारीफ़ चीज़ है। हदीसे पाक में ऐसी औरत की तारीफ़ की गई है जो शौहर से बहुत इश्क़ व मुहब्बत रखने वाली हो। जन्नत की औरतों की भी यह सिफ़त होगी कि वे शौहर से बहुत ज़्यादा मुहब्बत और इश्क़ का बर्ताव करेंगी जब कि वहाँ दुनिया की तरह मोहताजे मईशत (रोज़ी की तंगी) न होगी। आज के इस फ़ित्ने वाले दौर में बहुत कम ऐसी औरतें होंगी जो शौहरों से शौहर होने की हैसियत से मुहब्बताना बर्ताव करती होंगी। अब तो दुनियावी चाहत की वजह से आपसी ताल्लुक़ात जुड़े रहते हैं। यही वजह है कि इस चाहत में जब कमी होती है तो इसका असर मुहब्बत व ताल्लुक़ पर भी पड़ता है। इसलिए यह ग़रज़ाना

मुहब्बत अच्छी नहीं, यह रिश्ता ज़िन्दगी में ही नहीं बल्कि जन्नत में भी होगा, इसलिए हक़ीक़ी मुहब्बत होनी चाहिए ताकि जन्नत में भी मियाँ-बीवी वाला रिश्ता और मुहब्बत बाक़ी रहे।

नेक औरतें बहुत कम हैं

١٠ – عَنْ عَآئِشَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ... قَالَ... اِنَّ مَثَلَ الْمَرْأَةِ الْمُؤْمِنَةِ فِى النِّسَآءِ كَمَثَلِ الْغُرَابِ الْاَعْصَمِ فِى الْغِرْبَانِ ط

(مختصر امطالب عالیہ جلد ۲، صفحہ ۲۱)

اَبُوْ اُمَامَةَ رَفَعَهٗ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الْمَرْأَةِ الصَّالِحَةِ فِى النِّسَآءِ كَمَثَلِ الْغُرَابِ الْاَعْصَمِ قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا الْغُرَابُ الْاَعْصَمُ قَالَ الَّذِىْ اِحْدٰى يَدَيْهِ بَيْضَآءُ ط (مطالب عالیہ، جلد ۲، صفحہ ۵۷)

तर्जुमा:— हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया है कि औरतों में नेक औरतें इस तरह कम पाई जाती हैं जिस तरह कव्वों में वह कव्वा जिसके एक पर में सफ़ेदी हो।

फ़ायदा:— इस हदीसे पाक में यह बयान किया गया है कि नेक औरतें कम होंगी, यानी जन्नती आमाल वाली औरतें कम होंगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाने मुबारक ख़ासकर इस दौर में पूरा हो रहा है जिस तरह काले सफ़ेद पर वाला कव्वा नायाब है इसी तरह ऐसी औरतें भी कम पाई जाती हैं। अकसर औरतें दिल व नज़र की हिफ़ाज़त नहीं करतीं, बेपर्दगी और दूसरे गुनाह करती रहती हैं। अगर शौहर की फ़रमाँबरदार है तो बे-नमाज़ी

है, अगर नमाज़ी है तो ज़कात का एहतिमाम नहीं करती, अगर नमाज़, ज़कात का ख़्याल रखती है, कोसना, चुग़ली करना, दुश्मनी रखना यह बुराई है। शौहर की फ़रमाँबरदार और नमाज़ की पाबन्द है तो सास नन्द से दुश्मनी, बुग़ज़, लड़ाई है। अगर अख़्लाक़ अच्छे हैं तो टी०वी० और बेपर्दगी में मुब्तला है। अगर नमाज़, रोज़ा और पर्दे का एहतिमाम करती है तो शौहर की क़द्र नहीं करती, उससे बद-ज़बानी करती है। मतलब यह कि एक नेकी है तो दूसरे गुनाह में मुब्तला हो जाती है। ख़ासकर ज़बान और दिल के गुनाह में गिरफ़्तार रहती है।

ख़ुशनसीब है ऐसी औरत जो अपना दामन गुनाह से बचाए। ऐसी औरत दुनिया और दीन दोनों में कामियाब है।

नेक औरत का अमल, सत्तर (70) सिद्दीक़ीन के बराबर

١١ – عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ.... وَاِنَّ مَثَلَ عَمَلِ الْمَرْأَةِ الْمُؤْمِنَةِ كَمَثَلِ عَمَلِ سَبْعِيْنَ صِدِّيْقًا وَّاِنَّ عَمَلَ الْمَرْأَةِ الْفَاجِرَةِ كَفُجُوْرِ اَلْفِ فَاجِرَةٍ ط

(بزار کشف الاستار، جلد۲، صفحہ ۱۵۷)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मोमिन (नेक) औरत का अमल सत्तर (70) सिद्दीक़ीन के अमल के बराबर है। और फ़ाजिरा औरत (बदकार) की बद्-अमली हज़ारों फ़ाजिर (बदकार) की बद्-अमली की तरह है।

फ़ायदाः– देखो इस हदीसे पाक में नेक औरतों का कितना बड़ा

दर्जा और मर्तबा बयान किया गया है और ऐसी औरतों के अमल का कितना सवाब है।

जानती हो नेक औरत कौन है? वह औरत है जो मुत्तक़ी, परहेज़गार हो। गुनाह से और खुदा व रसूल सल्ल० ने जिस काम से रोका है, बग़ैर किसी बहाने उससे बचती हो और फ़राइज़ व वाजिबात पर अमल करती हो।

याद रखो! गुनाहों से बचना यही नेकी और तक़वे में अहम है। तमाम गुनाहों से एहतियात हो, चाहे नेकियाँ कम हों यह इससे बेहतर है कि नेकियाँ तो हों मगर गुनाहों से बचने का एहतिमाम न हो। जैसे नमाज़, रोज़ा तिलावत तो हो मगर इसके साथ बेपर्दगी भी हो। ग़ैर मेहरम से एहतियात न हो या नमाज़, रोज़ा, ज़िक्र तिलावत के साथ बद-ज़बानी, कोसना, लड़ना झगड़ना भी हो या यह कि नमाज़, रोज़ा, तिलावत भी हो और टी०वी० भी देखती हो तो ऐसी औरत नेक नहीं। और ऐसी नेकियाँ रंग नहीं लातीं। यह ऐसे ही है जैसे दूध, मक्खन, फल, मेवा भी खाया और साथ ही मिट्टी का तेल या पेट्रोल भी पी लिया तो ऐसी सूरत में खाने से क्या फ़ायदा होगा। इसी तरह नेकियों के साथ गुनाह भी करती रहे तो नेकियों का फल ज़ाहिर न होगा।

प्यारी बहनो! आज गुनाह से तौबा कर लो। घर में टी०वी० हो तो अज़्दहा समझकर उसे घर से बाहर करो, जन्नत के मज़े लूटोगी।

दुनिया की औरतें जन्नात की हूरे ईन से अफ़ज़ल हैं

١٢- عَنْ اُمِّ سَلْمَةَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَنِسَآءُ الدُّنْيَآ اَفْضَلُ اَمِ الْحُوْرُ الْعِيْنُ قَالَ لِنِسَآءُ الدُّنْيَآ اَفْضَلُ مِنَ الْحُوْرِ الْعِيْنِ كَفَضْلِ الظِّهَارَةِ عَلَى الْبِطَانَةِ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَبِمَ ذَا قَالَ لِصَلَاتِهِنَّ وَصِيَامِهِنَّ وَعِبَادَتِهِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ ط (طبرانی مختصر اعشرۃ النساء، صفحہ ۵۱)

तर्जुमाः— हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! दुनिया की औरतें अफ़ज़ल हैं या हूरे ईन? आप सल्ल० ने फ़रमाया, दुनिया की औरतें हूरे ईन से अफ़ज़ल हैं। ऐसे जैसे अबरा अच्छा व उम्दा होता है, अस्तर (अन्दरूनी कपड़े) से। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ऐसा क्यों? फ़रमाया, अपनी नमाज़, अपने रोज़े और खुदा-ए-पाक की इबादत की वजह से।

फ़ायदाः— मतलब यह है कि दुनिया की नेक ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाली) शागिल (अल्लाह की याद में लगी रहने वाली) औरतें जन्नत की हूरों से अफ़ज़ल हैं। इस वजह से कि वे जन्नत में पैदा हुईं। वहां नेक अमल और नमाज़, रोज़ा कहाँ। ये नेक आमाल तो दुनिया में हैं। इसलिए वे हूरें नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, ख़ैरात, हज, ज़िक्र, तिलावत के सवाब और उससे जो खुदा से नज़दीकी हासिल होती है से महरूम हैं। देखो तुम्हारी कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है। इससे तुम यह न सोचना कि वे तो बड़े मज़े में रहीं कि जन्नत में पैदा हुईं और जन्नत में

रहने लगीं और हम तो दुनिया से मशक़्क़त वाले अ़मल के बाद जन्नत पहुंचे। प्यारी बहनो! जन्नत के मज़े और उसकी राहतों की लज़्ज़त तुम लूटोगी। उनको ये लज़्ज़तें और मज़े कहाँ नसीब। मशक़्क़त और परेशानियों के बाद राहत की लज़्ज़त का एहसास होता है। देखो लज़ीज़ खुशबूदार शरबत का मज़ा गर्मियों में प्यास के बाद मिलता है। शदीद जाड़े के मौसम में नहीं। इसी तरह दुनिया की परेशानियों के बाद तुमको जन्नत के मज़े का एहसास होगा उनको नहीं।

जन्नत के आठों दरवाज़े किसके लिए?

١٣ — عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَیُّمَا امْرَأَةٍ اِتَّقَتْ رَبَّهَا وَحَفِظَتْ فَرْجَهَا وَاَطَاعَتْ زَوْجَهَا فُتِحَ لَهَا ثَمَانِيَةُ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ قِیْلَ لَهَا ادْخُلِیْ مِنْ حَیْثُ شِئْتِ ط

(مجمع الزوائد، صفحہ ٣٠٩)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो औरत खुदा से (गुनाह के बारे में डरे और गुनाह न करे) और अपनी इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे, और शौहर की फ़रमाँबरदारी करे उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उस से कहा जाएगा जिस दरवाज़े से चाहो जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

फ़ायदाः– जन्नत के आठ दरवाज़े होंगे। अपने अपने ख़ास आमाल की वजह से जन्नत के दरवाज़े से लोग जाएंगे, अकसर लोग एक दरवाज़े से जाने के हक़दार होंगे, कुछ मर्द और कुछ औरतें ऐसी होंगी कि उनको जन्नत के आठों दरवाज़ों से जाने की इजाज़त होगी और उनकी इज़्ज़त व इक्राम की वजह से जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उनको इख़्तियार होगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहें जन्नत चली जाएं। यह कौन औरत होगी? जिसमें ये तीन सिफ़त होंगीः

1. तक़वे वली ज़िन्दगी होगी। यानी तमाम नाजायज़ और शरीअत की मना की हुई चीज़ों से बचती होगी। हर गुनाह की बात से बचती होगी। जैसे पाँचों नमाज़ की पाबन्द, ख़ासकर सुबह की नमाज़ की। अपने ज़ेवरों की हिसाब से अगर निसाब के बराबर हो ज़कात निकालती होगी। किसी से लड़ती झगड़ती न होगी, ताना न देती होगी, कोसती न होगी। एहसान न जतलाती होगी, इसी तरह बेपर्दा बिला बुर्क़ा के कहीं न जाती होगी। अजनबी मर्दों से सख़्त एहतियात करती होगी। बग़ैर सख़्त ज़रूरत के घर से बाहर न फिरती होगी, उर्स और मज़ारों पर न जाती होगी। रिश्तेदारों में से किसी से कीना, कपट, और बुग़ज़ न रखती होगी। चुग़ली करने से बचती होगी, देवर और रिश्तेदार ग़ैर-मेहरम से परदा करती होगी। न टी०वी० खुद देखती होगी और न घर में रखती होगी। सिनेमा, नाच और गीत गाने में न शरीक होती होगी, मुहर्रम और रबीउ़ल अव्वल के बिदआ़त न करती होगी, मतलब यह कि हर बड़े गुनाह से बचती होगी, अगर किसी वजह से हो जाए तो फ़ौरन तौबा कर लेती होगी।

2. शौहर के अ़लावा किसी पर नज़र और निगाह न रखती होगी, सिनेमा और टी०वी० के ज़रिए इ़ज़्ज़त को बर्बाद न करती होगी।

3 शौहर की हर उस काम में जिस से शरीअ़त ने रोका नहीं है, इताअ़त और फ़रमाँबरदारी करती होगी, उसमें कोताही, सुस्ती, बहाना न करती होगी।

जैसे आदत और ज़रूरत के मुताबिक़ वक़्त पर तमाम काम कर देती होगी। बीमारी और थकन की हालत में ख़िद्मत कर देती होगी। जैसे शौहर का मिज़ाज मालूम है कि गर्म खाना खाते हैं, गर्म पानी से वुज़ू करते हैं, तो उसके कहने से पहले उसका पहले से एहतिमाम रखती होगी। मतलब यह कि उसकी ख़ुशी और आराम का ख़्याल रखती होगी तो ऐसी औरत के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे। प्यारी माओ! बहनो! इन तीनों चीज़ों पर पाबन्दी से अ़मल कर लो जिस में अहम काम गुनाहों से बचना है। बाक़ी दो काम तो आसान हैं। जन्नत के आठों दरवाज़े खुलवा लो। आज थोड़ी नफ़्स और माहौल के ख़िलाफ़ मशक़्क़त बर्दाशत कर लो। कल जन्नत के मज़े लूट लो, जो हमेशा का मज़ा है।

मिज़ाज के मुताबिक़ बीवी मिलना इन्सान की सआ़दत (नेक नसीबी) है

١٤ – عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَرْبَعٌ مِّنْ سَعَادَةِ الْمَرْءِ اَنْ تَكُوْنَ زَوْجَتُهٗ مُوَافِقَةً وَّاَوْلَادُهٗ اَبْرَارًا وَّاِخْوَانُهٗ صَالِحِيْنَ وَاَنْ يَّكُوْنَ رِزْقُهٗ فِيْ بَلَدِهٖ ط

(اتحاف المہرہ، جلد۴، صفحہ ۴۵۷)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुसैन ने अपने वालिद और दादा के वास्ते से यह रिवायत की है कि नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, चार चीज़ें इनसान की सआ़दत में से हैं। बीवी उसके मुवाफ़िक़ मिज़ाज हो, उसकी औलाद नेक हो, उसके भाई नेक हों और उसका रिज़्क़ उसी के शहर में हो।

फ़ायदाः— इस हदीसे पाक में इनसान की सआ़दतमन्दी और ख़ुशनसीबी किन चीज़ों से जुड़ी है, बयान किया गया है कि अगर ये चीज़ें हासिल हों तो इंसान की ज़िन्दगी दीन व दुनिया के ऐतिबार से चैन व सुकून, आफ़ियत और सहूलत और अच्छे हालात से गुज़रती है। दुनिया की अच्छाई के साथ आख़िरत की भलाई भी हासिल होती है।

इनमें अहम तरीन चीज़ बीवी का मुवाफ़िक़ मिज़ाज होना है। वाक़ई आपसी मुवाफ़क़त बड़ी नेमत है। इससे दोनों के दर्मियान मुहब्बत व ताल्लुक़ रहता है। मुवाफ़क़त की वजह से एक को दूसरे से शिकायत का मौक़ा नहीं मिलता। कुल्फ़त (परेशानी) महसूस नहीं होती, अगर दोनों में मिज़ाज की मुवाफ़क़त न हो, एक का मिज़ाज दीनी हो, दूसरे का दुनियावी हो तो बड़ी परेशानी होगी। एक बेपर्दगी चाहेगा, दूसरा बेपर्दगी की मुख़ालफ़त, एक टी०वी० का आ़शिक़ दूसरा टी०वी० से नफ़रत करने वाला, एक औलाद को दीनी तालीम की तरफ़ लाएगा दूसरा उसके ख़िलाफ़ स्कूल को पसन्द करेगा। इस तरह घर का माहौल तनाव में रहेगा। इसके ख़िलाफ़ अगर दोनों का मिज़ाज एक जैसा हो तो घर और आपस का निज़ाम अच्छे तरीक़े से चलेगा। ख़्याल रहे कि औरत क्योंकि मातहत और शौहर की निगरानी में है, इसलिए अगर शौहर मिजाज के ख़िलाफ़ हो तब भी

ख़ुदा की नाफ़रमानी के अ़लावा में शौहर की फ़रमाँबरदारी करे। उसके मिज़ाज की रिआयत करे, परेशानी हो तो भी शौहर की बात माने ताकि घर का निज़ाम और आपस का निज़ाम बेहतर चले। वर्ना तो घर जहन्नम बन जाएगा।

औलाद का नेक होना भी ख़ुश नसीबी की बात है कि माँ-बाप के लिए मददगार होते हैं। भाई चूंकि क़रीब और पड़ोसी होता है इसलिए उसके नेक होने से बड़ी सहूलत और वक़्त पर मदद मिलती है और उसी शहर में मआ़शी सिलसिला होने से घर का दूसरा निज़ाम भी ठीक चलता है। घरेलू फ़ायदा भी हासिल होता है इसलिए उसे भी ख़ुशनसीबी की बात फ़रमाई गई। इससे मालूम हुआ कि बाहर के मुक़ाबले में घर में मआ़शी काम और रोज़गार की सहूलत बहुत से फ़ायदों की वजह है, इसलिए जहाँ तक हो सके बाहर रोज़ी के सिलसिले में वाबस्ता न हों।

शादी न करने वाली औरतों और मर्दों पर लानत

१٥– عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ مَرْفُوْعًا لَّعَنَ اللّٰهُ الْمُبَتِّلِیْنَ الَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ لَا نَتَزَوَّجُ وَالْمُبَتَّلَاتِ الّٰتِیْ یَقُلْنَ ذٰلِكَ ط (کنز العمال، جلد ۱۶، صفحہ ۲۰۲)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह फ़रमाने मुबारक मन्क़ूल है कि उन मर्दों पर लानत फ़रमाई है जो कहते हैं हम शादी नहीं करेंगे, इसी तरह उन औरतों पर ख़ुदा की लानत जो कहती हैं हम शादी नहीं करेंगे।

عَنْ اَبِیْ نَجِیْحٍ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ كَانَ مُوْسِرًا لِاَنْ یَّنْكِحَ فَلَمْ یَنْكِحْ فَلَیْسَ مِنَّا ط

(اتحاف المہر صفحہ ۲۴۷)

तर्जुमाः— हज़रत अबू नजीह रज़ि० नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो निकाह कर सकता हो फिर न करे वह हममें से नहीं।

फ़ायदाः— मालूम होना चाहिए कि औ़रतों और मर्दों के लिए जो अल्लाह ने शादी ब्याह मशरुअ़ (शरीअ़त के मुताबिक़) किया है उसमें दीन और दुनिया की बहुत सी मस्लहतें और ज़रूरियात छुपी हैं। बहुत-सी बुराइयों और नुक़सानात और परेशानियों और तरह तरह की बीमारियों से उसमें निजात है। सबसे अहम फ़ायदा तो ज़ाहिर है कि दिल और आँख की बीमारयों से उसमें निजात है। मआशी सहूलतें पैदा होती हैं, एक दूसरे की मदद से ज़िन्दगी में राहत मिलती है। ख़ालिक़े हकीम ने हर एक की ज़रूरत को दूसरे से जोड़ा है। सिर्फ़ औ़रत ही नहीं शौहर भी बीवी का मोहताज है, ख़ासकर घरेलू निज़ाम मर्द नहीं चला सकता है, ऐसे आज़ाद मर्द की घरेलू ज़िन्दगी नाकारा हो जाती है तज्रिबा गवाह है। शुरु में तो ज़िन्दगी माँ-बहन वग़ैरह की मदद से गुज़रती है, मगर उनके गुज़रने के बाद या फिर आख़िर ज़िन्दगी में सख़्त परेशानी होती है। वक़्त पर खाना, बीमार पड़ने की सूरत में दवा और परहेज़ का निज़ाम, तेल वग़ैरह लगाने की ज़रूरत में मर्द को बहुत परेशानी होती है। फिर ज़िन्दगी पर मौत को बेहतर समझने लगता है। शादी का मक़सद सिर्फ़ ख़्वाहिशात को पूरा करना ही नहीं होता बल्कि ज़िन्दगी के निज़ाम और सेहत को बाक़ी रखने के लिए उसकी बहुत ज़रूरत

पड़ती है। बुढ़ापे में औलाद की मदद और उसके फ़ायदों से महरूम रहता है। इस वजह से शादी न करने वालियों और वालों पर खुदा की लानत। इसीलिए हमारी शरीअ़त में शादी सुन्नत और इ़बादत है। जो लोग इसे झमेला समझते हैं वे नादान और हिक्मते खुदावन्दी से अनजान हैं।

औरतों के लिए घरेलू काम का सवाब जिहाद के बराबर

١٦– عَنْ اَنَسٍ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قُلْنَ النِّسَآءُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِالْفَضْلِ فِی الْجِهَادِ فَهَلْ لَّنَا مِنْ اَعْمَالِنَا شَیْءٌ تَبْلُغُ بِهٖ فَضْلَ الْجِهَادِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَعَمْ مَهْنَةُ اِحْدَاکُنَّ فِیْ بَیْتِهَا تَبْلُغُ بِهٖ فَضْلَ الْجِهَادِ ط (مطالب عالیہ، جلد۲، صفحہ۳۹ ؛ بیہقی، جلد۶، صفحہ۴۲۰)

तर्जुमाः– हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि औ़रतों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जिहाद करने से मर्द तो फ़ज़ीलत लूट ले गये, हम औ़रतों के लिए भी कोई अ़मल है जिससे जिहाद की फ़ज़ीलत को हम पा सकें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ घरेलू काम में तुम्हारा लगना यह जिहाद की फ़ज़ीलत के बराबर है।

फ़ायदाः– घर के अन्दर के जितने भी काम हैं चाहे उनका ताल्लुक़ खाने पकाने से हो, चाहे सफ़ाई से हो, बच्चों की तर्बियत व परवरिश से हो, या सामान के नज़्म व ज़ब्त से मुताल्लिक़ हो, इन सबकी निगरानी और देखभाल अच्छी तरह करना औ़रत की

ज़िम्मेदारी है और खुदा, रसूल ने बड़ी फ़ज़ीलत बयान की है और इस पर बड़ा सवाब दिया है। मर्दों को जो जिहाद और क़िताल में सवाब है वही सवाब शरीअ़त ने इन औ़रतों को घरेलू काम में दिया है। अफ़सोस कि मालदार औ़रतें और नई तहज़ीब से मुतास्सिर औ़रतें उसे ऐब व शराफ़त के ख़िलाफ़ समझती हैं। वह बर्तन धोने को, झाड़ू देने को, घर साफ़ करने को, घर में नल, कुंवा हो तो पानी भरने को बुरा, इज़्ज़त व शान के ख़िलाफ़ समझती हैं इसलिए यह काम नौकरानी से लेती हैं। अगरचे नौकरानी रखना माली गुन्जाइश के ऐतिबार से जायज़ है मगर इन कामों के करने में कोई ऐब नहीं। यह तो सवाब का काम है।

प्यारी माओ और बहनो! आज सवाब लूट लो, जिहाद जैसा सवाब पा लो, कल आख़िरत में काम आएगा। नवाबों के तरीक़े और मग़रिबी तहज़ीब पर लानत भेजो।

औ़रत के ज़िम्मे घरेलू ख़िदमत है

١٧– ضَمْرَةَ بْنِ حَبِيْبٍ قَالَ قَضٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ابْنَتِهِ فَاطِمَةَ بِخِدْمَةِ الْبَيْتِ وَعَلِيِّ عَلٰى مَا كَانَ مِنْ خَارِجِ الْبَيْتِ ط

(مطالب عالیہ، جلد۲، صفحہ۳۹)

तर्जुमा:– ज़मूरह बिन हबीब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में फ़ैसला किया कि वह घरेलू काम करेंगी और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु घर से बाहर का काम करेंगे।

फ़ायदाः– इब्न क़य्यिम ने ज़ादुलमआ़द में इब्ने हबीब रज़ि० की 'अल्-वाज़िहा' से नक़ल करते हुए लिखा है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहू और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के दर्मियान फ़ैसला करते हुए जबकि उन्होंने ख़िद्मत और काम के बारे में शिकायत की, फ़रमाया कि फ़ातिमा तो घर के काम अंजाम देगी और हज़रत अ़ली घर के बाहर का काम किया करेंगे। इब्ने हबीब रज़ि० ने कहा कि घर की ख़िद्मत से मुराद आटा गूंधना, पकाना, बिस्तर बिछाना, झाड़ू देना और पानी निकालना और घरेलू सारे काम हैं। (ज़ादुलमआ़द, जिल्द 4, पेज 40)

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि औ़रत के ज़िम्मे घरेलू काम को अंजाम देना और घर के इन्तिज़ाम को सही और बेहतर ढंग से चलाना है। घरेलू काम में, खाना पकाना, कपड़े, बिस्तर की सफ़ाई का इन्तिज़ाम करना, घर की सफ़ाई झाड़ू वग़ैरह का लगाना, और घरेलू तमाम चीज़ों की हिफ़ाज़त और बच्चों की देखभाल, तर्बियत और निगरानी है। अनाज वग़ैरह का इन्तिज़ाम, उसकी सफ़ाई और तमाम खाने पीने और बरतने वाले सामान की निगरानी और देखभाल उसके ज़िम्मे है। बाहर से तमाम सामान यहां तक कि पानी तक लाकर देना मर्द के ज़िम्मे है। घर से बाहर का जो काम हो औ़रत उसके लिए बाहर न जाएगी।

औ़रत घर की निगहबान है

१८– عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَنَّهٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ كُلُّكُمْ رَاعٍ وَّكُلُّكُمْ مَّسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِيْٓ اَهْلِهٖ وَالْمَرْاَةُ رَاعِيَةٌ فِيْ بَيْتِ زَوْجِهَا وَالْخَادِمُ فِيْ

مَالِ سَیِّدِہٖ ط (ادب مفرد، صفحہ ۷۳، بخاری، صفحہ ۷۸۳)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि तुम में से हर एक निगहबान है, तुम में से हर एक से अपने मातहतों के बारे में पूछा जाएगा। आदमी अपने घर वालों का निगहबान है, औरत अपने शौहर के घर में निगहबान है और ख़ादिम व नौकर अपने आक़ा के माल में निगहबान है।

फ़ायदाः— खुदा-ए-पाक ने मर्द को बाहरी कामों जिनमें अहम तरीन काम रोज़ी कमाना है उसका हाकिम और निगहबान बनाया है और औरत को अल्लाह ने घर की हाकिमा और उसके तमाम कामों का निगहबान बनाया है। वह घर के तमाम कामों की ज़िम्मेदार है। खाना पकाने, घर की सफ़ाई सुथराई, घरेलू सामान का इन्तिज़ाम उसके ज़िम्मे है। क्या मंगाना है, सालन दाल वग़ैरह में क्या लगेगा, कितना पकेगा, घरेलू सामान कौन कहाँ पर रहेगा, किसमें क्या कमी व ज़्यादती है, बावर्ची ख़ाने का सारा निज़ाम उसी के ज़िम्मे रहेगा। बस मर्द बाहर से लाकर दे दे, हर जगह अपनी बात की ज़िद न करे। न इस मामले में औरतों को परेशान करें कि इतना क्यों ख़र्च हुआ, हाँ बर्बाद और फ़ुज़ूल ख़र्च होने के बारे में पूछ सकता है। इसी तरह औरत घर में बच्चे की तर्बियत में हाकिमा है, मुहब्बत, ज़रूरत और तज्रिबे के मुताबिक़ जो करेगी बेहतर करेगी। घरेलू मामले में औरत खुद हाकिम है, उसके काम में मर्द बिला ज़रूरत दख़ल न दे। वर्ना घर का निज़ाम बिगड़ जाएगा। खुदाए पाक ने उसकी फितरत में घर के निज़ाम के संवारने की सलाहियत दी है।

वह ख़ुद बेहतर से बेहतर इन्तिज़ाम करेगी। उस पर ऐतिबार करे, ख़ुदा ने उसके मिज़ाज में घर का काम रखा है, यह ख़ुदाई तक़सीम है, इसमें दख़ल अंदाज़ी घर के निज़ाम को ख़राब करना है।

औरत के लिए उसका शौहर जन्नत है या जहन्नम

١٩ - عَنْ حُصَيْنِ بْنِ مُحْصِنٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ عَمَّةً لَّهٗ اَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهَا اَذَاتُ زَوْجٍ اَنْتِ قَالَتْ نَعَمْ قَالَ فَاَيْنَ اَنْتِ مِنْهُ قَالَتْ مَا اٰلُوْهُ اِلَّا مَا عَجَزْتُ عَنْهُ قَالَ فَكَيْفَ اَنْتِ لَهٗ فَاِنَّهٗ جَنَّتُكِ وَنَارُكِ ط (ترغیب، جلد۳، صفحہ۵۲، عشرۃ النساء، صفحہ۱۷۱، حاکم)

तर्जुमाः– हुसैन बिन मुहसिन रज़ि० बयान करते हैं कि उनकी फूफी नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाईं तो आप सल्ल० ने उनसे पूछा क्या तुम शौहर वाली हो? कहा, हाँ! तो आप सल्ल० ने पूछा कि तुम उनके साथ किस तरह बर्ताव करती हो? उन्होंने कहा, हर मुमकिन तरीक़े से ख़िद्मत करती हूँ, कोई कोताही नहीं करती हूँ, हाँ मगर यह कि कोई मजबूरी हो। आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम उनकी रिआयत करो वह तुम्हारे लिए जन्नत हैं या जहन्नम।

फ़ायदाः– इस हदीस पाक में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, शौहर तुम्हारे लिए जन्नत है या जहन्नम। यानी उसकी ख़िद्मत उसकी रज़ा व ख़ुशनूदी से तुम जन्नत जा सकती हो, और अगर तुमने उससे अच्छा बर्ताव नहीं किया, उसको नाराज़ किया, उससे ज़बान दराज़ी की और मुक़ाबला किया, उसकी ख़िद्मत व

फ़रमाँबरदारी से तुमने अपने आपको बचाया, उसमें कोताही की तो तुम्हारे लिए जहन्नम है।

आम तौर पर आज कल के इस दौर में शुरू उम्र में नफ़्स की खुशी की वजह से तो कुछ ख़िद्मत व रिआयत करती है, जब जवानी ढल जाती है तो दोनों तरफ़ से ताल्लुक़ात ख़राब हो जाते हैं।

औरत शौहर की ख़िद्मत और रिआयत बराबर करती रहे तो जन्नत की दौलत हासिल कर सकती है। खुदा का हुक्म समझकर आज ख़िद्मत में कोताही न करो, कल जन्नत के मज़े लूट लो।

शौहर को खुश रखने वाली जन्नत में जाएगी

٢٠- عَنْ اُمِّ سَلْمَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَآ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَیُّمَا امْرَأَةٍ مَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ دَخَلَتِ الْجَنَّةَ ط

(بیہقی فی الشعب، جلد٦، صفحہ٤٢١، ترمذی، ترغیب، صفحہ٥٢)

तर्जुमाः– हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिस औरत का इन्तिक़ाल इस हालत में हो कि उसका शौहर उस से खुश हो तो वह औरत जन्नत में जाएगी।

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि शौहर की रज़ा और खुशनूदी जन्नत में जाने की वजह है, इसलिए शौहर को नाराज़ रखना, बात बात पर झगड़े और झंझट करना, शक करना, माल या दूसरे सिलसिले में उसे परेशान करना, शौहर की खुशी और नाखुशी की परवाह न करना, ये बातें अच्छी नहीं। जन्नती औरत का यह मिज़ाज

और तरीक़ा नहीं।

बहुत सी औरतों को देखा गया है कि शौहर बूढ़े और बीमार हो जाते हैं तो उनकी परवाह नहीं करतीं, उनकी बुढ़ापे में ख़िद्मत की कोई परवाह नहीं करतीं। बुढ़ापे और बीमारी की वजह से उनकी ख़िद्मत और खाने पीने में वक़्त के लिहाज़ की ज़रूरत होती है तो औरत ऐसी ख़िद्मत से हाथ खींच लेती है, जवानी में नफ़्स की ख़ुशी की वजह से तो साथ दिया अब जब ज़माना ख़िद्मत का आया तो उससे बचती है। बेटे और बेटी में पड़ जाती है। शौहर इस दुनिया से नाराज़ और दुखी होता है। ऐसी औरत जन्नत में जाने की मुस्तहिक़ नहीं, यही हाल कुछ मर्दों का भी होता है। जवानी में तो बीवी को अच्छी तरह रखा और बुढ़ापे में उसे अलग कर दिया और उससे बे-परवाही बरतने लगा। यह बद-अख़लाक़ी और हक़ तल्फ़ी है। ऐसा मत्लब परस्त इन्सान जन्नत के लायक़ नहीं।

शौहर को ख़ुश रखने का हुक्म

٢١ - عَنْ عَلِيٍّ مَرْفُوْعًا يَا مَعَاشِرَ النِّسَآءِ اِتَّقِيْنَ اللّٰهَ وَالْتَمِسْنَ مَرْضَاةَ اَزْوَاجِكُنَّ فَاِنَّ الْمَرْاَةَ لَوْ تَعْلَمُ مَا حَقُّ زَوْجِهَا لَمْ تَزَلْ قَآئِمَةً مَّا حَضَرَ غَدَآءَهٗ وَعَشَآءَهٗ ط (كشف الاستار بزار، صفحه ١٧٥، كنزل العمال)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ली रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ औरतों की जमाअ़त! ख़ुदा से ख़ौफ़ करो और अपने शौहर की ख़ुशियों पर नज़र रखो। अगर औरत जान ले कि उसके शौहर का क्या हक़ है तो सुबह व शाम का खाना लेकर खड़ी रहे।

फ़ायदाः— मतलब यह है कि जिन बातों से शौहर खुश होता हो, जो उसकी मर्ज़ी और मिज़ाज के मुवाफ़िक़ हो, जिस से उसे राहत मालूम होती हो, जिसको वह पसन्द करे (और उसमें गुनाह न हो) उसको मालूम करती रहे और उसी को इख़्तियार करे। जैसे उसे पसन्द है कि गर्म खाना हो, गर्म रोटी हो तो ताज़ा और गर्म खाना पेश करे। उसे पसन्द हो कि नाश्ता सुबह जल्दी मिल जाए तो सुबह जल्द उठकर उसका इन्तिज़ाम कर दिया करे। और वह किसी वक़्त चाय पीने का आदी हो तो उसके कहने और इन्तिज़ार से पहले इन्तिज़ाम रखे। इसी तरह शौहर घर में संवरने को कहे, उ़म्दा लिबास पहनने को कहे, बाल व चेहरे वग़ैरह को बेहतर बनाए रखने को कहे तो उसमें हरगिज़ मुख़ालफ़त न करे, कि यह उसका हक़ है। ये सब बातें तो बग़ैर कहे औ़रत अंजाम दे कि इसमें औ़रत का ही फ़ायदा है। कमी होगी तो वह खुद पूरा करेंगे, हाँ मगर बे-पर्दगी की इजाज़त नहीं।

खड़े रहने का मतलब यह है कि उसके कहने और बोलने का इन्तिज़ार न करे। वक़्त से पहले ही तैयार रखे। बिला तक़ाज़ा हस्बे आदत पेश कर दे या तक़ाज़ा करने पर देर न करे कि अभी कर रही हूँ, अभी दे रही हूँ और शौहर इन्तिज़ार की ज़ेहमत में परेशान रहे।

शौहर की ख़िदमत और मुहब्बत करने वाली ख़ुदा को महबूब

٢٢– عَنْ عَلِيّ مَرْفُوْعًا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمَرْأَةَ الْمِلْقَةَ الْبَزْعَةَ مَعَ زَوْجِهَا اَلْحِصَانَ عَنْ غَيْرِهٖ۔ (کنز العمال، جلد۱۶، صفحہ۳۰۲)

तर्जुमाः— हज़रत अली रज़ि० नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नक़ल फ़रमाते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमायाः अल्लाह पाक उस औ़रत को महबूब रखते हैं जो अपने शौहर के साथ मुहब्बत रखने वाली, खुश मिज़ाज और दूसरे मर्द से अपनी इ़ज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त करने वाली हो।

फ़ायदाः— ऐसी औ़रत खुदावन्द-ए-क़ुद्दूस को महबूब और पसन्द है जो अपने शौहर से मुहब्बत रखने वाली और उससे दिली लगाव रखने वाली हो, सिर्फ़ मतलब की मुहब्बत न हो, ऐसी मुहब्बत में एक दूसरे को शिकायत होती है चूंकि मुहब्बत नहीं होती तो आदमी तकलीफ़ और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ चीज़ों को बर्दाशत नहीं कर पाता है। मुहब्बत और ख़ालिस ताल्लुक़ और दिली लगाव हो तो बुराइयों और तकलीफ़ों का एहसास भी नहीं होता। अगर होता है तो खुशी से बर्दाशत कर लेता है। इसलिए शौहर व बीवी के दर्मियान इश्क़ व मुहब्बत होनी चाहिए।

दूसरी सिफ़त खुदा के महबूब होने की यह बयान की गई है कि दूसरे अजनबी मर्द से अपनी हिफ़ाज़त करे। इसका मतलब यह है कि शौहर के अ़लावा दूसरे अजनबी मर्द से दिलचस्पी न हो, उससे किसी क़िस्म का लगाव और ताल्लुक़ न हो। आज कल की इस नई तहज़ीब में शौहर के अ़लावा दूसरे अजनबी मर्दों से बिला-तकल्लुफ़ दिल्लगी और बे-तकल्लुफ़ हंसी मज़ाक़ करती हैं और उसे वे अच्छा समझती हैं। सुन लीजिए! औ़रतों के लिए अजनबी मर्दों से हंसी मज़ाक़ और लगाव की बातें जायज़ नहीं, यह ज़िना के हुक्म में है। गुनाह और गुनाह की वजह है। खुदा और रसूल सल्ल० के नज़दीक नापसन्दीदा काम है। इससे सख़्त एहतियात करनी चाहिए।

शौहर की ख़िद्मत सद्क़ा है

٢٣ – عَنِ ابْنِ عُمَرَ مَرْفُوْعًا... خِدْمَتُكَ زَوْجَكَ صَدَقَةٌ

(كنز العمال، جلد ١٦، صفحہ ٣٠٨)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बीवी का शौहर की ख़िद्मत करना सद्क़ा है।

फ़ायदाः– कितनी फ़ज़ीलत है कि जिस तरह माल वालों को ख़ुदा के रास्ते में माल ख़र्च करने का सवाब मिलता है, उसी तरह औरतों को शौहरों की ख़िद्मत में सवाब मिलता है।

मालूम होना चाहिए कि ख़िद्मत के लफ़्ज़ में बहुत सी बातें आ जाती हैं। नाश्ता और खाना शौहर के वक़्त और मिज़ाज का ख़्याल करके बनाना, उनके ज़ाती सामान की हिफ़ाज़त और ढंग से रखना, नहाने और वुज़ू में मदद कर देना, सर्दी हो और गर्म पानी से वुज़ू और नहाने की आदत और ज़रूरत हो तो उनके बिना कहे इन्तिज़ाम करना, और पहले से तैयार रखना, ज़रूरत के हिसाब से कपड़े धो देना, फटे हुए हों तो सिल देना, ज़रूरत के हिसाब से सर और पैर दबा देना, बीमार हों तो उनकी दवा और परहेज़ के खाने का एहतिमाम रखना, सुबह और दोपहर को नमाज़-ए-फ़ज्र और ज़ुहर के लिए जगा देना, सोने से पहले तकिया और बिस्तर का इन्तिज़ाम करना, उनके दोस्तों और मेहमानों की रिआयत करना, उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ चाय नाशता ख़ुशी से देना, रात में कुछ देर हो जाए तो इन्तिज़ार करना, मौसम के हिसाब से ठंडा गर्म खाना देना, मतलब यह कि हर वह काम जिसमें शौहर को राहत और सुकून मिले, उसका ख़्याल करना

ख़िद्मत है। जिसका सवाब सद्क़ा ख़ैरात के बराबर है। इसलिए जो औरत माल के सद्क़े का सवाब हासिल नहीं कर सकती वह शौहर की ख़िद्मत से सद्क़े का सवाब हासिल कर सकती है।

शौहर की हर हाल में फ़रमाँबरदारी

٢٤— عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَآ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَلَوْ اَنَّ رَجُلًا اَمَرَ اِمْرَأَتَهُ اَنْ تَنْقُلَ مِنْ جَبَلٍ اَحْمَرَ اِلٰى جَبَلٍ اَسْوَدَ وَمِنْ جَبَلٍ اَسْوَدَ اِلٰى جَبَلٍ اَحْمَرَ لَكَانَ لَزِمَ لَهَآ اَنْ تَفْعَلَ ط

(ابن ماجہ، صفحہ ۱۳۳، مشکوۃ، صفحہ ۲۸۳، ترغیب، جلد ۳، صفحہ ۵۶)

तर्जुमाः— हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अगर आदमी अपनी बीवी को हुक्म दे कि वह अहमर (सुर्ख़) पहाड़ (की चट्टान) को असवद (काले) पहाड़ की तरफ़ हटा दे या अस्वद पहाड़ (की चट्टान) को अहमर पहाड़ की तरफ़ हटा दे, बीवी का हक़ है कि वह ऐसा करे।

फ़ायदाः— इस हदीस-ए-पाक में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ताकीद करने के लिए यह फ़रमाया कि अगर शौहर अपनी बीवी से पहाड़ या उसकी चट्टान को एक जगह से दूसरी तरफ़ हटाने को कहे तो बावुजूद यह कि यह एक बेकार काम और बहुत मुश्किल तरीन काम है लेकिन उसके बीवी होने का तक़ाज़ा है कि वह इस काम को शुरू कर दे, इंकार न करे चाहे वह हो या न हो, चाहे मुश्किल हो या आसान, चाहे इसमें फ़ायदा हो या न हो। मुल्ला अ़ली क़ारी ने बयान किया कि अगर शौहर किसी बहुत मुश्किल

मेहनत वाले काम या बेकार काम का हुक्म दे तब भी उस से इंकार न करे। (मिर्क़ात, पेज 471)

जैसे घर साफ़ और धोया या झाड़ू दी जा चुकी हो, फिर भी साफ़ करने को कहे, बर्तन साफ़ है, धुला है, कपड़े साफ़ हैं, धुले हैं, फिर धोने और साफ़ करने को कहे। ज़ाहिर है कि यह बेकार ही तो है फिर भी करे ताकि उसका कहा पूरा हो जाए और उसे तसल्ली हो जाए। उसके दिल में आ जाए कि मेरी बात को मान लिया। अगर किसी मुश्किल काम को कहे जैसे हावन दस्ते में बहुत सख़्त दवा कूटने छानने को कहे, काग़ज़ पत्ते वग़ैरह से चूल्हा जलाकर पकाने या पानी गर्म करने को कहे, मतलब यह है कि माहौल में कोई ऐसा काम जो मुश्किल और मेहनत वाला हो, शौहर करने को कहे तो इंकार न करे, पूरी कोशिश से उस काम को करे। ख़ासकर शौहर बीमार हो, कमज़ोर और बूढ़ा हो या अक्खड़ मिज़ाज हो तो सवाब समझ कर ख़िद्मत कर दे, काम से न बचे, मुँह न फुलाए, बेपरवाहीं न करे। ख़ासकर बीमारी और बुढ़ापे में मिज़ाज में सब्र और बर्दाश्त नहीं रहती। ख़िद्मत की ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है, ऐसी औरत जन्नती है जो हर हालत में और हर वक़्त में शौहर की ख़िद्मत करे, उसे राहत पहुंचाए, उसके दिल को खुश रखे, ताकि वह दुनिया से खुशी खुशी एहसान व ख़िद्मत का एतिराफ़ करते हुए रुख़्सत हो। बड़ी हलाकत की बात है कि शौहर ऐसी हालत में रुख़्सत हो रहा हो कि उसे अपनी बीवी से ख़िद्मत की शिकायत हो।

शौहर का हक़ अदा नहीं हो सकता

٢٥– عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ نِ الْخُدْرِیْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اَتٰی رَجُلٌ بِابْنَتِهٖ

اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اِبْنَتِیْ ھٰذِہٖ اَبَتْ اَنْ تَتَزَوَّجَ فَقَالَ لَھَا رَسُوْلُ اللّٰہِ اَطِیْعِیْ اَبَاکِ فَقَالَتْ وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ لَآ اَتَزَوَّجُ حَتّٰی تُخْبِرَنِیْ مَا حَقُّ الزَّوْجِ عَلٰی زَوْجَتِہٖ قَالَ حَقُّ الزَّوْجِ عَلٰی زَوْجَتِہٖ لَوْ کَانَتْ بِہٖ قَرْحَۃٌ فَلَحَسَتْھَآ اَوِ انْتَثَرَ مِنْخَرَاہُ صَدِیْدًا اَوْدَمًا ثُمَّ اِبْتَلَعَتْہُ مَآ اَدَّتْ حَقَّہٗ قَالَتْ وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ لَآ اَتَزَوَّجُ اَبَدًا فَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَا تَنْکِحُوْھُنَّ اِلَّا بِاِذْنِھِنَّ ط

(ترغیب، جلد۳، صفحہ۵۴)

तर्जुमा:— हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स अपनी बेटी को लेकर हाज़िर हुआ और कहा कि यह मेरी बेटी है शादी से इंकार करती है, आप सल्ल० ने उससे फ़रमाया, अपने बाप का कहा मानो। उसने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है। मैं उस वक़्त तक शादी न करूंगी जब तक कि मुझे यह न मालूम हो जाए कि बीवी पर शौहर का क्या हक़ है। आप सल्ल० ने फ़रमाया शौहर का बीवी पर यह हक़ है कि अगर उस के कोई ज़ख़्म हो गया हो उसे वह चाट ले, या उसकी नाक से पीप या ख़ून बहे और वह उसे पी भी जाए तब भी उसने उसका हक़ अदा न किया (यह मुबालग़ा है ख़िद्मत और मुहब्बत से हक़ीक़त में पीना मुराद नहीं कि यह नापाक है) उसने कहा, क़सम उसकी जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है मैं शादी न करूंगी (कि मुझ से हक़ अदा न हो सकेगा) इस पर आप सल्ल० ने फ़रमाया, बग़ैर औरतों की इजाज़त से इनका निकाह मत करो।

फ़ायदाः— इस रिवायत से मालूम हुआ कि औरत शौहर का हक़ पूरी तरह अदा नहीं कर सकती। मतलब यह है कि यह न सोचे कि मैंने फ़लाँ ख़िद्मत कर दी तो हक़ अदा हो गया, बल्कि ख़िद्मत करती रहे। किसी वजह से ज़ौजियत (शादी) के लायक़ नहीं तो शादी न करने का औरतों को इख़्तियार है मज्बूर नहीं किया जा सकता।

शौहर का हक़ सबसे ज़्यादा है

٢٦– عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَیُّ النَّاسِ اَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الْمَرْأَةِ قَالَ زَوْجُهَا. قُلْتُ فَاَیُّ النَّاسِ اَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الرَّجُلِ قَالَ اُمُّهٗ (بزار، ترغیب، جلد۳، صفحہ۵۳)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि औरत पर सबसे ज़्यादा हक़ किस का है? आप सल्ल० ने फ़रमाया उसके शौहर का। मैंने पूछा कि मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किस का है? आप सल्ल० ने फ़रमाया उसकी माँ का।

फ़ायदाः— यानी जब तक औरत की शादी न हो माँ-बाप की फ़रमाँबरदारी और उनकी ख़िद्मत का हक़ है और जब शादी हो जाए और शौहर के घर आ जाए तो अब शौहर का हक़ सबसे ज़्यादा हो जाता है और उसकी ख़िद्मत और रिआयत उसके ज़िम्मे निकाह हो जाने की वजह से वाजिब हो जाती है और मर्द के ज़िम्मे सबसे ज़्यादा ख़िद्मत और ख़ुशी के बारे में माँ का हक़ है कि वह अपनी माँ की ख़िद्मत और फ़रमाँबरदारी करे और उसकी नाराज़गी से बचे। बीवी की ख़ुशी पर माँ की ख़ुशी को अहमियत दे, बीवी

की वजह से माँ की हक़ तल्फ़ी न करे। ऐसी सूरत निकाले कि अगर बीवी और माँ के दर्मियान इख़्तिलाफ़ हो जाए तो बीवी की भी रिआयत करे और माँ की भी रिआयत और ख़िद्मत व फ़रमाँबरदारी करे। ख़्याल रहे कि रिआयत और ख़िद्मत और फ़रमाँबरदारी अलग-अलग चीज़ है। बीवी की रिआयत करे और माँ की फ़रमाँबरदारी और ख़िदमत करे। बीवी के मुक़ाबले में माँ की ख़ुशी को अव्वल रखे।

शौहर की फ़रमाँबरदारी की वजह से मग़्फ़िरत

٢٧ – عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّ رَجُلاً خَرَجَ وَاَمَرَ اِمْرَاَتَهٗ اَنْ لَّا تَخْرُجَ مِنْ بَيْتِهَا وَكَانَ اَبُوْهَا فِيْ اَسْفَلِ الدَّارِ وَكَانَتْ فِيْ اَعْلَاهَا فَمَرِضَ اَبُوْهَا فَاَرْسَلَتْ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذٰلِكَ لَهٗ فَقَالَ اَطِيْعِيْ زَوْجَكِ فَمَاتَ اَبُوْهَا فَاَرْسَلَتْ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ سَلَّمَ فَقَالَ اَطِيْعِيْ زَوْجَكِ فَاَرْسَلَ اِلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ غَفَرَ لِاَبِيْهَا لِطَاعَتِهَا لِزَوْجِهَا ط

(مجمع، جلد۴، صفحہ۳۱۶)

तर्जुमाः— हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स घर से बाहर जाते हुए अपनी बीवी से कह गया कि घर से न निकलना, उसके वालिद घर के निचले हिस्से में रहते थे और वह घर के ऊपर रहा करती थी। वालिद, बीमार हुए तो उसने

नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िद्मत में अपना सवाल भेज कर मालूम किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया, अपने शौहर की बात मानो, चुनांचे उसके बाप का इन्तिक़ाल हो गया, फिर उसने नबी-ए-पाक सल्ल० के पास आदमी भेजकर मालूम किया आप सल्ल० ने फ़रमायाः शौहर की फ़रमाँबरदारी करो, फिर नबी-ए-पाक सल्ल० ने उसके पास यह पैग़ाम भेजा कि अल्लाह पाक ने शौहर की फ़रमाँबरदारी की वजह से तुम्हारे बाप की मग़्फ़िरत कर दी।

फ़ायदाः— इस हदीस में औरत का अपने बाप के पास न जाना सिर्फ़ शौहर की फ़रमाँबरदारी की वजह से था। आप सल्ल० ने भी उसी की ताकीद की थी कि जब शौहर ने घर से निकलने की इजाज़त नहीं दी है तो मत निकलो और उसकी बात का लिहाज़ रखो। यहां तक कि बाप की मौत हो गई। अल्लाह पाक ने शौहर की फ़रमाँबरदारी की बरकत से उसके बाप की मग़्फ़िरत फ़रमा दी जब शौहर की फ़रमाँबरदारी की वजह से बीवी के बाप की मग़्फ़िरत हो गई तो खुद औरत मग़्फ़िरत के लायक़ न होगी, यक़ीनन होगी।

शौहर और बच्चों से मुहब्बत नेकी की पहचान है

٢٨— عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ خَیْرُ نِسَآءٍ رَکِبْنَ الْاِبِلَ صَالِحُ نِسَآءِ قُرَیْشٍ اَحْنَاهُ عَلٰی وَلَدٍ فِیْ صِغَرِهٖ وَاَرْعَاهُ عَلٰی زَوْجٍ فِیْ ذَاتِ یَدِهٖ ط (بخاری و مسلم، مشکوٰۃ صفحہ ۲۶۰)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि नबी-ए-

पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऊँट पर सवार होने वाली औ़रतों (अ़रबी ख़ातून) में सबसे बेहतर क़ुरैश की औ़रतें हैं कि छोटे बच्चों पर शफ़्क़त करती हैं शौहर के माल की हिफ़ाज़त करने वाली होती हैं।

फ़ायदाः— इस हदीस पाक में औ़रतों की दो क़ाबिले तारीफ़ अ़लामतों को बयान किया गया है।

1. बच्चों पर शफ़्क़त करने वाली। मतलब यह है कि छोटे बच्चों की परवरिश में बड़ी मेहरबान व शफ़ीक़ होती हैं। उनको दूध पिलाती हैं, पाख़ाना पेशाब धोती हैं, उनकी निहायत ही मुहब्बत से परवरिश करती हैं। ऐसा नहीं कि बच्चे ही नहीं होने देती हैं अगर हो जाए तो बच्चे को दूध नहीं पिलातीं। बहाना बनाती हैं कि सहत न ख़राब हो जाए। यह जहालत और ऐश मिज़ाजी की बातें हैं। बच्चों की परवरिश नौकरानियों के हवाले कर देती हैं। वे बच्चों की सही तरह तर्बियत नहीं कर पातीं। इसी तरह वे औ़रतें जो नौकरी करती हैं और इसकी वजह से बच्चों की तर्बियत और निगरानी नहीं कर पातीं, नौकरानियों के हवाले करके बच्चों को ख़राब करती हैं। ख़्याल रहे कि ये निहायत ही बुरी और ख़ुदा और रसूल सल्ल० को नाराज़ करने वाली बातें हैं। यह युरोपियन औ़रतों की आ़दत है। बच्चों की शफ़्क़त के साथ तर्बियत व निगरानी यह शरीअ़त का हक़ है। दुनिया में ऐसी औ़रतों का बुरा अंजाम यह होता है कि बुढ़ापे में यह औलाद सहारा नहीं होती और उनकी ज़िन्दगी अजीरन हो जाती है जैसा कि मग़्रिबी मुल्कों का हाल है।

ख़्याल रहे कि जिस तरह अपने बच्चों की परवरिश औ़रत के ज़िम्मे है, उसी तरह शौहर के दूसरी बीवी से बच्चे हों और परवरिश

के लायक़ हों तो उनकी परवरिश और निगरानी भी औ़रत करे। यह बड़ी नेकी और सवाब-ए-अ़ज़ीम का काम है। उसके बड़े फ़ज़ाइल हैं, कुछ औ़रतें ऐसी होती हैं कि सौतेले बच्चों से नफ़रत करती हैं। उनको तकलीफ़ पहुंचाती हैं, बे-रुख़ी से पेश आती हैं, ख़िदमत और तर्बियत तो दूर की बात है, लअ़्न तअ़्न करती हैं, खाने पीने में ज़ुल्म व सितम ढाती हैं। बड़ी बुरी बात है, उनके बच्चों के साथ कोई दूसरा इस तरह करे तो बताओ कैसी तकलीफ़ उनको होगी।

सौतेले बच्चों को तकलीफ़ पहुँचाना, हिक़ारत का मामला करना, जहन्नम के काम हैं। खुदा हिफ़ाज़त फ़रमाए, इसी तरह घर में कोई बच्चा यतीम हो उसकी परवरिश का मौक़ा मिल जाए तो यह खुदा की बड़ी नेमत है। ख़ूब खुशी और मुसर्रत से ख़िद्मत करनी चाहिए कि इसका बड़ा सवाब है, ऐसा घर बहुत बरकत वाला है।

हो सके तो किसी यतीम बच्चे की ख़ासकर बच्ची की परवरिश घर में रखकर करो यहां तक कि उसकी शादी ब्याह करा दो, जन्नत में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पड़ोसन बनोगी।

न नमाज़ क़ुबूल होगी और न नेकी ऊपर चढ़ेगी

٢٩ – عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَةٌ لَّا تَقْبَلُ لَهُمْ صَلٰوةٌ وَّلَا تَصْعَدُلَهُمْ حَسَنَةٌ اَلْعَبْدُ الْاٰبِقُ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلٰى مَوَالِيْهِ فَيَضَعُ يَدَهٗ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَالْمَرْاَةُ السَّاخِطُ عَلَيْهَا زَوْجُهَا وَالسَّكْرَانُ حَتّٰى يَصْحُوْا ط

(بیہقی فی الشعب، جلد۲، صفحہ ۴۱۷)

तर्जुमाः— हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन लोगों की न नमाज़ क़ुबूल होती है और न कोई नेकी ऊपर चढ़ती है। 1. भागा हुआ ग़ुलाम, जब तक अपने आक़ा के पास न आ जाए और उनके हाथ में अपना हाथ न दे दे। 2. ऐसी औरत जिससे उसका शौहर नाराज़ हो। 3. मस्त शराबी यहां तक कि शराब का असर ख़त्म न हो जाए।

फ़ायदाः— मर्द औरत पर निगरां है और उसके मातहत है। ख़ुदा के बाद औरत के लिए शौहर ही है। माँ-बाप के हक़ पर शौहर का हक़ बढ़ गया है। अगर मज़हब में किसी को सज्दा-ए ताज़ीमी की इजाज़त होती तो औरत को इस बात की इजाज़त होती कि वह अपने शौहर को सज्दा करे। हदीसे पाक में है औरत के लिए उसका शौहर जन्नत है या जहन्नम है कि उसके हक़ को अदा करके जन्नत पा सकती है जिसका इतना बड़ा हक़ हो भला उसे नाराज़ कैसे छोड़ा जा सकता है। फिर ख़ुदा-ए-पाक ने जिसे ज़िन्दगी भर का साथी और मददगार बनाया है, दुनियावी ऐतिबार से जिसके बग़ैर गुज़ारा नहीं, उसे कैसे नाराज़ रखा जा सकता है। इसलिए अगर वह किसी वजह से नाराज़ हो जाए, चाहे बग़ैर किसी वजह के ही सही तो उसे यूँही नहीं छोड़ दिया जाए बल्कि उसे ख़ुश करने की कोशिश की जाए। इसीलिए शरीअत ने ताकीद की है कि जब तक उसे राज़ी न किया ऐसी औरत की न नमाज़ क़ुबूल होती है और न कोई नेकी।

अल्लाह के अलावा किसी को सज्दा जायज़ होता तो बीवी को शौहर के लिए सज्दा करने का हुक्म होता

٣٠– وَعَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَوْ كُنْتُ اٰمِرًا اَحَدًا اَنْ يَّسْجُدَ لِاَحَدٍ لَاَمَرْتُ الْمَرْاَةَ اَنْ تَسْجُدَ لِزَوْجِهَا ط (ترمذی، صفحہ ۲۱۹)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अगर मैं किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह शौहर को सज्दा करे।

क़ैस बिन साद रज़ि० की रिवायत में है कि जब वह "जरह" गए तो उन्होंने (ईसाइयों को) देखा कि वे अपने मरज़बान (मज़हबी आलिम) को सज्दा करते हैं तो उन्होंने कहा कि मैंने नबी-ए पाक सल्ल० से कहा कि आप तो सज्दे के ज़्यादा लायक़ हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया जब मेरी क़ब्र पर से गुज़रोगे तो क्या मुझे सज्दा करोगे? मैंने कहा, नहीं! आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसा न करो। अगर मैं सज्दे का हुक्म किसी को देता तो औरतों को हुक्म देता कि वे अपने शौहरों को सज्दा करें कि अल्लाह ने उनके लिए उनपर हक़ रखा है (यानी इकराम व एहतिराम और फ़रमाँबरदारी का)। हज़रत आयशा रज़ि० की रिवायत में है कि एक ऊँट ने आप सल्ल० को सज्दा किया तो आप सल्ल० के हज़रात सहाबा रज़ि० ने कहा, आप सल्ल० को ऐ अल्लाह के रसल सल्ल० पेड और चौपये जानवर

सज्दा करतें हैं हम तो उनसे ज़्यादा हक़दार हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, इबादत अल्लाह की करो, अपने भाई का इकराम करो, अगर मैं किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औ़रतों को हुक्म देता कि वे अपने शौहरों को सज्दा करें। (मज्मउज़्ज़वाइद, हिस्सा 4, पेज 313)

जो औ़रत शुक्र गुज़ार नहीं उसकी तरफ़ अल्लाह की निगाह भी नहीं

٣١- عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اِلٰى امْرَاَةٍ لَا تَشْكُرُ لِزَوْجِهَا وَهِيَ لَا تَسْتَغْنِيْ عَنْهُ ط (مجمع الزوائد، جلد۴، صفحہ۳۱۲، بزار، نسائی)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि० नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि अल्लाह पाक उस औ़रत की तरफ़ निगाह उठाकर नहीं देखते जो अपने शौहर की नाशुक्री करती है। और वह उससे बेनियाज़ नहीं रह सकती।

फ़ायदाः— शुक्रगुज़ारी बेहतरीन आदत है। इससे नेमतें बढ़ती हैं। अपने एहसान करने वाले का शुक्रगुज़ार होना नेमतों और नवाज़िशों के बढ़ने का सबब होता है। जो औ़रत शौहर का शुक्र अदा नहीं करती और हमेशा ज़बान पर नाशुक्री रहती है और समझती है कि हमारे साथ ज़ुल्म और हक़ तल्फ़ी हो रही है। शौहर से उसका निभाव नहीं होता। शौहर से उसे मुहब्बत और मुरव्वत नहीं रहती है। जिससे दोनों के दर्मियान ताल्लुक़ात खुशगवार क़ायम नहीं रहते और अच्छा ख़ासा घर नेमतों और राहतों के बावुजूद जहन्नम का नमूना बन

जाता है। इसलिए शरीअत ने हर ऐसी चीज़ से मना किया है जिससे आपस के ताल्लुक़ात पर असर पड़े। मुहब्बत पर असर पड़े, इसलिए औरतों को चूंकि इसी घर में ज़िन्दगी गुज़ारनी है, नाशुक्री की बातों से एहतियात करे कि यह खुदा की निगाहों में गिर जाने की वजह है। परेशानी है तो बर्दाश्त की कोशिश करो, कल जन्नत में इस बर्दाश्त का मज़ा लूटोगी।

शौहर की ज़रूरत को पूरा करना औरत का पहला फ़र्ज़

٣٢– عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهٗ اِلٰی فِرَاشِهٖ فَاَبَتْ اَنْ تَجِیْٓءَ لَعَنَتْهَا الْمَلٰٓئِكَةُ حَتّٰی تُصْبِحَ۔ (بخاری، صفحہ ۷۸۲)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, शौहर औरत को अपने बिस्तर पर बुलाए और औरत न जाए तो फ़रिश्ते उस औरत पर सुबह तक लानत करते रहते हैं।

عَنْ طَلْقِ بْنِ عَلِیٍّ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا دَعَا الرَّجُلُ زَوْجَتَهٗ لِحَاجَتِهٖ فَلْتَاْتِهٖ كَانَتْ عَلَی التَّنُّوْرِ۔

(ترمذی، ترغیب، جلد ۳، صفحہ ۵۸)

तर्जुमाः– हज़रत तलक़ बिन अली रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मर्द जब अपनी ज़रूरत से औरत को बुलाए तो औरत फ़ौरन आ जाए चाहे

वह तन्दूर पर क्यों न बैठी हो (यानी अगरचे वह चूल्हे पर रोटी क्यों न पका रही हो कि जाने से रोटी ख़राब और आग बुझने का नुक़सान ही क्यों न हो)

عَنْ زَيْدِ بْنِ اَرْقَمَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَرْاَةُ لَا تُؤَدِّىْ حَقَّ اللّٰهِ عَلَيْهَا حَتّٰى تُؤَدِّىَ حَقَّ زَوْجِهَا كُلَّهٗ وَلَوْ سَاَلَهَا وَهِىَ عَلٰى ظَهْرِ قَتَبٍ لَّمْ تَمْنَعْهُ نَفْسَهَاط (طبرانی، ترغیب، صفحہ ۵۸)

तर्जुमाः– हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औरत ख़ुदा का हक़ अदा करने वाली उस वक़्त तक नहीं हो सकती जब तक कि शौहर का पूरा हक़ अदा न करे। अगर शौहर उसे बुलाए और वह ऊँट के पालान पर हो तब भी वह इंकार नहीं कर सकती।

फ़ायदाः– शौहर औरत का निगराँ और औरत उसके मातहत है शौहर जब भी उसे किसी भी ज़रूरत से ख़ासकर इन्सानी ज़रूरत से बुलाए या इशारा करे तो औरत का इंकार और न जाना, उसकी ज़रूरत का पूरा न करना, नाजायज़, हराम और ख़ुदा की लानत की वजह है। आम तौर पर औरत इसकी परवाह नहीं करती और शौहर की इन्सानी ज़रूरत का ख़्याल नहीं करती जिसकी वजह से शौहर की मुहब्बत और अच्छे ताल्लुक़ात में दराड़ पड़ जाती है। हाँ मगर औरत महीने में हो, या बीमारी और सेहत की वजह से नुक़सान का डर हो तो मजबूरी ज़ाहिर करे और ख़ुश अख़्लाक़ी से समझाए। कभी कभी शौहर अपनी ज़रूरत से बुलाता रहता है और यह हूँ हूँ करके टालती रहती है। हदीसे पाक में इस पर भी लानत है, इन

कामों का ख़्याल रखे ताकि ताल्लुक़ात ख़राब न हों कि शौहर व बीवी के ताल्लुक़ात बड़े नाज़ुक होते हैं।

आप सल्ल० के नज़दीक कौन मबग़ूज़ (जिस पर गुस्सा किया गया) औरत

٣٣- عَنْ اُمِّ سَلْمَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنِّىْ لَاَبْغَضُ الْمَرْأَةَ تَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهَا تَجُرُّ ذَيْلَهَا تَشْكُوْ زَوْجَهَا ط

(مجمع الزوائد، جلد ٤، صفحہ ٣١٦)

तर्जुमाः– हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मुझे वह औरत मबग़ूज़ है जो अपने घर से (शौहर की इजाज़त के बग़ैर) शौहर की शिकायत करते हुए निकले।

फ़ायदाः– ख़्याल रहे कि हमेशा हर वक़्त एक साथ रहने से ज़रूर कुछ न कुछ हक़ तल्फ़ी होती है। बहुत सी बातों और शरीअत की रिआयत और ख़ौफ़े ख़ुदा न होने की वजह से एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़त्म होना एक मामूली बात है। फिर जबकि हमेशा एक साथ रहना है और हर एक का फ़ायदा दूसरे से जुड़ा है तो ऐसी सूरत में आपस में शिकायत की बात हो जाए, कुछ कभी मामूली तकलीफ़ पहुंच जाए तो ज़बान पर शिकायत का लफ़्ज़ न लाना चाहिए कि इससे ख़ुशगवार ताल्लुक़ात जो बहुत ही ज़रूरी हैं और जिसके बेशुमार फ़ायदें हैं उसमें दराड़ पड़ जाती है और नाराज़ होकर मेके जाने से मामला ख़राब ही होता है। आम तौर पर औरतें शादी ब्याह के बाद कुछ कमी व ज़्यादती होने पर माँ-बाप से शौहर और

सास वग़ैरह की शिकायत करती हैं। मुहब्बत की वजह से माँ-बाप मुतास्सिर हो जाते हैं, फिर वे शिकायत को दूर करने की कोशिश करते हैं जिस से कभी कभी मामला और बुरा हो जाता है। इसलिए कोशिश करे, जहां तक हो सके बर्दाश्त करे। संजीदगी और फिर मुहब्बत के साथ ख़ुशी के मौक़े पर अपनी तकलीफ़ ज़ाहिर कर दे तो इन्शाअल्लाह शरीफ़ और समझदार शौहर उस तकलीफ़ को दूर करेगा और ख़ुदा से भी दुआ करती रहे दिल उसके क़ब्ज़े में है।

शौहर से भलाई का इंकार तो सवाब ख़त्म

٣٤– عَنْ عَآئِشَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَآ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِذَا قَالَتِ الْمَرْأَةُ لِزَوْجِهَا مَا رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهَا ط (جامع صغير، صفحہ ۵۴، كنز، جلد ۱۶)

तर्जुमाः– हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब औ़रत शौहर के बारे में यह कहे कि मैंने तुमसे कोई भलाई नहीं पाई तो उस का अ़मल (का सवाब) बर्बाद हो जाता है।

फ़ायदाः– ख़ुदा की पनाह कैसी सख़्त वईद (धमकी)। ज़रा सी नाशुक्री के जुमले पर आमाल ही बर्बाद। ज़्यादातर औ़रतों को देखा गया है कि जहाँ कोई शिकायत शौहर से हुई, कोई लड़ाई और झगड़े की नौबत आई, कोई उम्मीद पूरी नहीं हुई, कोई तकलीफ़ हो गई फ़ौरन कह देती हैं इससे मुझे आराम नहीं मिला। इस घर में चैन नहीं मिला, कभी इसने मेरा ख़्याल नहीं किया, कभी इसने मुझे

कुछ नहीं दिया, हमेशा नौकर की तरह काम में लगी रही मगर मेरा कभी लिहाज़ नहीं किया गया। इस तरह के जुम्ले बहुत बुरे हैं इससे आमाल का सवाब बर्बाद हो जाता है। बर्बाद होने का मतलब यह है कि जो नेकियाँ पहले की हैं वे बे-असर हो जाती हैं। सही बुख़ारी की रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जहन्नम में औरतों को मर्दों से ज़्यादा देखा, पूछा गया तो फ़रमायाः "تَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ" शौहर की नाशुक्री करने की वजह से जिस शौहर ने हस्बे ज़रूरत अपनी गुंजाइश और हैसियत के बक़द्र हमेशा दिया कभी किसी वजह से शिकायत हो गई कि आम तौर पर एक घर में आपस में साथ रहने की वजह से हो जाती है तो बिला झिझक कह देती हैं, इससे हमको कभी आराम नहीं मिला। हरगिज़ ऐसा जुम्ला न कहें। कोई शिकायत की बात हो जाए तो संजीदगी से हल करें, बर्दाश्त करें, मर्दों को भी चाहिए कि ऐसी बातों से एहतियात करें कि औरत की ज़बान से ऐसी बात न निकले।

शौहर की इजाज़त के बग़ैर नफ़्ल रोज़ों की इजाज़त नहीं

٣٥– عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا یَحِلُّ لِامْرَأَةٍ اَنْ تَصُوْمَ وَزَوْجُهَا شَاهِدٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ط

(مشکوٰۃ، صفحہ ۱۷۸، بخاری ۷۸۲، مسلم)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, किसी औरत के लिए दुरुस्त नहीं कि वह शौहर की मौजूदगी में (नफ़्ली) रोज़ा रखे,

हाँ मगर उसकी इजाज़त से। एक रिवायत में है कि उसने अगर रोज़ा रखा तो भूखी, प्यासी रही और क़ुबूल न किया जाएगा। (मज्मउज़्ज़वाइद, हिस्सा 4, पेज 310)

फ़ायदाः— औरत को शौहर की ख़िद्मत व रिआयत की वजह से नफ़्ली रोज़ा रखने की इजाज़त नहीं। हो सकता है कि शौहर को किसी वक़्त ज़रूरत पेश आ जाए, यह उसका हक़ है। अलबत्ता वह ख़ुद इजाज़त दे तो फिर ठीक है। हाँ अगर शौहर घर में मौजूद न हो, सफ़र पर हो तो इजाज़त है।

ख़्याल रहे कि यह नफ़्ली रोज़े के बारे में है। रमज़ान के रोज़े के बारे में यह बात नहीं। अगर शौहर रमज़ान के रोज़े को मना करे तब छोड़ना जायज़ नहीं क्योंकि لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوْقٍ فِیْ مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ ط ख़ुदा की नाफ़रमानी हो तो मख़्लूक़ की फ़रमाँबरदारी जायज़ नहीं। इसी वजह से एक हदीस में है: لَا تَصُمِ الْمَرْأَةُ وَبَعْلُهَا شَاهِدٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ غَيْرَ رَمَضَانَ ط (कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द 16, पेज 238)

सिवाए रमज़ान के औरत अपने शौहर की इजाज़त के बग़ैर रोज़ा न रखे जबकि उसका शौहर मौजूद हो।

देखा! शरीअत ने औरतों को कितनी ताकीद की है कि वे शौहरों की रिआयत करें। इसी रिआयत की वजह से तो दोनों के दर्मियान ख़ुशगवार ताल्लुक़ात क़ायम रहेंगे।

शौहर की फ़रमाँबरदारी और उसकी अच्छाईयों का ऐतिराफ़ जिहाद के बराबर

٣٦– عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَبْلِغْ مَنْ لَقِيْتَ مِنَ النِّسَآءِ اَنَّ طَاعَةَ الزَّوْجِ وَاعْتِرَافًا ۢ

بِحَقِّهٖ يَعْدِلُ ذٰلِكَ وَقَلِيْلٌ مِّنْكَ مَنْ يَّفْعَلُهٗ ط (مجمع الزوائد، جلد ۴، صفحہ ۳۰۸)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे कहा, जिन औ़रतों से तुम्हारी मुलाक़ात हो कह दो कि शौहर की फ़रमाँबरदारी और उसके एहसान को मानना जिहाद के बराबर है। ऐसी औ़रतें बहुत कम हैं।

फ़ायदाः— शौहर व बीवी के दर्मियान हुस्ने मुआ़शरत (खुशहाल ज़िन्दगी) के लिए ये दो चीज़ें बहुत अहम हैं ख़िद्मत और ख़ूबियों के एतिराफ़ और एहसानमन्दी से एक का ताल्लुक़ दूसरे से बढ़ता ही रहेगा। एक और हदीस में है कि औ़रतों ने पूछा औ़रतों का ग़ज़्वा (जिहाद) क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमाया, शौहर की फ़रमाँबरदारी और उसके एहसान को मानना है। (बैहक़ी, हिस्सा 6, पेज 417)

देखिए! औ़रतों के साथ अल्लाह तआ़ला का कितना बड़ा खुसूसी फ़ज़्लो करम है। किस क़द्र मामूली काम है और जिसमें उनका दुनियावी नफ़ा भी है कि शौहर की ख़िद्मत से शौहर की निगाह में महबूब रहेगी तो शौहर उसका दुनियावी ख़्याल रखेगा और आख़िरत का भी उसको होगा। दुनिया में फ़ायदा और आख़िरत में भी सवाब।

एहसान मानने का मतलब यह है कि जो कुछ भी उनकी तरफ़ से मिले उसे खुशी से क़ुबूल करे और उसे बहुत समझे, कमी पर शिकायत न करे। नाशुक्री न करे, बल्कि कहे, आपने हमारी रिआ़यत में बहुत कुछ किया। आपने हमारा बहुत ज़्यादा ख़्याल किया। आपने हमेशा अपने से ज़्यादा माना और चाहा। माँ-बाप से ज़्यादा मुहब्बत का बर्ताव किया। वग़ैरह वग़ैरह।

शौहर की ख़िद्मत पर शहादत के बराबर दर्जा

٣٧– عَنْ مَيْمُوْنَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا مَرْفُوْعًا اَنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اِمْرَأَةٍ اَطَاعَتْ وَاَدَّتْ حَقَّ زَوْجِهَا وَتَذْكُرُ حَسَنَتَهٗ وَلَا تَخُوْنُهٗ فِيْ نَفْسِهَا وَمَالِهٖ اِلَّا كَانَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الشُّهَدَآءِ دَرَجَةٌ وَّاحِدَةٌ فِي الْجَنَّةِ فَاِنْ كَانَ زَوْجُهَا مُؤْمِنٌ حُسْنُ الْخُلْقِ فَهِيَ زَوْجَتُهٗ فِي الْجَنَّةِ وَاِلَّا زَوَّجَهَا اللّٰهُ مِنَ الشُّهَدَآءِ ط

(کنزالعمال، جلد ۱۶، صفحہ ۳۳۸، طبرانی)

तर्जुमाः– हज़रत मैमूना रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो औ़रत अपने शौहर की फरमाँबरदारी करे और उसके हक़ को अदा करे। नेक बातों को क़ुबूल करे, नफ़्स और माल की ख़्यानत से परहेज़ करे (तो ऐसी औ़रत का) जन्नत में शहीदों से एक दर्जा कम होगा। अगर शौहर भी उसका मोमिन और बेहतर अख़्लाक़ वाला है तो यह औ़रत उसे मिलेगी वर्ना ऐसी औ़रत की शादी अल्लाह शहीदों से कर देगा।

फ़ायदाः– हदीसे पाक में शौहर की ख़िद्मत और नेकी पर शहीदों के बराबर दर्जा मिलना बताया गया है। किस क़द्र फ़ज़ीलत की बात है, सिर्फ़ एक ही दर्जे का फ़र्क़ रह जाता है।

हदीस पाक में दूसरा हिस्सा यह बयान किया गया है कि अगर औ़रत नेक हो और उसका शौहर भी नेक हो तो जन्नत में इसी तरह शौहर बीवी बनकर रहेंगे और अगर शौहर नेक न हुआ तो फिर शहीदों के साथ उसकी शादी करा दी जाएगी। नेक औ़रत के लिए

किस क़द्र फ़ज़ीलत की बात है।

लानत वाली औरत कौन?

٣٨– عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا بَاتَتِ الْمَرْاَةُ مُهَاجِرَةً لِفِرَاشِ زَوْجِهَا لَعَنَتْهَا الْمَلٰٓئِکَةُ حَتّٰی تَرْجِعَ ط

(بخاری ومسلم، جلد ۲، صفحہ ۷۸۲)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब औ़रत अपने शौहर से (ग़ुस्से की वजह से) अलग बिस्तर पर रात गुज़ारे तो फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं, यहां तक कि औ़रत शौहर के पास आ जाए।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَاَتَهٗ اِلٰی فِرَاشِهٖ فَاَبَتْ اَنْ تَجِیْءَ لَعَنَتْهَا الْمَلٰٓئِکَةُ حَتّٰی تُصْبِحَ ط

(بخاری، صفحہ ۱۱)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, शौहर जब अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और वह इंकार कर दे, तो फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं यहां तक कि सुबह हो जाए।

फ़ायदाः— इससे मालूम हुआ कि बीवी को शौहर की मर्ज़ी और ज़रूरत व ख़्वाहिश की रिआ़यत करनी ज़रूरी है। अगर कोई शरई़ उ़ज़्र न हो और न कोई बीमारी वग़ैरह हो जिससे नुक़सान का अंदेशा हो तो उसकी ख़्वाहिश की रिआ़यत वाजिब है। वर्ना फ़रिश्तों की

लानत की मुस्तहिक़ होगी। हदीसे पाक में औरतों के लिए जबकि वे शौहर की ख़्वाहिश और मर्ज़ी को बिला किसी माक़ूल उज़्र के ठुकरा दें सख़्त वईद (सज़ा) व मलामत है। एक हदीस में है जिसे इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत किया है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाए और वह इंकार कर दे तो आसमान वालों (यानी फ़रिश्तों) की तरफ़ से सख़्त ग़ज़ब में गिरफ़्तार होती है। यहाँ तक कि उसे खुश न कर दे। (चाहे किसी भी तरह से हो बातचीत के ज़रिये से या ख़्वाहिश पूरी करने के ज़रिए से) (मुस्लिम, ऐनी, हिस्सा 2, पेज 185)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की एक हदीस में है कि आप सल्ल० ने मुग़स्सला पर और इब्ने उ़मर की रिवायत में मसूफ़ात पर लानत फ़रमाई है। (कन्ज़ुल उ़म्माल, हिस्सा 16, पेज 385)

मुग़स्सला वह औ़रत है कि उससे जब शौहर इरादा करे तो कह दे कि मैं हायज़ा हूँ और मसूफ़ात वह औ़रत है कि शौहर इरादा करे तो टालते हुए कहती रहे अच्छा आ रही हूँ यहां तक की नींद आ जाए।

फ़ायदाः— इससे मालूम हुआ कि बग़ैर किसी वजह के झूठ बोलना या बहाना करना, और टालना जैसा कि कुछ औ़रतों की आ़दत होती है ठीक नहीं। लेकिन दोनों की सेहत की रिआ़यत ज़रूरी है। अगर बीमारी या सेहत की वजह से मजबूर है तो शौहर को भी इसका ख़्याल रखना लाज़िम है। औ़रतों को भी चाहिए कि वे मर्द को किसी न किसी तरह खुश रखें। उसकी हर ज़रूरत ख़ास कर इंसानी ज़रूरत का ताकीद से ख़्याल रखें। औ़रतों को इसकी रिआ़यत का ताकीद से हुक्म है। हज़रत तलक़ रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जब शौहर बुलाए तो आ जाए चाहे

वह तन्दूर पर ही क्यों न हो। यानी अगर वह रोटी पका रही हो और रोटी जलने, ख़राब होने या बेकार होने का डर हो या चूल्हा बुझ जाने का अंदेशा हो, तब भी उसकी ख़्वाहिश और ज़रूरत का ख़्याल रखे और उसकी ज़रूरत रज़ामन्दी और ख़ुशी से पूरी करे कि रोटी के मुक़ाबले में शौहर की रिआयत अहम है फिर यह कि नुक़सान शौहर के माल का है जो इसके इख़्तियार से नहीं है बल्कि शौहर की रिआयत और ख़िद्मत की वजह से है जो उसके साथ रहने का पहला मक़सद है। हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० की एक हदीस में है, एक औरत आप सल्ल० की ख़िद्मत में आई और उसने पूछा कि शौहर का बीवी पर क्या हक़ है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अपने नफ़्स को उससे न रोके, अगरचे वह पालान की लकड़ी पर हो। एक दूसरी रिवायत में है अगरचे वह तन्दूर (चूल्हे) पर क्यों न हो।

(उ़म्दा, पेज 185)

औरत को शौहर के ख़िलाफ़ उकसाने की मुमानअ़त (मनाही)

٣٩– عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ امْرَأَةً عَلٰى زَوْجِهَا اَوْ عَبْدًا عَلٰى سَيِّدِهٖ

(ابوداؤد، مشکوٰۃ، صفحہ ۲۸۲)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, वह शख़्स हम में से नहीं जो किसी औरत को उसके शौहर के ख़िलाफ़ उकसाए, या किसी ग़ुलाम को उसके आक़ा का

मुख़ालिफ़ बनाए।

फ़ायदाः— कुछ लोगों की आदत होती है कि वह उकसाने के और ख़िलाफ़ बनाने के आदी होते हैं, कुछ औरतें होती हैं कि किसी औरत को उसके शौहर के ख़िलाफ़ उक्साती हैं। उसकी शिकायत और बे-रग़बती उसके ज़ेहन में इस तरह डालती हैं कि औरत को शौहर से नफ़रत और शिकायत होती है। कभी लड़ाई तक की नौबत आ जाती है। जैसे कहती हैं, तुम्हारे शौहर की तो इतनी आमदनी है फिर भी तुम्हें अच्छी तरह नहीं रखते, ज़ेवर नहीं बनाते, दूसरों पर ख़र्च करते हैं, तुमको धेला भी नहीं देते, भाई, बहन, माँ बाप को ख़ूब तुमसे चुराकर देते हैं, तुमको क्या देते हैं, अपनी बहन को यह लाकर दिया, तुमको पूछा भी नहीं। इस तरह की बातों से शौहर के ख़िलाफ़ बना देती हैं, यह जायज़ नहीं, किसी के घर को बिगाड़ना, ताल्लुक़ात को ख़राब करना, किसी भी तरह दुरुस्त नहीं, इससे बचना चाहिए, यह जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

शौहर से तलाक़ मांगने पर जन्नत हराम

٤٠– عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَيُّمَا امْرَأَةٍ سَأَلَتْ زَوْجَهَا طَلَاقَهَا مِنْ غَيْرِ بَأْسٍ فَحَرَامٌ عَلَيْهَا رَآئِحَةُ الْجَنَّةِ ط

(ابن ماجہ، صفحہ ۱۴۸، ابوداؤد، صفحہ ۳۰۳، ترمذی، صفحہ ۲۲۶)

तर्जुमाः— हज़रत सोबान रज़ि० से मरवी है कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो औरत अपने शौहर से बग़ैर किसी सख़्त ज़रूरत या परेशानी के तलाक़ मांगे उस

पर जन्नत की ख़ुश्बू हराम है।

फ़ायदाः— तलाक़ अल्लाह तआला के नज़्दीक मब्ग़ूज़ (ग़ुस्से वाली) है कि इससे दो ख़ानदानों के दर्मियान झगड़ा और मुख़ालफ़त पैदा होती है। लड़ाई झगड़े के अलावा बहुत से गुनाहों की वजह है। ताल्लुक़ात टूटते और ख़राब होते हैं। जोड़ और ताल्लुक़ पसन्दीदा है और इसकी ताकीद है तोड़ बुरा है और इस पर सख़्त वईद (सज़ा) है। इस वजह से तलाक़ के मांगने पर सख़्त वईद है कि ऐसी औरत जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पाएगी जबकि जन्नत की ख़ुश्बू चालीस साल की दूरी से आएगी।

आम तौर पर ऐसा होता है कि शौहर व बीवी में लड़ाई हुई, घरेलू ज़िन्दगी में ऐसी बातें पेश आ जाती हैं तो औरत ग़ुस्से की वजह से कहती है कि हमें छोड़ दीजिए, हमारा रिश्ता ख़त्म कर दीजिए। कभी कभी शौहर ग़ुस्से में होने की वजह से कहता है, जाओ। तो बीवी को हरगिज़ ज़बान से ऐसी बात न निकालनी चाहिए कि जहाँ मर्द को परेशानी भुगतनी पड़ती है वहीं औरत की ज़िन्दगी भी अजीरन बन जाती है। छोटे बच्चे हों तो और परेशानी। बेवा की शादी मुश्किल से होती है जिसका नतीजा निकलता है कि औरत हर ऐतिबार से परेशान हो जाती है और बहुत से दूसरे गुनाहों का रास्ता निकल जाता है। दीन और दुनिया दोनों ख़राब होते हैं इसलिए शैतान कोशिश करता है कि तलाक़ की नौबत आ जाए और गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाए। जहाँ तक हो सके तलाक़ की सूरत पैदा न करे, ज़िन्दगी गुज़ारे, तकलीफ़ बर्दाश्त करे बड़ा सवाब पाएगी।

खुला (अलग होने) का मुतालबा करने वाली औरत मुनाफ़िक़ है

٤١– عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْمُنْتَزِعَاتُ وَالْمُخْتَلِعَاتُ هُنَّ الْمُنَافِقَاتُ ط (مشکوٰۃ، صفحہ ۲۸۳، نسائی)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, शौहर से अलग होने की चाहत वालीं और अलग होने का मुतालबा करने वाली औरतें मुनाफ़िक़ हैं।

फ़ायदाः— ख़्याल रहे कि निकाह करने के बाद वक़्ती इख़्तिलाफ़ या ग़ुस्से के जोश में आकर अलग होने का मुतालबा करना बहुत ही बुरा काम है। इससे दो ख़ानदानों के दर्मियान बिगाड़, नफ़रत और दुश्मनी पैदा होती है। पहली बात तो यह कि शादी समझबूझ कर करे और जब हो जाए तो हर सूरत में निभाने की कोशिश करे। इंसानी फ़ितरत के ऐतिबार से कभी इख़्तिलाफ़ और लड़ाई की भी नौबत आ जाती है। उसे बर्दाश्त कर लेना चाहिए। शादी ब्याह और तलाक़ कोई मामूली बात और खेल नहीं है। निकाह से घर आबाद होता है, तलाक़ से घर बर्बाद होता है, न मर्दों को और न औरतों को इस तरह की बातें इख़्तियार करनी चाहिएं। कुछ औरतें तेज़ मिज़ाज और जल्दबाज़ होती हैं। दूरअंदेश नहीं होतीं, अगर शौहर से कोई तकलीफ़ हो जाती है, कोई फ़रमाइश और ख़्वाहिश पूरी नहीं होती है या शौहर ग़रीब और औरत अच्छे खुशहाल घराने की होती है तो ऐसी बात होने लगती है या औरत के घर वाले मज़बूत और अच्छी हैसियत वाले होते हैं तो ऐसा मामला पेश आ जाता है। जहाँ

तक हो सके जोड़, सुलह और साथ निभाने की शक्ल इख़्तियार करनी चाहिए। बीवी और शौहर के माँ बाप और रिश्तेदार मामले को सुलझाने की कोशिश करें। निकाह कोई वक़्ती चीज़ नहीं कि चलो कल दूसरा हो जाएगा। यह ज़िन्दगी भर निभाने के लिए होता है। इसी वजह से मर्द को इख़्तियार दिया गया है क्योंकि मर्द औरत के मुक़ाबले ज़्यादा अक़्ल वाला और दूर की सोचने वाला है। अगर औरतों को इख़्तियार दे दिया जाता तो ज़रा ज़रा सी बातों से मुतास्सिर होकर फ़ौरन तलाक़ दे दिया करतीं। हाँ अगर बिल्कुल निभाह की शक्ल न हो न शौहर तैयार, न बीवी तैयार, न सुलह की कोई शक्ल तो शरीअ़त ने अलग होने की भी इजाज़त दी है।

शौहर की इजाज़त के बग़ैर निकलने पर लानत

٤٢— وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِنَّ الْمَرْأَةَ اِذَا خَرَجَتْ مِنْ بَيْتِهَا وَزَوْجُهَا كَارِهٌ لَعَنَهَا كُلُّ مَلَكٍ فِى السَّمَآءِ وَكُلُّ شَىْءٍ مَرَّتْ عَلَيْهِ غَيْرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ حَتّٰى تَرْجِعَ ط (طبرانی،ترغیب،جلد۳،صفحہ۵۹)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि मैंने रसूल-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना, आप सल्ल० फ़रमा रहे थे जब औ़रत शौहर के घर से शौहर की नाराज़गी में निकलती है तो आसमान के सारे फ़रिश्ते और जिस जगह से गुज़रती है सारी चीज़ें इन्सान और जिन्न के अ़लावा सब लानत करते हैं। जब तक कि वापस न आ जाए।

इब्ने अब्बास रज़ि० की एक हदीस में यह है कि अगर औरत शौहर की इजाज़त के बग़ैर निकलती है तो आसमान के फ़रिश्ते, रहमत के फ़रिश्ते, अज़ाब के फ़रिश्ते सब उस पर लानत करते हैं जब तक कि वह वापस न आ जाए।

फ़ायदाः– अल्लाह की पनाह! शौहर को नाराज़ करके यानी लड़ाई झगड़ा करके निकलने या उसकी बग़ैर इजाज़त से निकलने की कैसी सख़्त सज़ा है कि हर चीज़ उस पर लानत करती है। पहली बात तो नाराज़ होना ही दुरुस्त नहीं। अगर किसी वजह से हो गई तो ग़ुस्सा ठंडा होने पर माफ़ी तलाफ़ी करनी चाहिए न कि घर से बाहर मैके वग़ैरह जाना चाहिए। इस तरह इस वईद (धमकी) में वह औरत भी दाख़िल है जो शौहर के मना करने के बावुजूद उसकी ग़ैर हाज़िरी में जाती है। ख़्याल रहे कि पड़ोस में जाने से शौहर मना न करता हो तो उसकी मौजूदगी की तरह ग़ैर हाज़िरी में भी जा सकती है कि मना न करना ग़ुस्सा न होना इजाज़त के हुक्म में दाख़िल है। शौहर को भी चाहिए कि उसे बिल्कुल क़ैद में न रखे बल्कि पड़ोस में, रिश्तेदारों में जाने दे कि उस में उनके हुक़ूक़ की अदायगी है जो सवाब की वजह है। बशर्ते कि फ़ितना फ़साद का अंदेशा न हो।

शौहर की इजाज़त के बग़ैर घर से निकलने पर ख़ुदा के ग़ज़ब (ग़ुस्से) में गिरफ़्तार

٤٣– عَنْ اَنَسٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ مَرْفُوْعًا اَيُّمَا امْرَأَةٍ خَرَجَتْ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا بِغَيْرِ اِذْنِ زَوْجِهَا كَانَتْ فِيْ سَخَطِ اللّٰهِ تَعَالٰى حَتّٰى تَرْجِعَ اِلٰى

بَيْتِهَآ اَوْ يَرْضٰى عَنْهَا زَوْجُهَا ط (كنز العمال، جلد ١٦، صفحہ ٣٨٢)

तर्जुमाः— हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो औ़रत शौहर के घर से शौहर की इजाज़त के बग़ैर बाहर निकले वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार रहती है जब तक कि घर वापस न आ जाए या शौहर उससे राज़ी हो जाए।

फ़ायदाः— इससे मालूम हुआ कि ज़रूरत पर भी औ़रत को शौहर से इजाज़त के बग़ैर घर से निकलना दुरुस्त नहीं। औ़रत निकाह से पहले माँ-बाप के मातहत और निकाह के बाद शौहर के मातहत हो जाती है। वह अगर आज़ाद रहेगी तो शैतान के ताबे हो जाएगी। आज़ादी शैतान की ग़ुलामी है। कभी कभी इख़्तिलाफ़ और लड़ाई की बुनियाद पर या किसी तकलीफ़ से मुतास्सिर होकर बिला इजाज़त नाराज़ होकर घर से निकलकर मैके या किसी रिश्तेदार के यहाँ चली जाती है। यह मना है, यही ग़ज़बे इलाही की वजह है। माँ बाप को भी चाहिए कि मना करें, शहर की नई तहज़ीब अंग्रेज़ी तालीम याफ़्ता औ़रतों में यह बात होती है। वे शौहरों को अपने बराबर समझती हैं, ख़िद्मत और मातहती और बर्दाश्त उनके माहौल में ऐब और बुरा है। ख़ुदा की पनाह! अब शादी के बाद शौहर ही का मुक़ाम है, ख़ुदा और रसूल सल्ल० के बाद शौहर ही की फ़रमाँबरदारी है। उसकी इजाज़त के बग़ैर घर से बाहर क़दम उठाना मना है।

आज बर्दाश्त करके शौहर की फ़रमाँबरदारी कर लो, तकलीफ़ और परेशानी भी हो तो सब्र कर लो और घर से बाहर शौहर की इजाज़त के बग़ैर क़दम मत निकालो और अल्लाह तआ़ला के फ़राइज़ पर अ़मल करती रहो, कल ख़ुदा की रहमत में राहत और मज़े की

ज़िन्दगी गुज़ारोगी।

शौहर को तकलीफ़ पहुंचाने वाली औरत पर जन्नती हूर की बद्दुआ

٤٤- عَنْ مُعَاذٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تُؤْذِي امْرَأَةٌ زَوْجَهَا فِي الدُّنْيَا اِلَّا قَالَتْ زَوْجَتُهُ مِنَ الْحُوْرِ الْعِيْنِ لَا تُؤْذِيْهِ قَاتَلَكِ اللّٰهُ فَاِنَّمَا هُوَ عِنْدَكِ دَخِيْلٌ يُوْشِكُ اَنْ يُفَارِقَكِ اِلَيْنَا ط

(مشکوٰۃ، صفحہ ۲۸۱، ترمذی، صفحہ ۲۲۲، ابن ماجہ صفحہ ۱۴۵)

तर्जुमाः— हज़रत मुआ़ज़ रज़ि० नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया जो कोई औ़रत अपने शौहर को दुनिया में परेशान करती है तो उसकी हूरे ईन (जन्नती) बीवी उससे कहती है कि इसे परेशान मत करो, ख़ुदा तुम्हारा भला न करे वह तुम्हारे पास थोड़े ही दिन रहने वाला है। बहुत जल्द तुमसे जुदा होकर हमारे पास चला आएगा।

फ़ायदाः— इससे मालूम हुआ कि औ़रतों का अपने शौहर को ग़रीबी की वजह से या इस वजह से कि वह सीधा साधा ज़्यादा चालाक नहीं है या और किसी वजह से उसकी रिआ़यत और ख़िद्मत न करना, या इस वजह से कि ज़ईफ़, बीमार, कमज़ोर या बूढ़ा हो गया है। उसके हुक़ूक़ की रिआ़यत न करना, ख़िद्मत में कोताही और ज़रूरत की परवाह न करना, यह अच्छी बात नहीं। ऐसी औ़रतों पर हूरे ईन की बद्-दुआ़ होती है कि ख़ुदा तुझे रहमत से दूर करे। तुम्हारा शौहर तुम्हारे पास थोड़े दिन का मेहमान है फिर

तुमसे जुदा होकर हमारे पास पहुँच जाएगा।(मिर्क़ात, हिस्सा 6, पेज 42)

ज़्यादा तर औ़रतों को देखा गया है कि शौहर जब औ़रत के मुक़ाबले में किसी ऐतिबार से कमज़ोर होता है, जैसे औ़रत मालदार घराने की और शौहर ग़रीब या आख़िर उम्र में शौहर जब बूढ़ा, कमज़ोर और कमाने से आजिज़ हो जाता है और घर का गुज़र बसर लड़कों पर होता है तो औ़रत बुढ़ापे में जबकि शौहर को ख़िद्मत व मदद की ज़रूरत होती है तो अपना मुँह फेर लेती है, ऐसी हरकत बहुत बुरी है। वह हूरे ईन की बद्-दुआ़ पाती है, ऐसे वक़्त में शौहर की ख़िद्मत से जन्नत हासिल करने का वक़्त होता है।

किस औ़रत पर ख़ुदा की रहमत

٤٥— عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَحِمَ امْرَاَةً قَامَتْ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلَّتْ وَاَیْقَظَتْ زَوْجَهَا فَصَلّٰی فَاِنْ اَبٰی نَضَحَتْ فِیْ وَجْهِهِ الْمَآءَ ط

(ابوداود، جلد۱، صفحہ۱۸۵، ابن حبان کنز العمال)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो औ़रत रात को जागे और नमाज़ पढ़े और अपने शौहर को जगाए कि वह भी नमाज़ पढ़े, और अगर वह न उठे तो उसके मुँह पर पानी का छींटा मारे तो ऐसी औ़रत पर अल्लाह की रहमत।

फ़ायदाः— मतलब यह है कि ऐसी नेक औ़रत जो रात को जागने वाली, इ़बादत करने वाली, तक़्वे वाली हो कि ख़ुद भी तहज्जुद की नमाज़ पढ़े, ख़ुद भी इ़बादत, तिलावत का मिज़ाज रखती हो और अपने शौहर को भी इ़बादत का शौक़ दिलाती हो।

रात मे ख़ुद पहले उठ जाती हो, नमाज़ पढ़ती हो, फिर शौहर अगर न उठ सका हो तो उसे उठाती हो कि वह भी नमाज़ पढ़ ले और रात के आख़िर वक़्त में जो ख़ुदा-ए पाक से क़रीब होने और मुनाजात का वक़्त होता है दरबारे ख़ुदावन्दी में हाज़िर होकर आजिज़ी व इन्किसारी करे, अगर किसी वजह से शौहर न उठ सके तो सिर्फ़ उठाने की ख़ाना पूरी न करती हो बल्कि उसकी सुस्ती और नींद को दूर करने के लिए पानी का छींटा मारती हो।

ऐसी औरत जो शौहर के दीन में मदद की वजह हो, दीन व इबादत की जानिब उसे लाती हो बड़ी मुबारक है। ऐसी औरतें इस ज़माने में बहुत कम हैं। औरतों का मिज़ाज रात की इबादत का कहाँ, आजकल के माहौल में तो फ़ज्र की नमाज़ का पढ़ना ही मुश्किल है। तहज्जुद तो दूर है ख़ास तौर से नई उम्र में।

याद रखिए! क़्यामत के दिन जन्नत और जहन्नम का मामला अजीब होगा। शौहर नेक मुत्तक़ी है और बीवी फ़ासिक़ा व फ़ाजिरा तो शौहर जन्नत में बीवी जहन्नम में जाएगी, इसी तरह औरत नेक, मुत्तक़ी, परहेज़गार और शौहर फ़ासिक़, फ़ाजिर (बद-किरदार) तो शौहर जहन्नम में जाएगा और बीवी जन्नत में। क़ुरआन पाक में है:

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ○

हर इन्सान अपने अमल के बदले में होगा।

(सूर मद्दस्सिर, आयत 38)

आज ग़ौर करें कल क्या हाल होगा।

शौहर की शुक्रगुज़ार नहीं तो ख़ुदा की निगाहे करम नहीं

٤٦- عَنِ ابْنِ عُمَرَ مَرْفُوْعًا لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ اِلَى امْرَأَةٍ لَا تَشْكُرُ لِزَوْجِهَا وَهِيَ لَا تَسْتَغْنِيْ عَنْهُ ط (کنز العمال، جلد ١٦، صفحہ ٣٩٦)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह उस औ़रत की तरफ़ निगाहे करम नहीं फ़रमाते जो अपने शौहर का शुक्र अदा नहीं करती, और न उसकी परवाह करती है।

फ़ायदाः– इस हदीसे पाक में उस औ़रत पर ख़ुदा-ए पाक की ख़ुसूसी निगाहे करम को बयान किया गया है जो हर हाल में अपने शौहर के साथ शुक्रगुज़ार हो और किसी कमी कोताही, माली परेशानी पर उस से मुँह न मोड़ती हो कि हमारा शौहर ऐसा है, काश ऐसा होता। ऐसी नौकरी होती, काश ऐसा घर होता, हमारी क़िस्मत ख़राब। माँ-बाप ने हमें जहन्नम में डाल दिया, हमें डुबो दिया, हमारी क़िस्मत ख़राब ऐसा नाकारा ग़रीब शौहर मिल गया। इस तरह की बातें और ख़्यालात, क़िस्मत की शिकायत और नाशुक्री की बातें हैं। इसी नाशुक्री को दूसरी हदीसे पाक में जहन्नम में ज़्यादा जाने की वजह बयान किया गया है।

ख़्याल रहे कि हर एक की तक़दीर और क़िस्मत ख़ुदा-ए पाक ने बनाई है, जिस बन्दे के लिए जो मुनासिब और जिस में मसुलहत समझी उसी के ऐतिबार से बनाया, किसी को ग़रीब माहौल दिया कि शुक्रगुज़ार रहकर ख़ुदा-ए पाक का तालिब रहे, किसी को ख़ुशहाली दी ताकि नेमत पर शुक्र करके कमज़ोरों, ग़रीबों की

रिआयत करे, अगर शौहर के साथ शुक्रगुज़ारी की आदत न होगी तो नाशुक्री की वजह से आपस में कभी मुहब्बत न होगी, शिकायत का माहौल रहेगा तो कैसे खुशगवार माहौल होगा, ज़िन्दगी अजीरन बन जाएगी। शौहर का बदलना कोई आसान नहीं, इसलिए खुदा की तरफ़ से जो मुक़द्दर हुआ उस पर शुक्रगुज़ार और राज़ी रहे और कल जन्नत के मज़े ले।

औरतों से क़यामत में सबसे पहले क्या सवाल होगा

٤٧– عَنْ اَنَسٍ مَّرْفُوْعًا اَوَّلُ مَا تُسْئَلُ الْمَرْاَةُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَنْ صَلَاتِهَا ثُمَّ عَنْ بَعْلِهَا كَيْفَ عَمِلَتْ اِلَيْهِ ط (ابوالشیخ، کنز العمال، جلد ۱۶، صفحہ ۳۹۹)

तर्जुमाः– हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़यामत के दिन औरतों से सबसे पहले नमाज़ के बारे में सवाल किया जाएगा (कि पाबन्दी के साथ वक़्त पर अदा की थी कि नहीं) फिर शौहर के बारे में सवाल होगा कि उसके साथ कैसा बर्ताव किया था।

फ़ायदाः– हश्र का मैदान जो दिलो जिगर को पिघला देने वाला होगा, उसमें आम मुसलमानों से चाहे मर्द हों या औरत सबसे पहला सवाल नमाज़ के बारे में होगा।

फ़ारसी का यह मशहूर शेर भी नमाज़ के बारे में हैः

रोज़े महशर कि जाँ गुदाज़ बूद
अव्वलीं परसिश-ए-नमाज़ बूद

क़्यामत का दिन जो जान को पिघला देने वाला होगा, उस दिन सबसे पहला हिसाब नमाज़ का होगा। हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़्यामत में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा। अगर यह सही निकली तो दूसरे आमाल भी सही निकलेंगे। अगर इसमें गड़बड़ हुई तो दूसरे आमाल में भी गड़बड़ी होगी। (तिबरानी, जामे सग़ीर, पेज 168)

औरतें नमाज़ में भी कोताही करती हैं, नई उम्र की जवान औरतें ज़्यादातर नमाज़ छोड़ती हैं, कुछ तो बहाना बनाती हैं, बच्चों का पेशाब कपड़ों में लगा रहता है। अफ़सोस ये सब बहाने क़्यामत में नहीं चलेंगे, जब सज़ा मिलेगी तब पता चल जाएगा। इसलिए औरतों को चाहिए कि नमाज़ की पाबन्दी करें, घर की बड़ी औरतों को चाहिए कि छोटी उम्र ही से नमाज़ का पाबन्द बनाएं, शुरु उम्र की आदत और पाबन्दी का असर पूरी उम्र रहता है। शरई फ़राइज़ के बाद औरतों से शौहरों के हुक़ूक़ और उनकी ख़िद्मत के बारे में सवाल होगा, आजकल के दौर की वे औरतें जो मुलाज़मत करती हैं, ऑफ़िस दफ़्तर वग़ैरह में काम करती हैं, वे शौहर की ख़िदमत में कोताही करती हैं, यहां तक कि ऐसी औरतों से खाने तक की सहूलत नहीं मिलती। ऐसी कोताही कल क़्यामत में गिरफ़्त के क़ाबिल होगी।

उस औरत ने ख़ुदा का हक़ अदा नहीं किया जिसने शौहर की फ़रमाँबरदारी नहीं की

٤٨ – عَنِ ابْنِ اَبِیْ اَوْفٰی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلّٰی

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَا تُؤَدِّى الْمَرْأَةُ حَقَّ رَبِّهَا حَتّٰى تُؤَدِّىَ حَقَّ زَوْجِهَا ط (ابن ماجہ، ترغیب، جلد۳، صفحہ ۵۲)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अबी ओफ़ा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, औ़रत अल्लाह का हक़ उस वक़्त तक अदा करने वाली नहीं हो सकती जब तक कि वह अपने शौहर का हक़ अदा न करे।

फ़ायदाः— मालूम होना चाहिए कि बन्दों के ज़िम्मे दो हक़ हैं:

1. **हक़्क़ुल्लाह** (अल्लाह तआ़ला का हक़) अल्लाह पाक का हक़ है कि उसकी फ़रमाँबरदारी की जाए, उसके फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी की जाए, उसी की याद में रहे, उसी पर भरोसा करे, उसी की बन्दगी व इबादत करे, उसी से मांगे, उसी से उम्मीद रखे।

2. **हक़्क़ुल इबाद** (बन्दों के हक़) बन्दों के हक़ का मतलब यह है कि जो उसकी ज़िम्मेदारी हो उसे अदा करे, जो उससे बड़ा हो उसका अदब व इकराम करे, जिसके मातहत हो उसकी ख़िदमत और उसकी फ़रमांबरदारी करे। निकाह के बाद माँ-बाप के बजाए शौहर का हक़ मुताल्लिक़ हो जाता है। खुदा के बाद शौहर की खुशी और उसकी फ़रमाँबरदारी औ़रत के ज़िम्मे हो जाती है। अब चूंकि बन्दा मोहताज होता है उसे हक़ अदा करने की ज़रूरत होती है। और शादी इस मक़सद के पेशे नज़र भी होती है। इसलिए ताकीद की गई है। चूंकि मक़सद ख़त्म होने से बुनियाद में कमज़ोरी पैदा हो जाती है, इसलिए इस हक़ के अदा करने में ताकीद करते हुए फ़रमाया कि जिसने शौहर का हक़ अदा न किया वह ऐसी है जैसे उसने ख़ुदा का हक़ अदा न किया कि शौहर का हक़ भी तो ख़ुदा

के कहने से है। कुछ औरतों को देखा गया है कि इबादत, क़ुरआन पाक की तिलावत वग़ैरह में तो उनका मिज़ाज चलता है मगर शौहर की फ़रमाँबरदारी में उनको मज़ा नहीं मिलता। तो ऐसी औरतों को ताकीद की गई है कि शौहर की हक़ तल्फ़ी ऐसी है जैसे कि ख़ुदा की हक़ तल्फ़ी है चूंकि दोनों ख़ुदा का हुक्म है।

शौहर की फ़रमाँबरदारी नहीं तो ईमान की हलावत (मिठास) नहीं

٤٩ – عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَجِدُ اِمْرَاَةٌ حَلَاوَةَ الْاِيْمَانِ حَتّٰى تُؤَدِّیَ حَقَّ زَوْجِهَا وَلَوْ سَاَلَهَا نَفْسَهَا وَهِیَ عَلٰی ظَهْرِ قَتَبٍ (ترغیب،جلد۳،صفحہ۵۶)

तर्जुमाः– हज़रत मुआज़ रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औरत ईमान की हलावत (मिठास) उस वक़्त तक नहीं पा सकती ज़ब तक कि वह अपने शौहर के हक़ को अदा न करे। अगर वह उसे बुलाए (ख़्वाहिश के पूरा करने के लिए तो आ जाए) अगरचे वह पुश्ते पालान (ऊँट की पीठ) पर बैठी हो। यानी ज़रूरत के काम में मसरूफ़ हो तब भी उसकी ख़्वाहिश की रिआयत करे, चाहे उसे ख़्वाहिश व ज़रूरत न हो।

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि वह औरत ईमान का मज़ा और उसकी मिठास भी नहीं पा सकती, जो शौहर की इताअत और उसकी बात न मानती हो। यानी पूरी मोमिन नहीं हो सकती जो शौहर की रिआयत न करे। उसकी ज़रूरत का ख़्याल न करे और

अपने अच्छे बर्ताव से खुश न रखे। ईमान की हलावत (मिठास) का मतलब यह भी हो सकता है कि वह ईमान जो असर पैदा करे, जिसके अच्छे नताइज दीन व दुनिया से मुताल्लिक़ हों। ईमान का कामिल (पूरा) होना और उसका तक़ाज़ा यह है कि आदमी हुक़ूक़ की रिआयत करे। खुदा और रसूल सल्ल० के बाद शौहर ही का हक़ है। खुदा और रसूल सल्ल० ने जिसके हवाले किया है जिसकी मातहती में ज़िन्दगी गुज़ारना मुक़र्रर किया और बन्दे ने भी खुद उसे क़ुबूल किया है तो कामिल ईमान व शराफ़त यह है कि आदमी उस हक़ को अदा करे। और खुशी व मुसर्रत से उसे निभाए। आज शौहर की फ़रमाँबरदारी गुनाह के अलावा कामों में कर लो। कल जन्नत के ख़ादिम तुम्हारी फ़रमाँबरदारी करेंगे।

औरत गुनाह के कामों में शौहर की फ़रमाँबरदारी न करे

٥٠ – عَنْ عَائِشَةَ اَنَّ امْرَأَةً مِّنَ الْاَنْصَارِ زَوَّجَتْ اِبْنَتَهَا فَتَمَعَّطَ شَعْرُ رَاْسِهَا فَجَاءَتْ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذٰلِكَ لَهُ فَقَالَتْ اِنَّ زَوْجَهَا اَمَرَنِيْ اَنْ اَصِلَ فِيْ شَعْرِهَا فَقَالَ لَا اِنَّهُ قَدْ لُعِنَ الْمُوْصَلَاتُ ط (بخاری صفحہ ۷۸۴)

तर्जुमाः– हज़रत आयशा रज़ि० से मरवी है कि क़बीला अंसार की एक औरत ने अपनी बेटी की शादी की, उसके सर के बाल झड़ गए थे, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई, उसका ज़िक्र किया और पूछा कि उसके शौहर ने कहा है कि उसके बाल में मैं दूसरी औरत के बाल जोड़ दूँ।

आप सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। बाल जोड़ने वाली औरतों पर लानत की गई है।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيْمَآ اَحَبَّ وَكَرِهَ مَا لَمْ يُؤْمَرْ بِمَعْصِيَةٍ فَاِذَآ اُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلَا سَمْعَ وَلَا طَاعَةَ ط (بخاری، جلد۲، صفحہ۱۰۵۷)

तर्जुमाः— हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लाल्लाहुअ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मुसलमानों के लिए सुनना और मानना पसन्दीदा कामों में से है और ना-पसन्दीदा कामों में उस वक़्त तक है जबकि शौहर बीवी को किसी गुनाह का हुक्म न दे, जब किसी गुनाह का हुक्म दिया जाए तो सुनना और मानना दुरुस्त नहीं।

عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوْقٍ فِيْ مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ ط (شرح السنہ، مشکوٰۃ صفحہ۳۲۱)

तर्जुमाः— हज़रत नवास बिन समआ़न रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, खुदा-ए पाक ने जिस काम को गुनाह क़रार दिया है उसमें बन्दों की बात नहीं मानी जाएगी, (चाहे वह शौहर या बाप या उस्ताद हो)।

शौहर को नाराज़ छोड़े रखना और परवाह न करना लानत की वजह

۵۱- عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَةً رَجُلٌ اَمَّ قَوْمًا وَّهُمْ لَهٗ كَارِهُوْنَ وَامْرَاَةٌ بَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَلَيْهَا

سَاخِطٌ وَرَجُلٌ سَمِعَ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ثُمَّ لَمْ يَجِبْ ط (ترمذی، صفحہ ۸۳)

तर्जुमाः— हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीन लोगों पर लानत फ़रमाई हैं। एक वह इमाम जो उस क़ौम की इमामत करे जो क़ौम उससे नाराज़ हो, (यानी नाराज़गी किसी दीन व शरीअ़त की बुनियाद पर हो और अक्सर लोग हों) और वह औ़रत जिसने रात गुज़ारी हो इस हाल में. कि उसका शौहर उससे नाराज़ हो। और वह आदमी जिसने (अज़ान में) हय्-य अ़-लल् फ़लाह सुना और फिर उसकी आवाज़ पर नहीं आया।

سَمِعْتُ اَبَا اُمَامَةَ يَقُوْلُ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةٌ لَا تُجَاوِزُ صَلَاتُهُمْ اٰذَانَهُمُ الْعَبْدُ الْاٰبِقُ حَتّٰى يَرْجِعَ وَامْرَاَةٌ بَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَلَيْهَا سَاخِطٌ وَاِمَامُ قَوْمٍ وَّهُمْ لَهٗ كَارِهُوْنَ ط (ترمذی، صفحہ ۸۳)

तर्जुमाः— हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि तीन आदमी की नमाज़ उनके कान से आगे नहीं जाती। (यानी आसमान तक नहीं पहुंचती जैसा कि नेक अ़मल पहुंचता है, बल्कि बादल के साए की तरह बीच में लटकी रहती है। (मआरिफ़ुस्सुनन, पेज 413)। 1. भगोड़ा ग़ुलाम, जब तक कि वापस न आ जाए। 2. वह औ़रत जिससे उसका शौहर नाराज़ हो। 3. और वह इमाम जिसकी इमामत को क़ौम पसन्द न करे।

फ़ायदाः— मक़सद यह है कि औ़रत से उसका शौहर किसी वजह से नाराज़ हो तो औ़रत को चाहिए कि वह शौहर को किसी न किसी

तरह खुश कर दे। जैसे उसे मना ले, हंसी खुश मिज़ाजी से या और किसी तरह ख़िद्मत करके खुश करे, उसे नाराज़ ही न छोड़ दे, जैसा कि आजकल के माहौल में औ़रत शौहर को नाराज़ छोड़े रहती है। उसकी नाराज़गी को दूर करने की कोई परवाह नहीं करती, ऐसी औ़रत मलूऊ़न है। उसकी नमाज़ भी सर से ऊपर नहीं चढ़ती, जब तक कि शौहर को खुश न कर ले, हाँ अगर शौहर का मिज़ाज ही ऐसा है, हमेशा उसकी यही आ़दत है, औ़रत परेशान है, मनाने से काम नहीं चलता, खुद से ठीक हो जाते हैं तो दूसरी बात है, फिर भी संजीदगी से खुश करने की कोशिश करे। कुछ औ़रतें किसी बात पर शौहर से मुँह फुला लेती हैं और उससे नाराज़ हो जाती हैं और उसकी ख़िदमत व आराम का ख़्याल नहीं करतीं और खुद उससे बोलती नहीं यह तो और बुरी फिटकार और लानत की बात है। औ़रत को शौहर की मातहती में रहकर मुँह फुलाने का कोई हक़ नहीं। ऐसी हरकत निहायत ही म़लूऊ़न है, वह औ़रत ऐसी है जैसे कि उसको अपना शौहर मानने से इंकार कर रही है। यह औ़रत के बीवी होने के ख़िलाफ़ है। कभी कभी यह हालत लम्बी हो जाती है तो जुदाई की नौबत आ जाती है जो औ़रत के लिए बड़ी परेशानी और हलाकत की बात हो जाती है। फिर मुनासिब इन्तिज़ाम न होने पर ज़िन्दगी भर रोती रहती है, उसे शौहर ने अगर बिलावजह भी इत्तिफ़ाक़न किसी ग़लत फ़हमी से डाँट दिया तो बेहतर ताल्लुक़ात के पेशे नज़र बर्दाश्त कर लेनी चाहिए बाक़ी शौहर की ग़लती की सज़ा खुदा की तरफ़ से उसे मिलेगी कि उसने खुदा की अ़ज़ीम नेमत का हक़ अदा नहीं किया, औ़रत को इस बात की इजाज़त नहीं कि शौहर को नाराज़ रहने दे तो खुद शौहर से उसका नाराज़ होना और मुँह फुलाना और ताल्लुक़ तोड़ना कैसे दुरुस्त हो सकता है। कुछ

औरतें शौहर से नाराज़ होकर मुँह फुलाए रहती हैं और ज़िक्र, इबादत में मशगूल रहती हैं ऐसी औरतों की इबादत भी क़ुबूल नहीं, इबादत लटकी रहती है। असल में यह मुँह फुलाना शौहर की किसी बात से नाराज़ होने की वजह से होता है, अगर ऐसी बात है तो बर्दाश्त करे, संजीदगी और नर्मी से समझा दे कि आपकी यह बात बेहतर नहीं तकलीफ़ देने वाली है। नाराज़ होकर मुँह न फुलाए कि घर का निज़ाम ख़राब होता है। यह खुदा को नाराज़ करने वाले काम हैं। इन बुरे आमाल को छोड़कर जन्नत वाले आमाल इख़्तियार करो, नफ़्स की बातों को छोड़कर जन्नत की राह हमवार करो, अगर उसकी हरकत ज़ालिमाना नामुनासिब भी हो तो क्या करोगी ज़िन्दगी गुज़ारनी है, बर्दाश्त कर लो, तुम सवाबे अज़ीम पाओगी, जन्नत की मुस्तहिक़ होगी, वह ज़ालिम अपने ज़ुल्म की सज़ा इसी दुनिया में या आख़िरत में पाएगा और सब्र की वजह से अल्लाह ज़ालिम को ज़ुल्म से भी रोक देता है और सब्र करने वाले की ग़ैबी मदद होती हैं। اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّابِرِيْنَ अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

शौहर की ग़ैर मौजूदगी में ज़ीनत (सिंगार) न करे

٥٢- عَنْ اَسْمَآءَ بِنْتِ اَبِیْ بَكْرٍ اَنَّهَا زَارَتْ اُخْتَهَا عَآئِشَةَ وَالزُّبَيْرُ غَآئِبٌ فَدَخَلَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَجَدَ رِيْحَ طِيْبٍ فَقَالَ مَا عَلَى الْمَرْاَةِ اَنْ لَّا تَتَطَيَّبَ وَزَوْجُهَا غَآئِبٌ ط (مجمع الزوائد، جلد ٨، صفحہ ٣١٧)

तर्जुमाः– हज़रत असमा रज़ि० कहती हैं कि मैं अपनी बहन आयशा रज़ि० से मुलाक़ात को गई और हमारे शौहर ज़ुबैर

रज़ि० कहीं बाहर थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए और आप सल्ल० ने खुश्बू का असर महसूस किया तो फ़रमाया, औरत के लिए ज़रूरी है कि जब उसका शौहर मौजूद न हो तो वह खुश्बू (संजने संवरने की चीज़ें) न लगाए।

फ़ायदाः— ख़्याल रहे कि औरत के लिए सजना संवरना शौहर के वास्ते है ताकि दोनों के दर्मियान लगाव मुहब्बत एक दूसरे की तरफ़ मेलान रहे, ताकि अच्छी ज़िन्दगी क़ायम रहे, और एक दूसरे की ख़्वाहिश पाकदामनी के साथ पूरी हो और नज़र और दिल की हिफ़ाज़त हो, इसलिए शौहर के अलावा के लिए सजना संवरना हराम है।

अफ़सोस है कि औरतें घर में तो मैली कुचैली बग़ैर सजे संवरे रहती हैं और जब वे बाहर निकलती हैं तो बन संवर कर चेहरा बनाकर निकलती हैं। ऐसा क्यों है? यह सिंगार ग़ैर के लिए नहीं तो और क्या है। यही मना है यह ऐसा ही है जैसे कि दूसरों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए हो।

मुस्लिम घरानों में यह बुरी आदत ग़ैर मुस्लिमों से आयी है। उनके यहां न तो पर्दा है, न हराम व हलाल। उनका तो तरीक़ा है कि हुस्न और फ़ैशन की नुमाइश से दूसरे मुतवज्जेह हों। इस्लाम में तो यह ज़िना के हुक्म में है, शौहर न रहे तो मैली कुचैली तो न रहो मगर सिंगार न करो।

शौहर से बेपरवाही अच्छी बात नहीं

٥٣– عَنْ حُصَيْنِ بْنِ مُحْصِنٍ اَنَّهٗ قَالَ حَدَّثَنِیْ عَمَّتِیْ اَنَّهَا اَتَتِ النَّبِیَّ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَتْهُ عَنْ شَيْءٍ فَقَالَ اَذَاتَ زَوْجٍ فَقَالَتْ نَعَمْ
قَالَ كَيْفَ اَنْتِ لَهُ قَالَتْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لَا اٰلُوْهُ فَقَالَ اَحْسِنِىْ فَاِنَّهُ جَنَّتُكِ
وَنَارُكِ ط (بیہقی فی الشعب، جلد ٦، صفحہ ٤١٨)

तर्जुमाः— हुसैन रज़ि० की फूफी से रिवायत है कि वह रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयीं और उनसे कुछ पूछा तो आप सल्ल० ने उनसे मालूम किया कि क्या वह शौहर वाली (शादी शुदा) हैं। उन्होंने कहा, हाँ! आप सल्ल० ने उनसे पूछा, तुम्हारा उनके साथ क्या बर्ताव है? कहा, मुझे उनकी कोई परवाह नहीं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, उनके साथ अच्छा बर्ताव करो, वह तुम्हारी जन्नत या जहन्नम हैं।

फ़ायदाः— इस हदीसे पाक में ज़िक्र है कि उस औरत के यह कहने पर कि मुझे शौहर की कोई परवाह नहीं, आप सल्ल० ने फ़रमायाः उनके साथ अच्छा बर्ताव करो, वह तुम्हारे लिए जन्नत जाने का ज़रिया या जहन्नम जाने का ज़रिया है। शौहर से बेपरवाही का मतलब यह है कि उसकी कोई फ़िक्र न करे। किस हाल में है, क्या ज़रूरत है। न उनके खाने की फ़िक्र, न उनके कपड़ों की सफ़ाई की फ़िक्र, न कोई आराम पहुंचाने की फ़िक्र, न बीमारी की सूरत में उनकी तीमारदारी का ख़्याल, न कपड़े की पाकी नापाकी का ख़्याल, कभी समझ में आया तो कर दिया वर्ना छोड़ दिया। यह बेपरवाही है जो बीवी के हक़ के ख़िलाफ़ है। कुछ घरानों में देखा गया है कि मर्द को सुबह सुबह चाय या गर्म पानी की दवा के लिए ज़रूरत हुई तो बीवी सोई रही और मर्द ने काम किया। यह बेपरवाही है, यही बेपरवाही और ख़िद्मत से बचना जहन्नम की वजह है। आज शौहर की ख़िदमत कर लो, उसकी राहत व आराम और ज़रूरत की परवाह

कर लो, कल जन्नत के मज़े लूटो।

शौहर की नाशुक्री से बचो

٥٤– عَنْ اَسْمَاءَ قَالَتْ مَرَّبِنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ فِىْ نِسْوَةٍ فَسَلَّمَ عَلَيْنَا وَقَالَ اِيَّاكُنَّ وَكُفْرَا لْمُنْعِمِيْنَ فَقُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا كُفْرَا لْمُنْعِمِيْنَ قَالَ لَعَلَّ اِحْدَاكُنَّ أَنْ تَطُوْلَ بَيْنَ اَبَوَيْهَا وَتَفْسَسُ فَيَرْزُقَهَا اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ زَوْجًا وَّيَرْزُقَهَا مِنْهُ مَالاً وَّوَلَدًا فَتَغْضِبَ الْغَضْبَةَ فَرَاحَتْ تَقُوْلُ مَا رَأَيْتُ مِنْهُ يَوْمًا خَيْرًاط

(مجمع الزوائد، کنز العمال، جلد١٦، صفحہ٣٩٧، مسند احمد، الفتح الربانی، جلد١٦، صفحہ٢٣٠)

तर्जुमाः— हज़रत असमा रज़ि० फ़रमाती हैं, हम औरतों की जमाअ़त के पास से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम गुज़रे तो आप सल्ल० ने हमें सलाम किया और आप सल्ल० ने फ़रमाया, ख़बरदार! एहसान करने वाले की नाशुक्री से बचो, हमने कहा, किस एहसान करने वाले की नाशुक्री से तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम एक मुद्दत तक माँ-बाप की मातहती में ज़िन्दगी गुज़ारती हो, फ़िर खुदा-ए पाक शौहर (शादी) से नवाज़ता है उससे तुम्हें औलाद का और माली फ़ायदा होता है (तुम पर ज़रूरतन और रिआ़यतन व मुहब्बतन माल ख़र्च करता है) फिर जब तुम उससे नाराज़ (किसी वजह से) हो जाती हो तो कह देती हो (ताना देते हुए) कि कभी हमने इन से भलाई अच्छाई नहीं पाई।

फ़ायदाः— इन्सान ख़ासकर खुदा-ए पाक पर ईमान व यक़ीन रखने वाले को चाहिए कि खुदा की तक़सीम और उसकी दी हुई

नेमत व दौलत पर चाहे वह किसी भी दर्जे में हो, मर्ज़ी और ख़्वाहिश के मुताबिक़ चाहे न हो मगर राज़ी रहे। मालिक ख़ालिक़ ने जिस तरह रखा है उसका शुक्र अदा करती रहे। शौहर जैसा भी मुक़द्दर से मिला उस पर राज़ी रहे, कमी कोताही की शिकायत न करे। अगर कोई रंज व तकलीफ़ की बात हो जाए तो पिछले एहसानात और अच्छे बर्ताव को ठुकरा कर नाशुक्री का जुमला इस्तेमाल न करे कि इससे औरत की आक़िबत (अंजाम) ख़राब होती है।

घर में रहकर शौहर की ख़िदमत तमाम अफ़ज़ल तरीन (बहुत ही बेहतर) आमाल से बढ़कर है

55. असमा बिन्ते यज़ीद अंसारिया का वाक़िआ है वह नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िद्मत में आई और हज़रात सहाबा रज़ि० तशरीफ़ फ़रमा थे। कहा, मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा, मैं औरतों की तरफ़ से क़ासिद होकर आई हूँ, मेरी जान आप पर फ़िदा, मशरिक़ व मग़रिब की किसी औरत को भी मेरे आने की इत्तिला नहीं, न किसी ने सुना मगर जो हमारी तरह राय (ज़ेहन) रखती है, आपको अल्लाह तआला ने हक़ के साथ मर्दों और औरतों की तरफ़ भेजा है, हम आप पर और जो आप लेकर आए हैं उस पर यक़ीन लाए हम औरतों की जमाअत घरों में बन्द बैठी मर्दों की ज़रूरतों को पूरा करती हैं, हमल और औलाद के बोझ को बर्दाश्त करती हैं और मर्द हज़रात जुमा, जमाअत, मरीज़ों की इयादत, जनाज़े में हाज़िरी और हज पर हज करने और उससे अफ़ज़ल ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करने की वजह से फ़ज़ीलत (ज़्यादा सवाब) पाते

हैं। ये मर्द हज़रात जब हज, उमरा, और अल्लाह की राह में जाते हैं तो हम उनके माल की हिफ़ाज़त करते हैं, उनके लिए कपड़े तैयार करते हैं और उनके बच्चों की परवरिश करते हैं तो ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० हम कैसे सवाब में शरीक होंगी। (यानी बराबर होंगी कि वे तो इन आमाल से सवाब में बढ़ गये) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपना रुख़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तरफ़ किया और कहाः तुमने इस औ़रत के सवाल को सुना, दीन के बारे में कितना अच्छा सवाल किया। हज़रात सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमें नहीं मालूम कि इस औ़रत की तरह कोई इन बातों की मालूमात रखती होगी, फिर आपने औ़रत की तरफ़ रुख़ किया और फ़रमाया, जाओ और तुम अपने अ़लावा तमाम औ़रतों को बता दो कि तुम औ़रतों का शौहरों के साथ अच्छा बर्ताव और उनकी ख़ुशियों का ख़्याल रखना, उनकी बातों का उनके मुवाफ़िक़ मानना उन सब आमाल (जो मर्द कर रहे हैं) के बराबर है। तो वह औ़रत मारे ख़ुशी के तहलील व तकबीर (ला इला-ह इल्लल्लाहु और अल्लाहु अकबर) कहती हुई चली गई।

(बैहक़ी फ़िश्शुअ़ब, हिस्सा 6, पेज 421)

औ़रतों को मर्द के कपड़े धोना, साफ़ करना सुन्नत है

٥٦– قَالَتْ عَآئِشَةُ كُنْتُ اَغْسِلُهُ مِنْ ثَوْبِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَخْرُجُ اِلَى الصَّلٰوةِ ط (بخاری،جلد۱،صفحہ۳۶)

तर्जुमाः— हज़रत आ़यशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं नबी-ए पाक

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कपड़े से निजासत यानी गंदगी वगैरह धोती थी, फिर आप सल्ल० (उसे पहनकर) नमाज़ पढ़ने तशरीफ़ ले जाते।

फ़ायदा:— औरतों और मर्दों के दर्मियान अच्छा बर्ताव और बेहतर ताल्लुक़ात को बाक़ी रखने के लिए एक दूसरे का ख़्याल और एक दूसरे की मदद और आपस में राहत का पहुंचाना ज़रूरी है। अगर ये चीज़ें न हों तो एक दूसरे के दर्मियान मुहब्बत का बाक़ी रहना मुश्किल हो जाता है फिर हर शख़्स अपनी ग़रज़ (मक़सद) का ताबेअ़ हो जाता है।

आपसी ताल्लुक़ात को बेहतर बनाने के लिए यह कर दिया गया है कि मर्द औरत की तमाम ज़रूरतों को पूरा करे, उसके घरेलू ख़र्चे का इन्तिज़ाम करे, औरत घरेलू काम और शौहर की ख़िद्मत करे और आराम व राहत पहुंचाये ताकि वह सहूलत के साथ मआशी किफ़ालत (गुज़ारे का सामान) कर सके।

इस ख़िद्मत में मर्द की सहूलत के लिए कपड़े धोना भी है। लेकिन इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं कि औरत धोबी की तरह लगी रहे, बल्कि मौक़ा और माहौल और सेहत व घरेलू काम की रिआयत करते हुए शौहर के कपड़ों की सफ़ाई का भी ख़्याल रखे। दोनों जहाँ के सरदार सल्ल० की बीवी अपने शौहर के कपड़े पाक और साफ़ कर देती हैं तो उससे और क्या फ़ज़ीलत की बात होगी कि हज़रत आयशा रज़ि० की पाक सीरत व आदत पर अमल करने वाली होगी।

औरत को शौहर के गुस्ल, वुज़ू और इस्तिन्जा वग़ैरह के लिए पानी का इंतिज़ाम रखना सुन्नत है

٥٧– عَنْ عَآئِشَةَ قَالَتْ كُنْتُ اَضَعُ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَةَ اٰنِيَةٍ مِّنَ اللَّيْلِ مُخَمَّرَةً اِنَآءً لِّطُهُوْرِهٖ وَاِنَآءً لِّسِوَاكِهٖ وَاِنَآءً لِّشَرَابِهٖ ط

(ابن ماجہ صفحہ ۳۰)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं रात में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तीन बर्तनों का इन्तिज़ाम रखती थी। 1. पानी का एक बर्तन। (जिससे आप सल्ल० इस्तिन्जा, वुज़ू वग़ैरह करें) 2. मिस्वाक का। 3. पीने के पानी का एक बर्तन।

फ़ायदाः— औरतों के ज़िम्मे घरेलू काम है, और इसी घरेलू काम में शौहर की सहूलतों का इन्तिज़ाम भी है, शौहर कभी गुज़ारे के लिए काम में मशग़ूल होने की वजह से थका मांदा होता है। इसलिए राहत का ख़्याल औरतों के ज़िम्मे एक अख़्लाक़ी फ़रीज़ा है। औरतों की यह ख़िद्मत सवाबे अज़ीम की वजह है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिस्वाक के (जो आप सल्ल० और हज़रात अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है) आदी थे, उसका इन्तिज़ाम हज़रत आयशा रज़ि० रखती थीं। रात में ख़ासकर गर्म मुल्क और मौसम में प्यास लगती है, इसलिए पीने का पानी रख देती थीं। इसी तरह आप सल्ल० तहज्जुद के आदी थे, उस वक़्त के लिए वुज़ू और इस्तिन्जे का पानी रख दिया करती थीं, इस से

मालूम हुआ कि ज़रूरत से पहले पानी वग़ैरह का इन्तिज़ाम कर ले। ऐसा न हो कि रात को ज़रूरत हो वक़्त पर पानी न मिले, या पानी दूर हो, तो रात में कहाँ किससे मांगता फिरेगा। इसलिए बेहतर यह है कि इस्तिन्जे वग़ैरह के पानी का सोने से पहले ही इन्तिज़ाम करे और औरतों को इन कामों का इन्तिज़ाम रखना चाहिए।

शौहर पर औरत का क्या हक़ है?

٥٨- عَنْ حَكِيْمِ بْنِ مُعَاوِيَةَ الْقُشَيْرِيْ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا حَقُّ زَوْجَةِ اَحَدِنَا عَلَيْهِ قَالَ اَنْ تُطْعِمَهَآ اِذَا طَعِمْتَ وَتَكْسُوْهَآ اِذَا اكْتَسَيْتَ وَلَا تَضْرِبِ الْوَجْهَ وَلَا تُقَبِّحْ وَلَا تَهْجُرْ اِلَّا فِى الْبَيْتِ ؕ

(مشکوٰۃ، صفحہ ۲۸۱)

तर्जुमाः— मुआविया क़ुशैरी की रिवायत में है कि उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मर्दों पर औरतों का क्या हक़ है? आप सल्ल० ने फ़रमाया, जब और जो तुम खाओ उसे खिलाओ, जो तुम पहनो उसे पहनाओ, उसके चेहरे पर मत मारो, और उसे गाली मत दो, और उसे घर के अलावा किसी दूसरी जगह न छोड़ो।

عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْاَحْوَصِ قَالَ (رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ).. وَحَقُّهُنَّ عَلَيْكُمْ اَنْ تُحْسِنُوْآ اِلَيْهِنَّ فِىْ كِسْوَتِهِنَّ وَطَعَامِهِنَّ ؕ

(ابن ماجہ، ترغیب، جلد ۳، صفحہ ۵۱)

तर्जुमाः— सुलैमान बिन अम्र बिन अल्-अह्वस की रिवायत में है कि (आख़री हज के मौक़े पर तक़रीर फ़रमाते हुए) आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, इन औरतों का तुम्हारे ऊपर यह हक़ है कि तुम इनके लिए खाने और कपड़े का अच्छी तरह ख़्याल रखो।

फ़ायदाः— ख़्याल रहे कि सिर्फ़ औरतों पर ही मर्दों के हुक़ूक़ नहीं बल्कि मर्दों पर भी औरतों के हुक़ूक़ हैं कि वे उनके आराम, राहत और इकराम का ख़्याल रखें। हर वक़्त उनसे जानवरों की तरह काम लेना, बिला वजह डांट डपट करना, हमेशा सख़्त सुस्त कहना, बात बात पर उनको ताना देना, उनके ख़ानदान को बुरा भला कहना, मामूली ग़लती पर ग़ुस्सा हो जाना, ख़ुद बाहर होटलों में चाय ख़ानों में मज़े उड़ाना, उसे घर में मामूली गुज़ारे पर छोड़ देना, ख़ुद तरह तरह के कपड़े पहनना और उस बेचारी को मामूली कपड़े देना, ये काम शरअन ठीक नहीं। हदीसे पाक में ताकीद है अच्छे कपड़ों और अच्छे खाने का इन्तिज़ाम करना जो उसकी गुंजाइश के मुवाफ़िक़ हो। मालूम होना चाहिए कि औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है, इसलिए उसके मिज़ाज में कुछ टेढ़पन रहता है, इसलिए मर्दों को चाहिए कि जहां उनसे बहुत से फ़ायदे मुताल्लिक़ हैं वहाँ उनकी टेढ़ मिज़ाजी को अगर हो जाए तो बर्दाशत करें।

हमल से लेकर दूध पिलाने तक का सवाब

٥٩– عَنْ اَنَسٍ قَالَ... اَفَمَا تَرْضٰى اِحْدٰكُنَّ اَنَّهَآ اِذَا كَانَتْ حَامِلاً مِنْ زَوْجِهَا وَهُوَ عَنْهَا رَاضٍ اِنَّ لَهَا مِثْلَ اَجْرِ الصَّآئِمِ الْقَآئِمِ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَاِذَآ اَصَابَهَا الطَّلَقُ لَمْ يَعْلَمْ اَهْلُ ا[illegible] ءِ وَاَهْلُ الْاَرْضِ مَآ اَخْفٰى

لَهَا مِنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ فَاِذَا وَضَعَتْ لَمْ يَخْرُجْ مِنْهَا جُرْعَةٌ مِنْ لَبَنِهَا وَلَمْ يَمُصَّ مَصَّةً اِلَّا كَانَ لَهَا لِكُلِّ جُرْعَةٍ وَلِكُلِّ مَصَّةٍ حَسَنَةٌ فَاِنْ اَسْهَرَهَا لَيْلَةً كَانَ لَهَا مِثْلُ اَجْرِ سَبْعِيْنَ رَقَبَةً تُعْتِقُهُنَّ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ سَلَامَةً يَعْنِىْ لِمَنْ اَعْنِىْ بِهٰذَا الْمُتَنَعِّمَاتِ الصَّالِحَاتِ الْمُطِيْعَاتِ اللَّاتِىْ لَا يَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ

(مجمع جلد ۴ صفحہ ۳۰۸، طبرانی)

तर्जुमा:– हज़रत अनस रज़ि० से (एक लम्बी) रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम में से कोई इस बात से खुश नहीं है कि जब वह अपने शौहर से हामिला हो, इस हाल में कि वह उससे राज़ी हो तो उसको हमल का इतना सवाब मिलता है जितना कि उस रोज़ेदार को जो खुदा की राह में जिहाद में रोज़ा रख रहा हो और जब उसे दर्दे-ज़ेह (बच्चा जनने की तकलीफ़) होता है तो न आसमान वालों को न ज़मीन वालों को इल्म होता है कि उसकी आँखों की ठंडक के लिए क्या छुपा रखा गया है और जब वह बच्चा जन देती है तो उसके दूध का कोई क़त्रा नहीं निकलता और उसका बच्चा एक मर्तबा चूसता नहीं मगर यह कि उसे हर क़त्रे और घूंट पर एक नेकी मिलती है और अगर कोई रात को (बच्चे की वजह से) जागे तो उसे सत्तर सही व सालिम गुलाम के अल्लाह की राह में आज़ाद करने का सवाब मिलता है। यह उन खुश नसीब औरतों के लिए है जो नेक हैं, फ़रमांबरदार हैं जो अपने शौहरों की नाशुक्री नहीं करती हैं।

हमल से लेकर बच्चा होने तक का अज़ीम सवाब

٦٠- عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَحْسَبُهُ رَفَعَهُ قَالَ الْمَرْأَةُ فِیْ حَمْلِهَآ اِلٰی وَضْعِهَآ اِلٰی قَضَآئِهَا کَالْمُرَابِطِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَاِنْ مَّاتَتْ فِیْمَا بَیْنَ ذٰلِكَ فَلَهَآ اَجْرُ شَهِیْدٍ ط (کنز، جلد۱۶، صفحہ۴۱۱، مجمع، جلد۴، صفحہ۳۰۸، مطالب عالیہ، صفحہ۱۷۴۲)

तर्जुमाः– हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औरत को हमल से लेकर बच्चा पैदा होने तक इसका इतना सवाब मिलता है जितना कि ख़ुदा के रास्ते मे सरहद की हिफ़ाज़त करने वाले को सवाब मिलता है। अगर इसी दौरान उसका इन्तिक़ाल हो जाए तो उसको शहीद का सवाब मिलता है।

फ़ायदाः– औरत को अल्लाह तआला ने ख़ुसूसी तौर पर बच्चों की पैदाइश, उनकी तर्बियत और देखभाल और परवरिश के लिए पैदा किया है उनके पेट से अंबिया-ए-किराम, औलिया-ए-इज़ाम, अक़्ताब, अब्दाल और ख़ुदा के बरगुज़ीदा बन्दे पैदा होते हैं। कितनी बड़ी अज़ीम नेमत व दौलत है। अल्लाह तआला ने औरतों को माँ बनने का शौक़ और जज़्बा भी दिया है। और उसकी ज़र्रा नवाज़ी कि इसमें सवाब भी रखा है। आम तौर पर औरतों को ख़ासकर आजकल के इस ज़माने में हमल से लेकर बच्चे की पैदाइश तक औरतों को बड़ी तकलीफ़ होती है, आराम, राहत ख़त्म हो जाती है, इसलिए हमल से लेकर बच्चे की पैदाइश तक जिहाद में सरहद की हिफ़ाज़त का जो अज़ीम सवाब है वह मिलता है। किस क़द्र अल्लाह का फ़ज़्ल है कि दुनियावी नेमत भी और इस क़द्र

सवाब भी। अगर हमूल के दौरान या बच्चे की पैदाइश में इंतिक़ाल हो जाए तो शहादत का सवाब पाती है। औरतों पर जिहाद नहीं तो अल्लाह ने जिहाद का सवाब इन कामों में रख दिया। आजकल कुछ औरतें बच्चों से घबराती हैं, उनको झंझट और मशक़्क़त की वजह समझती हैं, वे दुनिया के फ़ायदों और आख़िरत के इस सवाब को देखें।

दूध पिलाने का सवाब

٦١– عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ .... قَالَ فَاِذَا وَضَعَتْ لَمْ يَخْرُجْ مِنْهَا جُرْعَةٌ مِّنْ لَّبَنِهَا وَلَمْ يَمُصَّ مَصَّةً اِلَّا كَانَ لَهَا لِكُلِّ جُرْعَةٍ وَّلِكُلِّ مَصَّةٍ حَسَنَةٌ فَاِنْ اَسْهَرَهَا لَيْلَةً كَانَ لَهَا مِثْلُ اَجْرِ سَبْعِيْنَ رَقَبَةً تُعْتِقُهُنَّ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ سَلَامَةً ط (مختصراً،مجمع،صفحہ ۳۰۸)

तर्जुमा:– हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रत जब बच्चा जन दे तो उसके दूध का जो क़त्‌रा निकलता है और जब बच्चा दूध चूसता है तो हर घूंट और हर क़त्‌रे पर उसे नेकी मिलती है और जब उसकी वजह से रात में जागती है तो उसे सत्तर सही व सालिम ग़ुलाम अल्लाह तआ़ला की राह में आज़ाद करने का सवाब मिलता है।

फ़ायदा:– ख़्याल रहे कि बच्चों की परवरिश और उनकी अच्छी तर्बियत सद्क़ा-ए-जारिया है और दीन व दुनिया में अच्छे नतीजे की वजह है। इस्लाम के बुलंद कामों में से है कि परवरिश जो माँ का एक फ़ित्‌री तक़ाज़ा है जिसके करने पर वह मुहब्बतन मजबूर है।

इसमें भी उसे सवाब दिया गया है, दूध के हर क़त्‌रे पर एक नेकी, और उसकी वजह से जागने पर गुलाम आज़ाद करने का सवाब, किस क़द्र खुदा का करम है।

नई तहज़ीब से मुतास्सिर होकर कुछ औ़रतें दूध पिलाने को सेहत के ऐतिबार से नुक़सानदेह समझती हैं, यह ग़लत है। फ़ितरते खुदावन्दी ने इस ख़ासियत से औ़रतों को नवाज़ा है। उसके सीने के दूध से बच्चे की ज़िन्दगी जुड़ी है तो दूध पिलाना कैसे नुक़सान दे सकता है। तिब्बी ऐतिबार से तो इससे औ़रतों की सेहत और अच्छी होती है। और बच्चे की सेहत भी अच्छी रहती है। माँ के दूध में जो सेहत है वह दूसरे दूध में नहीं। न पिलाना दोनों को नुक़सान देता है। खुदा के वास्ते नई तहज़ीब और आज़ाद औ़रतों का तरीक़ा इख़्तियार न करो। दूध पिलाओ, शरीअ़त का हुक्म समझकर पिलाओ सवाब पाओगी।

बच्चा जनने वाली काली औ़रत बेहतर है ख़ूबसूरत बाँझ से

٦٢– عَنْ سَعِيْدِ بْنِ يَسَارٍ مُرْسَلاً قَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرُ نِسَآءِ كُمُ الْوَلُوْدُ الْوَدُوْدُ ط (جامع صغیر، بیہقی، اتحاف)

तर्जुमाः– हज़रत सईद बिन यसार रज़ि० से यह रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी औ़रतों में बेहतर वह है जो ख़ूब मुहब्बत करने वाली, कसरत से औलाद जनने वाली हो।

(जामे सग़ीर, बैहक़ी, हिस्सा 7, पेज 2, इत्तिहाफ़, पेज 297)

عَنْ حُرْمَلَةَ ابْنِ النُّعْمَانِ ... اِمْرَأَةٌ وَّلُوْدٌ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى مِنِ امْرَأَةٍ حَسْنَاءَ لَا تَلِدُ اِنِّيْ مُكَاثِرٌ بِكُمُ الْاُمَمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (کنز العمال، جامع صغیر)

तर्जुमाः— हुरमला बिन नौमान से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बच्चा जनने वाली औरत अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्दीदा है, उस औरत से जो ख़ूबसूरत बाँझ हो, मैं क़्यामत के दिन तुम्हारी कसरत से दूसरी उम्मतों पर फ़ख़्र करूंगा।

(कन्ज़ुल उम्माल, जामे सग़ीर, हिस्सा 1, पेज 102)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَرُوا الْحَسْنَاءَ الْعَقِيْمَ وَعَلَيْكُمْ بِالسَّوْدَاءِ الْوَلُوْدِ فَاِنِّيْ مُكَاثِرٌ بِكُمُ الْاُمَمَ

(اتحاف المہرہ، جلد ۲، صفحہ ۳۳۸، ابو یعلی)

तर्जुमाः— हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ूबसूरत बाँझ को छोड़ो और काली बच्चा जनने वाली औरत को इख़्तियार करो कि मैं तुम्हारी कसरत पर फ़ख़्र करुँगा।

عَنْ اَنَسٍ مَرْفُوْعًا ذَرُوا الْحَسْنَاءَ الْعَقِيْمَ وَعَلَيْكُمْ بِالسَّوْدَاءِ

(اتحاف المہرہ، جلد ۷، صفحہ ۳۳۸)

तर्जुमाः— हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि ख़ूबसूरत बाँझ को छोड़ो और काली (जो बच्चा जनने वाली हो) को पसन्द करो।

फ़ायदाः— इन हदीसों मे निकाह की तर्ग़ीब दो चीज़ों को सामने

रखकर दी गई है। 1. शौहर की मुहब्बत। 2. बच्चे ज़्यादा जनने की सलाहियत।

ख़्याल रहे कि औ़रतों के निकाह का हक़ और उनकी शराफ़त और पाकदामनी यह है कि वे अपने शौहर से बहुत ज़्यादा मुहब्बत और ताल्लुक़ रखें। उनकी ख़ुशी व आराम की फ़िक्र में रहें। अगर नाराज़ हो जाएं तो मुँह फुलाकर न बैठ जाएं और ख़ामोश न रहें कि मुहब्बत में ये बातें बर्दाश्त नहीं होतीं। ख़िद्मत, अच्छी बात, अच्छे मामले से उनको ख़ुश करो और राज़ी कर लो।

किसी की फ़रमाँबरदारी और ख़िद्मत में और उसके आराम व राहत की फ़िक्र में मुहब्बत को बुनियाद का दर्जा हासिल है। औ़रत की आशिक़ाना और मुहब्बताना ख़िदमत एक ऐसी चीज़ है कि शौहर कितना ही अक्खड़ दिमाग़ और ज़ालिमाना मिज़ाज का होगा, वह ज़रूर मुतास्सिर होगा। अगर मुहब्बत न होगी तो औ़रत शौहर से मुस्तग़्नी (बेपरवाह) रहेगी जिससे घर का निज़ाम उथल पुथल रहेगा। इसी वजह से ऐसी औ़रत की तर्ग़ीब दी गई, इसी तरह जो औ़रतें ज़्यादा बच्चे जनने वाली होंगी, उसकी बुनियाद भी यही मुहब्बत और फ़रमाँबरदारी है कि शौहर से बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ उसकी बुनियाद है। फिर ऐसी औ़रत ख़ुश क़िस्मत और औ़रत की क़िस्मों में सबसे अफ़्ज़ल है। ऐसी औ़रत के इन्तिख़ाब और फ़ौक़ियत देने का हुक्म है। ख़ूबसूरत बाँझ पर बच्चा जनने वाली काली औ़रत ख़ुदा के नज़्दीक ज़्यादा पसन्दीदा है। नहर बिन हकीम की रिवायत में है कि बच्चा जनने वाली काली औ़रत ख़ूबसूरत औ़रत जो बाँझ हो से बेहतर है। (शरह इहया, हिस्सा 5, पेज 297)

इसी वजह से मअ़क़ल बिन यसार रज़ि० की रिवायत में हुक्म है कि ज़्यादा बच्चे जनने वाली औ़रत से शादी करो कि मैं तुम्हारी

कसरत पर क़्यामत के दिन फ़ख़्र करुंगा, और कसरत बाँझ औ़रत से कहां होगी। औलाद से नस्ल का सिलसिला चलता रहेगा, इससे उम्मत की कसरत होगी, ज़्यादा औलाद इसके लिए हर सूरत में दुनिया व दीन की भलाइयों की वजह होगीं। अगर बच्चा पैदा होकर इन्तिक़ाल कर गया तब भी उसके लिए फ़ायदा है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बच्चा अपने माँ-बाप को जन्नत में खींचकर ले जाएगा। अगर हम्ल गिर गया तब भी फ़ायदे से ख़ाली नहीं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि बच्चा अपनी नाफ़ को खींचते हुए माँ को जन्नत में दाख़िल कराएगा।

(शरह एहया, हिस्सा 5, जिल्द 298)

बच्चा बचपन में इन्तिक़ाल कर गया तो माँ-बाप के हक़ में शफ़ाअ़त करेगा, बड़ी उ़म्र को पहुंचा तो दीन व दुनिया के नफ़े की वजह होगा। नेक औलाद जो नेकी और दुआ़ करेगी उसका सवाब माँ-बाप को पहुंचेगा। ये फ़ायदे बाँझ चाहे ख़ूबसूरत सही उससे कहां हासिल होंगे। हाँ मगर ख़्याल रहे कि शुरू में ही बाँझ औ़रत से शादी न करे, कि औलाद के न होने की नियत अच्छी नहीं। लेकिन इत्तिफ़ाक़ से किसी औ़रत के बच्चे न हों तो उसे छोड़े नहीं कि यह ज़ुल्म है। बेचारी औ़रत का क्या क़ुसूर। तक़दीर पर सब्र व शुक्र करे। दवा और दुआ़ करता रहे। अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से बईद (दूर) नहीं कि कामयाब हो जाए।

औलाद पर मेहरबानी के साथ शौहर की नाफ़रमानी न हो तो जन्नत में

٦٣ــ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِیْ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ

وَسَلَّمَ حَامِلَاتٌ وَّالِدَاتٌ رَّحِيْمَاتٌ بِاَوْلَادِهِنَّ لَوْ لَا مَا يَعْصِيْنَ اَزْوَاجَهُنَّ دَخَلْنَ الْجَنَّةَ

(اتحاف، جلد۵، صفحہ۳۰۱، بیہقی فی الشعب، جلد۲، صفحہ۴۰۹، اتحاف المہرہ، جلد۲، صفحہ۵۲۷)

तर्जुमाः— हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ि० से मरवी है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हमल और विलादत की तकलीफ़ को बर्दाश्त करने वाली, अपने बच्चों पर नर्म मेहरबान शौहर की नाफ़रमानी न करेंगी तो जन्नत में दाख़िल हो जाएंगी।

फ़ायदाः— इस हदीसे पाक में जन्नती औरत की कुछ अहम सिफ़त को बयान किया गया है जिसमें हमूल की हालत की परेशानी भी है इस परेशानी को बर्दाश्त करना और उसे सहना बड़े सवाब की बात है। नई तहज़ीब की औरतें एक दो मर्तबा से ज़्यादा हमूल की मशक़्क़तों को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं होतीं। यह मग़्रिबी लानत का असर है। ऐसी औरत अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को पसन्द है जिससे उम्मत की कसरत हो। इसीलिए आप सल्ल० ने हुक्म दिया है कि ऐसी औरतों से शादी करो जो ज़्यादा बच्चे जनने वाली हों, ज़ाहिर है जो हमूल की परेशानी बच्चों की तर्बियत से भागेगी, उससे औलाद की कसरत कैसे होगी। औलाद की परवरिश में नर्मी और मुहब्बत का मतलब यह है कि बच्चों को ख़ासकर जब वे रोएं और ज़िद करें तो डांट डपट मारपीट से काम न लें, प्यार मुहब्बत से समझा दे, जब प्यार मुहब्बत से काम न चले तब मामूली डांट डपट और हल्की पिटाई से काम लें। हर वक़्त डांट डपट और मारने से बच्चा बेहिस कमज़ोर दिल, ज़िद्दी हो जाता है।

लड़कियों की मुहब्बताना परवरिश जहन्नम से निजात की वजह

٦٤– اِنَّ عَآئِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ جَآئَتْنِى امْرَأَةٌ مَعَهَآ اِبْنَتَانِ لَهَا فَسَأَلَتْنِىْ فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِىْ اِلَّا تَمْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاَعْطَيْتُهَا فَقَسَّمَتْهَا بَيْنَ اِبْنَتَيْهَا ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ فَدَخَلَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَدَّثْتُهُ فَقَالَ مَنْ يُّبْلٰى مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ شَيْئًا فَاَحْسَنَ اِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهٗ سِتْرًا مِّنَ النَّارِ ط (الادب المفرد، صفحہ ١٥)

तर्जुमाः– हज़रत आयशा रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० की पाक बीवी फ़रमाती हैं कि एक औरत आई उसके साथ दो लड़कियाँ थीं उसने सवाल किया, मेरे पास सिवाए एक खजूर के कुछ भी नहीं था, वह मैंने दे दी। उसने दोनों बेटियों को आधी आधी दे दी। फिर खड़ी हुई और चली गई। आप सल्ल० तशरीफ़ लाए तो मैंने आप सल्ल० से बयान किया, आपने फ़रमाया, जिनको इन लड़कियों के ज़रिये आज़माया गया और उसने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया तो ये उसके लिए जहन्नम से निजात की वजह होंगी।

फ़ायदाः– औलाद की परवरिश में सवाब है और जो कुछ औलाद पर शरीअत के ख़िलाफ़ कामों से बचते हुए ख़र्च किया जाता है सवाब है और आख़िरत में इसका सिला (बदला) मिलेगा। मगर लड़कियों की परवरिश और तर्बियत पर हदीसों में खुसूसियत के साथ बहुत सवाब बयान किया गया है। इसकी अहम वजह यह है कि ये तो जब ख़िद्मत के क़ाबिल होंगी तो दूसरों के घर चली जाएंगी,

उनसे किसी माली फ़ायदे की उम्मीद नहीं और लड़के से उम्मीदें जुड़ी रहती हैं। फिर यह कि उसकी परवरिश फिर शादी ब्याह का मस्ला अहम होता है। इस वजह से उसकी परवरिश पर ज़्यादा सवाब है। इस सबक़ की तफ़सील मेरी किताब शुमाइले कुब्रा, हिस्सा 4 के सबक़ 71 में पढ़िए।

आप सल्ल. से भी पहले कौन औरत जन्नत में जाएगी

٦٥– عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا اَوَّلُ مَنْ يَّفْتَحُ بَابَ الْجَنَّةِ اِلَّآ اَنَّهٗ تَاتِى امْرَاَةٌ تُبَادِرُنِىْ فَاَقُوْلُ لَهَا مَالَكِ وَمَنْ اَنْتِ فَتَقُوْلُ اَنَا امْرَاَةٌ قَعَدَتْ عَلٰى اِيْتَامٍ لِّىْ ط

(اتحاف السادہ، جلد۵، صفحہ ۴۰۷، ابویعلیٰ، مجمع الزوائد، جلد۸، صفحہ ۱۶۲)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, सबसे पहले मैं जन्नत का दरवाज़ा खोलूंगा, हाँ मगर यह कि एक औ़रत को मैं देखूंगा कि वह मुझसे भी आगे जा रही होगी, मैं उससे पूछूंगा क्या बात है, तुम कौन हो (कि मुझसे भी पहले जन्नत में जा रही हो) वह कहेगी मैं वह औ़रत हूँ जो (शौहर की वफ़ात के बाद) यतीम बच्चे की परवरिश की वजह से शादी से रुकी रही।

फ़ायदाः– बड़ी अहम क़ाबिले रश्क दौलत है कि ऐसी औ़रत जिसने फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी के साथ इफ़्फ़त का लिहाज़ करते हुए एक बच्चे या बच्ची की परवरिश की ख़ातिर कि यह

बच्चा ठीक से फले फूले जवानी को उसकी तर्बियत में क़ुर्बान कर दिया। शौहर की तरफ़ से पहुंचने वाले ऐश व आराम को उसने क़ुर्बान कर दिया। जन्नत जाने में आप सल्ल० से आगे रहेगी यानी वह बेवा जिसने बच्चे की परवरिश में दूसरी शादी नहीं की, अगर यह औ़रत दूसरी शादी कर लेती तो यह मासूम बच्चा कहाँ जाता, नानी दादी के यहाँ बग़ैर माँ के अच्छी परवरिश न हो पाती, माँ की गोद की परवरिश का आराम कहाँ पाता? अगर शौहर के पास यह बच्चा रहता तो शौहर जिस तरह अपने बच्चे की परवरिश करेगा, सौतेली औलाद की नहीं करेगा, औ़रत भी उस शौहर की औलाद की परवरिश में लगी रहेगी। इस वजह से शादी न करने की यह फ़ज़ीलत होगी, लेकिन बच्चा जब बड़ा हो जाए और अगर लड़की हो तो जब उसकी शादी हो जाए तो शादी करे कि इस ज़मानें में औरत का बग़ैर शादी के रहना फ़ित्ने की वजह है।

वह औ़रत जो जन्नत में आप सल्ल० के पड़ोस में रहेगी

٦٦– عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَنَا وَامْرَأَةٌ سَعْفَاءُ الْخَدَّيْنِ اٰمَتْ مِنْ زَوْجِهَا فَصَبَرَتْ عَلٰى وَلَدِهَا كَهَاتَيْنِ فِى الْجَنَّةِ ط

(اتحاف السادہ، صفحہ ۳۰۷، الادب المفرد، صفحہ ۵۴)

तर्जुमाः– औ़फ बिन मालिक रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, वह औ़रत जो पिचंके हुए गाल वाली होगी, जो बेवा हो गई हो और उसने अपने बच्चों को लेकर सब्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ार ली, जन्नत में मैं और वह औ़रत इस तरह साथ (जिस तरह हाथ की दो उंगलियाँ हैं) होंगे।

फ़ायदाः– मतलब यह है कि ऐसी औ़रत जिसके शौहर का इन्तिक़ाल हो गया और बच्चा गोद में था। उस औ़रत ने बच्चे की परवरिश की ख़ातिर कि अगर शादी होगी तो बच्चे की परवरिश न हो पाएगी, बच्चे के हक़ में अच्छा न होगा, इसलिए कि आम तौर पर दूसरी शादी में पिछली औलाद को क़ुबूल नहीं किया जाता, अगर क़ुबूल कर भी लिया जाता है तो बाद में उस शौहर से औलाद की वजह से और उस औलाद के सौतेले होने की वजह से अच्छी तरह परवरिश नहीं होती और झगड़े का घर हो जाता है। इस वजह से शादी नहीं की, पिचके गाल होने का मतलब यह है कि बेवा होने की वजह से खाने पीने की सहूलत न रही और फ़िक्र की वजह से सेहत गिर गई जिसका असर चेहरे पर पड़ा कि चेहरा मुरझा गया और गाल पिचक गए, यानी बच्चे की परवरिश की वजह से शादी के ऐशो आराम की ज़िन्दगी को क़ुर्बान कर दिया और मुसीबत पर सब्र करती रही तो ऐसी औ़रत का जन्नत में महल मेरे पड़ोस में होगा।

ख़्याल रहे कि यह दर्जा उस वक़्त है जबकि औ़रत अल्लाह के फ़राइज़ को अदा करती हो, फ़ासिक़ा औ़रत बेनमाज़ी का यह दर्जा नहीं, इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि वह हमेशा बग़ैर शादी के रहे, बल्कि बच्चे की परवरिश होकर वह बड़ा हो जाए तो शादी कर लेनी चाहिए कि औ़रत का बग़ैर शादी रहना ख़ासकर इस ज़माने में बहुत फ़ित्ने की वजह है।

औरतों की मस्जिद घर है

٦٧– عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ خَيْرُ مَسَاجِدِ النِّسَآءِ قَعْرُ بُيُوْتِهِنَّ ط (ترغیب،جلد۱،صفحہ۲۲۶)

तर्जुमाः– हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रतों के लिए बेहतरीन मस्जिद घर का कोना है।

फ़ायदाः– मतलब यह है कि औ़रतों को ज़्यादा से ज़्यादा पर्दे का हुक्म है। मस्जिद के मुक़ाबले में घर और फिर घर के मुक़ाबले में घर का कोना ज़्यादा पर्दे की वजह है। इसीलिए औ़रतों के लिए घर का कोना नमाज़ पढ़ने के लिए बेहतरीन जगह है।

सेहन के मुक़ाबले में कमरा बेहतर है

وَعَنْهَا قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةُ الْمَرْأَةِ فِىْ بَيْتِهَا خَيْرٌ مِّنْ صَلَاتِهَا فِىْ حُجْرَتِهَا (ترغیب، صفحہ ۲۲۶)

तर्जुमाः– हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रतों की नमाज़ घर के मुक़ाबले में कमरे में बेहतर है।

फ़ायदाः– मतलब यह है कि बड़ा घर हो तो घर के मुक़ाबले में कमरे में नमाज़ पढ़ना बेहतर है। इसलिए कि उसमें ज़्यादा पर्दा है। इसी तरह सेहन के मुक़ाबले में घर के कमरे में बेहतर है। ग़ौर कीजिए औ़रतों के लिए किस क़द्र पर्दे को मलहूज़ रखा गया है कि घर में जहां ज़्यादा पर्दा हो वहाँ बेहतर है।

औ़रतों के लिए रोशनी के बजाए अंधेरे में नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है

٦٨– عَنْ اَبِى الْاَحْوَصِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ قَالَ إِنَّ أَحَبَّ صَلَاةِ الْمَرْأَةِ إِلَى اللهِ فِيْ أَشَدِّ مَكَانٍ فِيْ بَيْتِهَا ظُلْمَةً ط (ترغیب صفحہ ۲۲۷)

तर्जुमाः– हज़रत अबुल अहवस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरतों की वह नमाज़ खुदा-ए पाक को पसन्दीदा है जो सबसे ज़्यादा अंधेरे कमरे में पढ़ी गई हो।

फ़ायदाः– रोशनी के मुक़ाबले में अंधेरे मे ज़्यादा पर्दा है कि अंधेरे में किसी को वह नज़र ही न आएगी, जहाँ जिस मुक़ाम पर पर्दे का ज़्यादा एहतिमाम होगा उसी क़द्र सवाब ज़्यादा होगा। इसलिए मालूम हुआ कि रोशनी के मुक़ाबले में अंधेरे में नमाज़ पढ़ने का ज़्यादा सवाब है इतना भी अंधेरा न हो कि किसी बच्चे, बच्ची, शौहर व ग़ैर मेह्रम के हाथ पैर लग जाने का अंदेशा हो, बल्कि हल्का उजाला हो, अगर यह डर न हो तो अंधेरे में कोई हर्ज नहीं बल्कि अच्छा है। देखिए! औरतों को किस क़द्र पर्दे की ताकीद है, इबादत में भी ज़्यादा पर्दे की जगह और हालत को फज़ीलत हासिल है, इसके बर-ख़िलाफ़ औरतें मज़ारों में मर्दों की भीड़ में जाती रहती हैं और फिर उसी भीड़ में नमाज़ी औरतें नमाज़ पढ़ती हैं। क्या यह औरतों के लिए दीन की बात है। याद रखो लोग जिसको दीन समझें वह दीन नहीं। दीन वह है जो खुदा और रसूल के कलाम और उसकी तालीम में है। अपना समझा हुआ और बनाया हुआ दीन मरदूद है और जहन्नम में ले जाने वाला है। अफ़सोस कि आदमी नेकी समझ कर करे, और खुदा व रसूल के नज़दीक वह नेकी न हो तो उलटा सवाब के बजाए पकड़।

औरत बाहर निकलती है तो शैतान साथ हो जाता है

٦٩– عَنِ ابْنِ عُمَرَ مَرْفُوْعًا قَالَ الْمَرْأَةُ عَوْرَةٌ وَاِنَّهَآ اِذَا خَرَجَتْ مِنْ بَيْتِهَا اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ وَاِنَّهَا لَتَكُوْنُ اَقْرَبُ اِلَى اللّٰهِ مِنْهَا فِىْ قَعْرِ بَيْتِهَا ط (کنز، جلد۱۶، صفحہ۳۱۱، ترمذی، مجمع الزوائد، صفحہ۳۱۷، طبرانی، اتحاف، جلد۵، صفحہ۳۰۵)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रत के लिए पर्दा है और औ़रत जब घर से निकलती है तो शैतान उसे झांकता है (उसके पीछे हो लेता है) और औ़रत के लिए सबसे ज़्यादा तक़र्रुब (सवाब की बात) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यह है कि वह घर के किसी कोने में रहे (ताकि बाज़ारी शैतान उसे गुनाह में न फंसा सके)।

फ़ायदाः— इस हदीसे पाक में औ़रतों को ताकीद की गई है कि वे पर्दे में रहें, औ़रत के लिए असल चीज़ पर्दा है, बहुत सख़्त ज़रूरत के अ़लावा घर से बाहर क़दम न निकालें कि औ़रत जब भी बाहर निकलती है तो शैतान गुनाह के लिए उसके साथ हो जाते हैं और उससे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ गुनाह कराने पर उन्हें आसानी हो जाती है। कम से कम बेपर्दगी और ग़ैरों से इज़्हारे ज़ीनत का गुनाह तो करा देते हैं। इससे मुराद इन्सानी शैतान, फ़ासिक़, फ़ाजिर आज़ाद, औबाश लोग हो सकते हैं जो औ़रतों के पीछे पड़े रहते हैं। उनका काम सड़कों और चौराहों और चाय ख़ानों में बैठकर यही होता है। बेपर्दा स्कूली औ़रतों और लड़कियों को किस तरह झांकने और देखने का मौक़ा तलाश करते रहते हैं। औ़रतों के लिए कितनी

बेशर्मी और बेहयाई की बात है कि उनकी बेपर्दगी से फ़ायदा उठाकर आँखों से ज़िना करते हैं। और ये औरतें बन संवरकर बाहर निकलकर उन औबाशों को ज़िना का मौक़ा देती हैं। इस गुनाह में दोनों शरीक हैं, जहाँ मर्द गुनाहगार हैं वहाँ उन औरतों और लड़कियों का भी क़ुसूर है, उनको ज़िना की दावत और रग़्बत और अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने का गुनाह मिलता है।

इस वजह से कि ये बग़ैर पर्दे चलती हैं, और अच्छे उ़म्दा भड़कदार कपड़े पहनकर बन संवरकर चलती हैं, ये ऐसा इसलिए करती हैं ताकि लोग उनको तांके झांके, औ़रत की फ़ित्रत यह है कि जब अच्छा कपड़ा और अच्छा चेहरा बनाएगी तो चाहेगी कि उसको लोग देखें, मर्द नहीं तो औ़रत ही सही। बाहर निकलकर वह शौहर के लिए सजती संवरती नहीं बल्कि दूसरे मर्दों के लिए।

"कन्ज़" और "शरह एह्याउल उ़लूम" में है कि औ़रतें जब उ़म्दा और बेहतरीन लिबास पहनती हैं तो शैतान इब्लीस उनको उक्साता है कि दूसरे उसको देखें, नज़ारा करें, इसीलिए वे मामूली और सादा कपड़े पहनकर बाहर नहीं निकलना चाहती हैं। जब औ़रतें बाहर जाएं तो उनको सजने संवरने से और बेहतरीन कपड़े पहनने से रोका जाए। (कन्ज़ुल उ़म्माल, हिस्सा 16, पेज 571)

आप देखिए शादी ब्याह और दूसरे प्रोग्रामों में जाती हैं तो कैसा गुल खिलाती हैं, किस तरह जिस्म और कपड़ों की नुमाइश करती हैं खुद भी गुनाह करती हैं और दूसरों को भी गुनाह में डालती हैं। आम तौर पर शहरों में बल्कि क़स्बों और देहातों में भी अब यह फ़ैशन हो गया है कि कपड़े, सब्ज़ी, तरकारी और दूसरी घर की ज़रूरतों के लिए औ़रतें ही जाती हैं। औ़रतों को जमाअ़त में शरीक होने और मस्जिद जाने से रोका गया है, जो दीन का अहम तरीन

हिस्सा है तो बाज़ारों में जो बदतरीन जगहों में से हैं कैसे खुले आम इजाज़त दी जा सकती है। मर्दों ने दीनी ग़फ़लत या औरतों की आज़ादी की वजह से इजाज़त दे दी है ही छोड़ दिया है कौन उनकी मुख़ालफ़त ले, इस तरह सारी बुराइयों का दरवाज़ा खुल गया जिसको पर्दे का हुक्म नाज़िल करके रोका गया था।

ज़ीनत के साथ घर से बाहर निकलने वाली ख़ुदा के ग़ज़ब (ग़ुस्से) में

٧٠- عَنْ مَيْمُوْنَةَ بِنْتِ سَعْدٍ مَرْفُوْعًا مَا مِنْ اِمْرَأَةٍ تَخْرُجُ فِیْ شُهْرَةٍ مِّنَ الطِّيْبِ فَيَنْظُرُ الرِّجَالُ اِلَيْهَا اِلاَّ لَمْ تَزَلْ فِیْ سَخَطِ اللّٰهِ حَتّٰی تَرْجِعَ اِلٰی بَيْتِهَا ط (طبرانی، کنزالعمال، جلد۲۲، صفحہ۴)

तर्जुमाः— हज़रत मैमूना बिन्ते सअ़्द रज़ि० रिवायत करती हैं कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो औरत भी दिखाने के लिए ख़ुश्बू (वग़ैरह) लगाकर निकले कि लोग उसे देखें तो वह ख़ुदा के ग़ज़ब में दाख़िल हो जाती है जब तक कि वह अपने घर में न आ जाए।

फ़ायदाः— अ़रब में सजने संवरने का एक तरीक़ा ख़ुश्बू का इस्तेमाल भी था, मतलब यह है कि अजनबी मर्दों को दिखाने के लिए बन संवर कर, पाउडर, क्रीम वग़ैरह लगाकर घर से निकलने वाली औरत ख़ुदा के ग़ज़ब में दाख़िल रहती है। बन संवरकर बाहर निकलने का क्या मतलब? यही न कि दूसरे देखें और मुतवज्जेह हों। अगर ग़ैर शादी शुदा है तो उसको फ़ैशन और बन संवरकर निकलना ही जायज़ नहीं और शादी शुदा है तो शौहर के लिए तो

ज़ीनत कर सकती है, दूसरे अजनबी मर्दों के लिए नहीं। आख़िर बाहर सज संवर कर निकलने का क्या मतलब? आज यह फ़ैशन और गुनाह आ़म है। औ़रतों को इसका बिल्कुल एहसास नहीं कि वे किस तरह अपने आप को जहन्नम की आग और खाई में धकेल रही हैं। अगर जन्नत में जाना चाहती हो तो शौहर के लिए उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ सिंगार करो और बाहर निकलो तो बन संवरकर मत निकलो, सादा हालत में निकलो कि लोग तुम्हारी तरफ़ राग़िब ही न हों और तुम्हारी सादगी, लिबास और हुलिये से तुमको देखना ही न चाहें। इस सूरत में तुम उन मर्दों के लिए नज़र के ज़िना और गुनाह से बचाने का ज़रिया बनोगी।

औ़रतों को ज़रूरत पर बाहर निकलने की इजाज़त

٧١– عَنِ ابْنِ عُمَرَ مَرْفُوْعًا لَيْسَ لِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ فِى الْخُرُوْجِ اِلَّا مُضْطَرَّةً ط (طبرانی، کنزالعمال جلد۲۲، صفحہ۷)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रतों को बाहर निकलने की इजाज़त नहीं मगर सख़्त ज़रुरत की बुनियाद पर।

फ़ायदाः– इस हदीसे पाक में बयान किया गया है कि औ़रतों को बाहर निकलने की आ़म इजाज़त नहीं। आजकल औ़रतों का बाहर निकलना बहुत आ़म हो गया है। बग़ैर ज़रूरत या मामूली ज़रूरत से बाहर बाज़ारों में निकलती रहती हैं। ज़रूरत का काम मर्द कर

सकते हैं, मगर फिर भी मर्दों के बजाए खुद से अंजाम देती हैं। मर्दों के काम पर उनको इतमीनान नहीं होता। बग़ैर ज़रूरत बाज़ार का बहाना बनाकर फिरती रहती हैं। यह शराफ़त और इज़्ज़त के ख़िलाफ़ है। दुकान पर जवान मर्दों से नक़ाब खोले बिला झिझक सौदा करती फिरती हैं। पर्दे और औरतों के मुताल्लिक़ ख़ास सामान जवानों से बिला शर्म व हया ख़रीदती रहती हैं। शरीअत ने इससे मना किया है।

हाँ मगर ज़रूरत पर इजाज़त दी गई है। मर्द न हो, मर्दों से मुतअल्लिक़ काम न हो तो औरतें बाहर जा सकती हैं। जैसे डाक्टर के यहां जाना हो, खुद या बच्चों को लेकर और कोई मर्द न हो तो जा सकती हैं। या रिश्तेदारी में कोई बीमार हो, या शादी ब्याह में या मौत या किसी बच्चे की पैदाइश में जाने की ज़रूरत पड़ जाए और मर्द नहीं है तो जा सकती है। इसी तरह और कोई ज़रूरत पड़ जाए और कोई बाहर जाने वाला न हो, न नौकर और लड़का हो तो बाज़ार या ज़रूरत के काम से बाहर जा सकती है। हाँ मगर इन तमाम मौक़ों पर पर्दे का ख़्याल रखे, चेहरे का नक़ाब न खोले कि फ़ित्ने और ख़्वाहिश-ए-नफ़्स का दौर है। ख़ासकर नई उम्र और जवान औरतों के लिए नक़ाब खोलना ठीक नहीं। नक़ाब गिराए हुए मामला करे। गुंजाइश हो तो कोई नौकर वग़ैरह रख लिया करे ताकि इज़्ज़त को बाक़ी रख सके। जिस माल से दीन की हिफ़ाज़त न हो वह माल वबाल है और क़्यामत में गिरफ़्त की वजह है।

ज़रूरत पर बाहर निकलने की इजाज़त और उसका तरीक़ा

٧٢– عَنْ عَآئِشَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا... وَھُوَ یَقُوْلُ قَدْ اَذِنَ اللّٰہُ لَکُنَّ اَنْ تَخْرُجْنَ بِحَوَآئِجِکُنَّ ط (بخاری، جلد۲، صفحہ ۷۸۸)

तर्जुमाः– हज़रत आ़यशा रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदावन्द-ए-क़ुद्दूस ने तुम औरतों को इजाज़त दी है कि अपनी ज़रूरतों में घर से बाहर जा सकती हो।

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि औ़रतों पर इतनी तंगी नहीं कि वे किसी भी ज़रूरत से बाहर जा ही नहीं सकतीं। ज़रूरत की बुनियाद पर घर से बाहर जा सकती हैं। जैसे रिश्तेदारों की शादी में, मौत, पैदाइश में, बीमारों को देखने, रिश्तेदारों और माँ बाप से मिलने के लिए, हाँ मगर इन कामों में शरई पर्दा और शौहर की इजाज़त ज़रूरी है और यह कि अकेले न जाए, शौहर या किसी मेहरम मर्द (जिससे निकाह हराम हो) को साथ ले ले और अगर पास ही के इलाक़े में जाना हो और शौहर या मेहरम मर्द न हो तो किसी छोटे बच्चे ही को साथ ले ले ताकि औबाश लोग अकेली समझकर कोई शराफ़त के ख़िलाफ़ मामला न करें। नई उ़म्र की लड़कियों का अकेले निकलना और जाना फ़ित्ने की वजह से ठीक नहीं है।

आजकल की आज़ाद लड़कियाँ और औ़रतें जब चाहा जिस तरह चाहा माँ बाप और शौहर की बग़ैर इजाज़त चल देती हैं, यह मना है। किसी को अपने साथ रखना ज़रूरी है, ताकि नफ़्स और शैतान को मौक़ा न मिले, ख़्याल रहे कि घर से बाहर जाने के वक़्त सजना

संवरना दुरुस्त नहीं। सादा निकलें। "मजलिसुल् अबरार" पेज 71 में है, इब्ने हुमाम ने कहा, औरतों को उस वक़्त बाहर निकलने की इजाज़त है जबकि बनाव सिंगार न हो।

औरतें रास्ते में किस तरह चलें

٧٣– عَنِ ابْنِ عُمَرَ مَرْفُوْعًا لَّيْسَ لِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ اِلَّا مُضْطَرَّةٌ وَّلَيْسَ لَهُنَّ نَصِيْبٌ فِى الطَّرْفِ اِلَّا الْحَوَاشِىْ ط (طبرانی، کنز العمال، جلد۲۲، صفحہ۷)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उमर रज़ि० नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, औरतों को निकलने की इजाज़त नहीं, हाँ मगर यह कि बहुत सख़्त ज़रूरत पेश आ जाए और वे रास्ते के किनारे से चलें।

फ़ायदाः– इस हदीसे पाक में ज़रूरत पर घर से बाहर चलने का तरीक़ा ज़िक्र किया गया है कि रास्ते के बीच में न चलें। इसलिए कि उसमें अकसर तेज़ सवारियाँ और मर्द ज़्यादा चलते हैं। मर्दों के साथ चलने से बचने के लिए किनारे पर एक तरफ़ होकर चलें। क्योंकि कभी कभी बदन से लगकर और धक्के वग़ैरह की भी नौबत आ जाती है।

इसी तरह सवारियों से टकराने और हादसे का भी ख़तरा रहता है और किनारे पर चलने में हर तरह आफ़ियत व एहतियात और पर्दा भी ज़्यादा है इसलिए शरीअत की तालीम है कि औरतें किनारे पर चलें।

ऐ हमारी माओ और बहनो! पहली बात तो यह कि बग़ैर ज़रूरत सड़कों और बाज़ारों में मत निकलो। दिल बहलाने के लिए किसी

नेक औ़रत के घर चली जाओ अगर निकलो तो सड़क के किनारे किनारे चलो। अपनी शराफ़त, हया, इज़्ज़त को बाक़ी रखो।

औ़रतों को चाहिए कि रास्ते के किनारे पर चलें

٧٤– عَنْ اَبِیْ اُسَیْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَھُوَ خَارِجٌ مِّنَ الْمَسْجِدِ وَقَدِ اخْتَلَطَ الرِّجَالُ مَعَ النِّسَآءِ فِی الطَّرِیْقِ فَقَالَ اِسْتَأْخِرْنَ فَلَیْسَ لَکُنَّ اَنْ تَحْقُقْنَ الطَّرِیْقَ عَلَیْکُنَّ بِحَافَاتِ الطَّرِیْقِ ط

(ابوداؤد، صفحہ ۷۱۲)

तर्जुमाः– हज़रत अबू उसैद रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिद से बाहर तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप सल्ल० ने मर्दों और औ़रतों को एक दूसरे के रास्ते में मिलकर चलते देखा तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, औ़रतें पीछें रहें, तुमको बीच रास्ते में चलने की इजाज़त नहीं। तुम पर लाज़िम है कि रास्ते के किनारे से चलो, (तो औ़रतें दीवार से बिल्कुल मिलकर चलने लगीं।)

फ़ायदाः– औ़रतों का मर्दों से मिलना मना है। रास्ते में अकसर मर्दों की भीड़ होती है, ऐसी सूरत में औ़रतों का बीच में चलना बेहतर नहीं है। मुमकिन है कि धक्का वग़ैरह लग जाए। या औबाश क़िस्म के लोग नफ़्स के मज़े के लिए ख़िलाफ़े शराफ़त कोई हरकत करें। इसलिए एहतियात और पर्दे के पेशे नज़र हुक्म दिया गया है कि औ़रतों रास्ते के किनारे किनारे चलें और इसमें गाड़ी वग़ैरह के दूसरे ख़तरात से भी हिफ़ाज़त है।

औरत का बन संवरकर निकलना लानत की वजह है

٧٥– عَنْ عَآئِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ بَيْنَمَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ فِي الْمَسْجِدِ دَخَلَتْ اِمْرَأَةٌ مِّنْ مُّزَيْنَةَ تَرْفُلُ فِيْ زِيْنَةٍ لَّهَا فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنْهَوْا نِسَآءَكُمْ عَنْ لُّبْسِ الزِّيْنَةِ وَالتَّبَخْتُرُ فِي الْمَسْجِدِ فَاِنَّ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ لَمْ يُلْعَنُوْا حَتّٰى لَبِسَ نِسَآءُهُمُ الزِّيْنَةَ وَتَبَخْتَرُوْا فِي الْمَسْجِدِ ط (ابن ماجہ)

तर्जुमाः– हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मज्लिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, एक औ़रत क़बीला-ए-मुज़ैना की सजी संवरी मस्जिद में आई। आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ लोगो! अपनी औ़रतों को सजने संवरने से (बाहर निकलते वक़्त) मना करो और मस्जिद में नाज़ो अदा से चलने से रोको। बनी इस्राईल पर उस वक़्त तक लानत नहीं की गई जब तक कि उनकी औ़रतों ने ज़ीनत (फ़ैशन) को और मस्जिद में नाज़ो अदा को इख़्तियार नहीं किया। (तर्ग़ीब, पेज 85)

इससे मालूम हुआ कि घर से बाहर बन संवर कर निकलना लानत की वजह है और बनी इस्राईल मलऊ़न और अज़ाब के मुस्तहिक़ इस वजह से हुए कि उनकी औ़रतों ने सजने संवरने और फ़ैशन को आम कर लिया था। यह ऐसा मलऊ़न और मनहूस काम है जिसकी वजह से पूरी क़ौम पर तबाही आती है। इसलिए मर्दों को और घर के बड़े और ज़िम्मेदारों को औ़रतों को इस तरह निकलने से रोकना

और बाहर जाने से मना करना वाजिब है। वर्ना इस गुनाह में घर के ज़िम्मेदार माँ-बाप, बड़े भाई, शौहर सब शरीक होंगे।

औरतों की ख़ूबी किस में है

٧٦- عَنْ عَلِيٍّ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ كَانَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اَىُّ شَيْءٍ خَيْرٌ لِّلْمَرْاَةِ فَسَكَتُوْا فَلَمَّا رَجَعْتُ قُلْتُ لِفَاطِمَةَ اَىُّ شَيْءٍ خَيْرٌ لِّلنِّسَآءِ قَالَتْ لَا يَرَاهُنَّ الرِّجَالُ ط

(اتحاف السادہ بزار، صفحہ ٣٦٢، کشف الاستار، جلد٢، صفحہ ١٥١)

तर्जुमाः– हज़रत अ़ली रज़ि० से मरवी है कि वह रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास थे तो आप सल्ल० ने पूछा, औ़रतों की ख़ूबी किस बात में है? तो लोग ख़ामोश रहे। मैं वापस आया तो फ़ातिमा रज़ि० से पूछा, कौनसी चीज़ औ़रतों में ख़ूबी की बात है? तो उन्होंने कहा, औ़रतें इस तरह रहें कि उन्हें कोई मर्द न देख सके। यानी पर्दे का एहतिमाम रखें।

फ़ायदाः– इस हदीसे पाक में औ़रतों के लिए पर्दे की ताकीद है कि वे इस क़द्र एहतियात से रहें कि मेह्‌रम के अ़लावा अजनबी मर्द उन्हें न देख सकें कि अजनबी मर्द से हर हालत में पर्दा है। अफ़सोस कि जिसमें औ़रत की भलाई और अच्छाई थी, माहौल में ख़ासकर शहरी माहौल में वही बात नहीं है। अकसर कारोबारी लोगों के यहां तो बिल्कुल बेपर्दगी का माहौल है। नौकर, चाकर, मज़दूर, काम करने वाले बिला झिझक उनके पास आते हैं, उनके घरों में चले आते हैं, उनसे लेन देन गुफ़्तुगू होती है। यह हरगिज़ जायज़ और दुरुस्त नहीं। प्यारी माओ! बहनो! आज पर्दे के साथ शरीअ़त के

मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार लो, कल जन्नत के मज़े लूटो, आज अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार लो, कल अपनी मन पसन्द बड़े मज़े की ज़िन्दगी गुज़ारोगी। थोड़ी सी एहतियात कर लो, कल जन्नत में आज़ाद फिरोगी।

फ़ैशन करके निकलने वाली औरतें क़यामत के दिन सख़्त अंधेरे में

٧٧– عَنْ مَيْمُوْنَةَ بِنْتِ سَعَدٍ وَّكَانَتْ خَادِمَةً لِّلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الرَّافِلَةِ فِي الزِّيْنَةِ فِيْ غَيْرِ اَهْلِهَا كَمِثْلِ ظُلْمَةٍ يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا نُوْرَلَهَاط

(ترمذی، صفحہ ۲۳۰، جامع صغیر، صفحہ ۲۹۷، فیض القدیر)

तर्जुमाः– हज़रत मैमूना बिन्ते सअ़्द रज़ि० जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़ादिमा थीं कहती हैं कि रसूले पाक सल्ल० ने फ़रमाया, जो औ़रत अपने शौहर के अ़लावा के लिए सजना संवरना और फ़ैशन करके नाज़ो अदा से बाहर निकलती है वह क़्यामत के दिन सख़्त अंधेरे में रहेगी उसके लिए कोई रोशनी न होगी।

फ़ायदाः– हदीसे पाक में "अर्-राफ़िला" है, जिसका मतलब यह है कि जो औ़रत फ़ैशन व सजने संवरने को अपनी रफ़्तार और चलने के अंदाज़ से ज़ाहिर करे। आज़ाद बेपर्दा औ़रतें जब उ़म्दा ख़ुशनुमा कपड़े पहनती हैं तो चाहती हैं कि बाहर निकलकर दूसरे अजनबी मर्दों को और औ़रतों को दिखाएं ताकि मर्दों की तवज्जोह उनकी

तरफ़ हो, इज़्ज़तदार, पाकदामन और पर्देदार औरतों के अलावा जो औरतें हैं वे घर में तो शौहर के सामने उम्दा और सजने संवरने के कपड़े न पहनेंगी मगर जब बाहर रिश्तेदारी में, बाज़ार में या सैर व तफ़रीह में निकलेंगी तो उम्दा सजे सजाए फ़ैशन वाले कपड़े पहनकर निकलेंगी जैसा कि अकसर शहरों में आप देखेंगे ताकि लोग उनको देखें और उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हों और उनसे नफ़्स का मज़ा लें। यह नाजायज़ और हराम है। ये औरतें दूसरों को बदनिगाही और ज़िना-ए-नज़री की दावत देती हैं। अल्लामा इब्ने अल्हाज मक्की ने औरतों के लिबास और बाहर निकलने की नाजायज़ और हराम सूरतों पर तब्सिरा करते हुए लिखा है कि "ये औरतें जब घर से बाहर निकलती हैं तो ख़ूब सजती संवरती हैं, अच्छे कपड़े और ज़ेवरात पहनती हैं, और बन संवरकर सज सजाकर रास्ते में निकलती हैं और मर्दों की भीड़ में घुसती हैं और ख़ास चाल अंदाज़ से चलती हैं ताकि मर्द उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हों, देखें, घूरें और मर्दों के सामने से उनके इज़्दिहाम (भीड़) के मुक़ाम से घुसती चली जाती हैं।" (मुदख़ल, पेज 345)

ये सब काम नाजायज़ और हराम हैं और लानत के क़ाबिल हैं। ऐसी औरतें क़्यामत के दिन नंगी रहेंगी और जन्नत की ख़ुश्बू भी न पाएंगी। क़्यामत के दिन इस बुरी हरकत के जुर्म में सख़्त तारीकी (अंधेरे) में रहेंगी। मग़रिबी ग़ैर मुस्लिम औरतों का यही हाल है। अफ़सोस कि हमारे मुस्लिम समाज में भी यह मनहूस, मलऊन तरीक़ा बेपर्दगी की वजह से चल पड़ा है। अल्लाह अल्लाह किस क़द्र ख़ौफ़ और डर की बात है। इन औरतों को थोड़ा सा दुनियावी मज़ा मिलता है, ज़रा सा दुनिया का मज़ा और मरने के बाद इस क़द्र सख़्त अज़ाब। तौबा तौबा कैसी बद्नसीबी की बात। आज घर और

शौहर के अलावा के लिए सजने संवरने से एहतियात कर लो। घर से बाहर निकलो तो नक़ाब में और सादा लिबास में निकलो। कल जन्नत के मज़े लूटो। सुन लो! आज नफ़्स के ख़िलाफ़ करोगी तब यह दौलत पाओगी।

घरों के झरोके और खिड़कियाँ बन्द रखने का हुक्म

78. इमाम ग़ज़ाली रह० ने ज़िक्र किया है कि हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ि० घर की खिड़कियाँ और रोशनदान जिससे बाहर का नज़र आए बन्द फ़रमा दिया करते थे ताकि औरतें बाहर मर्दों को न झांक सकें।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० ने देखा कि एक औरत घर की खिड़की से बाहर मर्दों को झाँक रही है तो उसे उन्होंने पीटा।

(इत्तिहाफ़ुस् सादा, शरह एह्या, हिस्सा 5, पेज 362)

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि औरतों को जो अकसर मर्दों को झांकती या देखा करती हैं मना है। अगर इस तरह की आदत घरों में हो जाए तो इससे ज़िम्मेदारों को और बड़ों को मना करना चाहिए कि जहां मर्द की ख़ूबी यह है कि औरतों को न देखा और घूरा करे, इसी तरह औरतों की भी ख़ूबी और हया और इज़्ज़त व शराफ़त की बात है कि वे मर्दों को न देखा करें।

अफ़सोस सद् अफ़सोस! किसी दौर में मर्दों को जो ग़ैर मेहरम हैं उनको देखने पर औरतों को मारा जाता था। आज इस दौर में यह हाल है कि उनसे लुत्फ़ अंदोज़ी की बातें करती हैं, छेड़ती हैं, हंसी मज़ाक़ करती हैं। बेझिझक उनसे नर्म और पुरकशिश लहजे में बात

करती हैं। अल्लाह अल्लाह क्या हाल हो गया है, ये सब ज़िना की शुरूआत है। खुदा की बन्दियो! आज अपने नफ़्स पर कन्ट्रोल कर लो, हया और पर्दे को अपना ज़ेवर बना लो, कल करवट करवट जन्नत के मज़े लूटोगी।

औरतों को तन्हा सफ़र करने की इजाज़त नहीं

٧٩- عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تُسَافِرِ الْمَرْاَةُ ثَلٰثَةَ اَیَّامٍ اِلَّا مَعَ ذِیْ مَحْرَمٍ (بخاری، صفحہ ۱۴۷، طحاوی، جلد ا، صفحہ ۳۵۷)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, कोई औ़रत तीन दिन सफ़र न करे मगर यह कि उसके साथ उसका मेहरम हो।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تُسَافِرِ الْمَرْاَةُ اِلَّا وَمَعَهَا ذُوْ مَحْرَمٍ

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, कोई औ़रत सफ़र न करे हाँ मगर यह कि उसके साथ उसका मेहरम हो।

(तहावी, पेज 357)

फ़ायदाः— औ़रतों के लिए असल हुक्म है कि वे घर में रहें, पर्दे में ज़िन्दगी गुज़ारें, दूसरे गै़र मेहरम मर्दों से मिलने की नौबत न आ जाए, अगर सफ़र की सख़्त ज़रूरत पेश आ जाए तो तन्हा सफ़र की इजाज़त नहीं कि पर्दे के ख़िलाफ़ है। हाँ अगर सफ़र करेगी तो

किसी मेहरम के साथ पर्दे का लिहाज़ करते हुए कर सकती है। सत्तर मील के क़रीब का सफ़र तो औरत को बग़ैर किसी मेहरम के करना हराम है। हज तक के सफ़र की उसे इजाज़त नहीं है। औरत आज के इस दौर में मग़्रिबी यूरोपियन तहज़ीब और बे दीनी के माहौल से मुतास्सिर होकर बग़ैर किसी मेहरम के सत्तर मील या इससे ज़्यादा का सफ़र कर लेती है। ख़्याल रहे कि सफ़र की यह मिक़्दार चाहे दिन दिन में हो जाए या एक घंटे में हो जाए तब भी शरअ़न जायज़ नहीं है। अगर साथ में औरतें हों तब भी जायज़ नहीं कि मेहरम मर्द ज़रूरी है। बस या रेल में लेडीज़ डिब्बे में हो तब भी जायज़ नहीं। हवाई जहाज़ का सफ़र जो कुछ घंटों में हो जाए तब भी दुरुस्त नहीं, गुनाह है। इस सिलसिले में जहाँ औरत गुनाहगार होगी शौहर और उसके सरपरस्त भी गुनाह में शरीक होंगे। आज गुनाह से बच जाओ कल जन्नत के मज़े लूटो। हाँ अगर थोड़ी दूरी का सफ़र हो, एक शहर से दूसरे क़रीबी शहर, एक गाँव से दूसरे क़रीबी गाँव में या शहर व क़स्बे के किसी मुहल्ले में, या एक मुहल्ले व इलाक़े से दूसरे इलाक़े में या मुहल्ले में जाना हो तो बग़ैर मेहरम के जा सकती है मगर फिर भी तन्हा हरगिज़ न जाए, साथ में कोई समझदार नाबालिग़ लड़का ले जाए, या किसी समझदार औरत को ले जाए या किसी बूढ़ी औरत को ले जाए। उ़लमा ने इस बात की इजाज़त दी है कि ऐसा क़रीबी सफ़र किसी बच्चे के साथ कर सकती है। अलबत्ता शरई सफ़र जो तक़रीबन सत्तर किलोमीटर का होता है वह बच्चे के साथ या ग़ैर मेहरम मर्द, देवर के साथ दुरुस्त नहीं।

औरतों को जनाज़े में जाना जायज़ नहीं

٨٠– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَيْسَ لِلنِّسَآءِ فِي اتِّبَاعِ الْجَنَآئِزِ اَجْرٌ ؕ

(بیہقی، کنزالعمال، صفحہ ۳۹۱)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रतों को जनाज़े के पीछे जाने में कोई सवाब नहीं (बल्कि गुनाह है)।

عَنْ اَبِيْ قَتَادَةَ مَرْفُوْعًا لَّيْسَ عَلَى النِّسَآءِ غَزْوٌ وَّلَا جُمُعَةٌ وَّلَا تَشْيِيْعُ جَنَازَةٍ ؕ

(کنزالعمال، صفحہ ۴۰۶)

तर्जुमाः– हज़रत अबू क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि न औ़रतों पर ग़ज़्वा व जिहाद है, न जुमा है,और न जनाज़े में जाना है।

फ़ायदाः– औ़रतों पर पर्दा है, उनको फ़र्ज़ नमाज़ के लिए मस्जिद में जाने की इजाज़त नहीं है। शरीअ़त में उनके लिए जमाअ़त नहीं है। उन पर जुमा, ईदैन व बक़राईद की नमाज़ नहीं है। इसी तरह उन पर न नमाज़े जनाज़ा है और न जनाज़े के साथ चलना और न क़ब्रिस्तान जाना है। उनको जनाज़े के साथ चलना मना है और क़ब्रिस्तान में जाने पर लानत है। कुछ बड़े शहरों में देखा गया है कि औ़रतें भी जनाज़े के साथ चलती हैं तो यह नाजायज़ है।

नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना किया है। जैसा कि हदीसे पाक में है, इसी तरह अबू दाऊद में उम्मे अ़तिय्या की हदीस में मना है। जब इबादत के सिलसिले में औ़रतों का निकलना

मना है तो जलूसे, जुलूस और मेले वग़ैरह के मौक़े पर निकलना सख़्ती से मना होगा। आजकल जलूसे जुलूस में बिला धड़क और मेले में ख़ूब जाती हैं, बड़े गुनाह की बात है। हाँ दीनी वअ्ज़ व नसीहत की मज्लिस में जहाँ पर्दे का एहतिमाम हो पर्दे के साथ जाना और पर्दे के साथ वअ्ज़ व नसीहत सुनना दुरुस्त और जायज़ है।

मज़ारों पर जाने वाली औरतों को जन्नत की ख़ुश्बू नसीब नहीं

٨١– عَنْ سَلْمَانَ وَاَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَآ اَنَّهٗ عَلَيْهِ السَّلَامُ صَلّٰى ذَاتَ يَوْمٍ خَرَجَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَوَقَفَ عَلٰى بَابِ دَارِهٖ فَاَتَتْ فَاطِمَةُ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ اَيْنَ جِئْتِ فَقَالَتْ كُنْتُ اِلٰى مَنْزِلِ فُلَانَةِ الَّتِىْ مَاتَتْ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ ذَهَبْتِ اِلٰى قَبْرِهَا فَقَالَتْ مَعَاذَ اللّٰهِ تَعَالٰى اَنْ اَفْعَلَ بَعْدَ مَا سَمِعْتُ مِنْكَ مَا سَمِعْتُ فَقَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوْ زُرْتِ قَبْرَهَا لَمْ تُرِيْحِىْ رَآئِحَةَ الْجَنَّةِ ط (نصاب الاحتساب، صفحہ ۱۴۰)

तर्जुमाः— हज़रत सलमान रज़ि० और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल० मस्जिद से नमाज़ पढ़कर निकले, घर के दरवाज़े पर खड़े हुए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० आईं, आप सल्ल० ने उनसे पूछा, तुम कहाँ से आ रही हो? कहा, फ़्लाँ के घर गई थी जिसका इन्तिक़ाल हो गया था। आप सल्ल० ने पूछा, क्या तू क़ब्रिस्तान भी गई

थी। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, ख़ुदा की पनाह! इस बात के बाद कि मैं आप (सल्ल०) से इसके बारे में (क़ब्रिस्तान और क़ब्रों पर जाने के बारे में) इतनी वईद (धमकी) सुन चुकी हूँ, ऐसा करूंगी। यानी सिर्फ़ घर गई थी, क़ब्रिस्तान नहीं गई थी। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तू क़ब्रिस्तान चली जाती तो जन्नत की ख़ुश्बू भी न पाती।

फ़ायदाः– औरतों का क़ब्रिस्तान और मज़ारों पर जाना लानत की बात है। शरीअ़त से नावाक़िफ़ औरतें बुज़ुर्गों के मज़ारात पर जाती हैं और बेहयाई करती हैं। ये सब लानत और जन्नत से दूर करने वाले बुरे काम हैं। फ़िक़ह फ़तावा की मशहूर किताब "निसाबुल एहतिसाब" में है, औरतें जुमेरात के दिन मज़ारात की ज़ियारत को जाती हैं, क्या इसकी गुंजाइश है? जवाब उसके जायज़ होने को मत पूछो, बल्कि यह पूछो कि किस क़द्र लानत में गिरफ़्तार होती हैं। सुनो जब वे मज़ार पर जाने का इरादा करती हैं तो ख़ुदा और फ़रिश्तों की लानत में गिरफ़्तार हो जाती हैं और जब (इरादे के बाद) निकल जाती हैं तो शैतान उन्हें चारों तरफ़ से घेर लेते हैं। फिर जब वे क़ब्र पर आ जाती हैं तो क़ब्र वाले की रूह उन पर फिटकार करती रहती है, जब तक वहाँ से चली न जाएं, (कि अजनबी औरतों का उनके पास बेपर्दगी के साथ आना उनके लिए तकलीफ़ की वजह होता है। क्या ये बुज़ुर्ग ज़िंदा रहते तो इस तरह बिला पर्दे के उनकी मज्लिस में आ सकती थीं। हरगिज़ नहीं! तो फिर मौत के बाद बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी में किस तरह गवारा करेंगे) फिर जब वहाँ से निकलती हैं तो अल्लाह तआ़ला की लानत व फिटकार पड़ती है। जब तक कि वे घर वापस न आ जाएं। एक हदीस में है जो औरत मज़ार पर जाने के इरादे से घर से निकलती है तो सातों

आसमान, सातों ज़मीन की लानत व फिटकार में गिरफ़्तार हो जाती है और खुदा की लानत में चलती है और जो औरत घर बैठे बैठे क़ब्र वाले के लिए दुआ करती है (ईसाले सवाब करती है) और घर से बाहर नहीं निकलती है तो खुदा-ए पाक उसे हज व उमरे का सवाब देता है। (निसाबुल एहतिसाब, पेज 140)

देखिए! औरतों को मज़ार पर जाने ही नहीं बल्कि उसका इरादा करने पर किस क़द्र खुदा और रसूल और आसमान व ज़मीन की लानत व फिटकार है। ख़्याल रहे कि यह सिर्फ़ जाने में है। अगर बेपर्दगी करे, बे हयाई करे, बन संवर कर निकले, अजनबी मर्दों व औबाश लोगों की भीड़ के साथ निकले और जाए और मज़ार पर रहे तो फिर लानत पर लानत और फिटकार ही फिटकार। सोचो! अगर वह बुज़ुर्ग ज़िंदा होते और वाक़ई बुज़ुर्ग होते तो इस तरह बेपर्दगी के साथ औरतों को आने देते, हरगिज़ नहीं, तो फिर ऐ प्यारी बहनो! ऐसा बुरा काम क्यों करती हो और जान व माल ख़र्च करके अल्लाह और रसूल सल्ल० की फिटकार को क्यों लेती हो।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को सख़्त डाँट कि क़ब्रिस्तान चली जाती तो जन्नत से महरूम हो जाती

٨٢– عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو...قَالَ (النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)
لَهَا مَآ اَخْرَجَكِ مِنْ بَيْتِكِ يَا فَاطِمَةُ قَالَتْ اَتَيْتُ اَهْلَ هٰذَا الْمَيِّتِ
فَتَرَحَّمْتُ اِلَيْهِمْ وَعَزَّيْتُهُمْ بِمَيِّتِهِمْ قَالَ لَعَلَّكِ بَلَغْتِ مَعَهُمُ الْكُدٰى
قَالَتْ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ بَلَغْتُهَا وَقَدْ سَمِعْتُكَ تَذْكُرُنِيْ ذٰلِكَ مَا تَذْكُرُ

فَقَالَ لَهَا لَوْ بَلَغْتِهَا مَعَهُمْ مَّا رَأَيْتِ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَرَاهَا جَدُّ اَبِيْكِ ط

(نسائی، صفحہ ۲۲۶، ابوداود، ترغیب جلد ۶، صفحہ ۱۵۵)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से (जबकि वह बाहर से आ रही थीं और आप सल्ल० से मुलाक़ात हो गई) पूछा, घर से क्यों निकली थी, कहा कि फ़्लां मय्यत में गई थी कि उनके लिए रहमत व मग्फ़िरत की दुआ़ कर दूँ और उनके घर वालों को तसल्ली दे दूँ। आप सल्ल० ने पूछा कि शायद क़ब्रिस्तान भी गई थी। जवाब दिया, खुदा की पनाह! कि में क़ब्रिस्तान जाऊँ, जबकि मैं आप सल्ल० से (क़ब्रिस्तान जाने के बारे में सख़्त वईद) इस इस तरह सुन चुकी हूँ जो आप सल्ल० ने बयान किया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तू उनके साथ क़ब्रिस्तान जाती तो जन्नत देख भी न सकती थी (दाख़िल होना तो दूर की बात) यहां तक कि तेरे बाप के दादा न देख लेते।

फ़ायदाः— खुदा की पनाह! औ़रतों को मज़ारों और क़ब्रिस्तान में जाने की कितनी सख़्त वईद है कि आप सल्ल० ने अपनी लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से फ़रमा दिया कि अगर क़ब्रिस्तान जाती तो जन्नत से मेहरूम हो जाती। भला हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जैसी नेक सीरत सालिहात (नेक लोगों) की पेशवा, जन्नत की सरदार जब आप सल्ल० से इसके बारे में पहले ही वईद सुन चुकी थीं तो इस न करने वाले काम को कैसे कर सकती थीं।

उर्स में और मज़ारों पर जाने वाली औरतों पर ख़ुदा और रसूल सल्ल० की लानत

٨٣– عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَآئِرَاتِ الْقُبُوْرِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ حَسَّانٍ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَوَّارَاتِ الْقُبُوْرِ ط

(ابوداؤد، صفحہ ٣٦١، ابن ماجہ، صفحہ ١١٣)

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَوَّارَاتِ الْقُبُوْرِ ط (نسائی، ابن ماجہ، صفحہ ١١٣)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन औ़रतों पर लानत फ़रमाई जो क़ब्रों पर जाने वाली हैं।

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० से मरवी है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मज़ारात पर जाने वाली औ़रतों पर लानत फ़रमाई है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मज़ारों पर जाने वाली औ़रतों पर लानत फ़रमाई है।

फ़ायदाः— औ़रतों को मज़ारों पर जाने से आप सल्ल० ने सख़्ती से मना फ़रमाया है, औ़रतें कमज़ोर दिल वाली होती हैं। शैतान और नफ़्स के जाल व फ़रेब में बहुत जल्द गिरफ़्तार हो जाती हैं। मज़ारात पर उनका आना जाना बुरी अक़ीदत और शिर्किया कामों की वजह

हो जाएगा। उनकी इज़्ज़त, पाकदामनी और पर्दे का जनाज़ा निकल जाएगा। वे शरई हुदूद को हरगिज़ बाक़ी न रख सकेंगी। एक खेल तमाशा बन जाएगा। इस वजह से शरीअ़त ने सख़्ती से रोका है और इसे लानत की वजह क़रार दिया है। औरतों पर नफ़्स और शैतान का ग़लबा जल्दी हो जाता है। इब्रत व नसीहत के बजाए ख़्वाहिशाते नफ़्स का रुख़ जल्दी उनमें दाख़िल हो जाता है। इसी वजह से तो शरीअ़त ने औरतों के लिए जमाअ़त की शिरकत मशरूअ़ नहीं की और घर में पढ़ने का हुक्म दिया।

इस मुमानअ़त और सख़्ती से मना करने के बावुजूद मज़ारात पर और उर्स के मौक़े पर औरतें किस कसरत से जाती हैं अल्लाह की पनाह। बुज़ुर्गों के मशहूर मज़ारात लाहौर, दिल्ली, कलियर, अजमेर, गुलबर्गा, कछोछा वग़ैरह में जाकर देखिए। औरतें किस क़द्र बेहयाई, फ़हाशी बेपर्दगी का मुज़ाहरा करती हैं। किस तरह बन संवरकर फ़ैशन कर के मज़ारात पर इज़्ज़त का जनाज़ा निकालती हैं कि एक शरीफ़ आदमी वहां ईसाले सवाब के लिए जाने में आना कानी करता है। सर खोले हुए बाल लटकाए हुए वहाँ हुस्न का मुज़ाहरा करती हैं वे ऐसी हैं जैसे ज़िना की दावत देती हैं अल्लाह की पनाह। इब्रत की जगह में फ़ैशन और सजना संवरना और बेपर्दगी का मुज़ाहरा क्यों करती हैं। जिस तरह आज़ाद शादी ब्याह में नाच गाने में बेहयाई का मुज़ाहरा होता है इसी तरह उन बुज़ुर्ग और मुक़द्दस हस्तियों के मज़ारात पर बेशर्मी का मुज़ाहरा करती हैं। इसी वजह से आप देखेंगे कि ये मज़ारात जो मारिफ़त और इब्रत की जगह थे, खेलकूद की जगह और आवारा लोगों के अड्डे बन गये हैं। इसी तरह अजमेर और लाहौर, दिल्ली वग़ैरह उर्स के मौक़े पर बसों और गाड़ियों में मर्दों से ज़्यादा नहीं तो कम भी नहीं औरतों की तादाद

होती है। अकसर नई उम्र की जवान औरतें बेपर्दा फ़ैशन व बेहयाई का मुज़हरा करती हुई जाती हैं, क्या इस तरह बेहयाई, बेपर्दगी के साथ यह मज़ारों पर इब्रत के लिए जाती हैं हरगिज़ नहीं। इन औरतों की भीड़ में फ़ासिक़, फ़ाजिर लोग होते हैं। सफ़र में हरगिज़ शरई पर्दा बाक़ी नहीं रह सकता। शरीअ़त ने औरतों के मिज़ाज को समझा, इसी वजह से पहले ही बन्दिश लगा दी कि मज़ार पर जाने वालीं ख़ुदा और रसूल सल्ल० की लानत में गिरफ़्तार होती हैं। अफ़सोस कि जहालत की वजह से उसे नेक काम और इबादत का काम समझती हैं। हालांकि अपने आपको जहन्नम में झोंकती हैं। कहीं कहीं तो यहां तक देखा गया है कि जिस तरह हज्ज-ए-बैतुल्लाह के लिए सालों रुपया जमा करते हैं और ज़ियारत-ए-बैतुल्लाह की तमन्नाओं में एक मुद्दत आशिक़ाने इलाही गुज़ारते हैं इसी तरह ये जाहिल मर्द और औरतें लाहौर, दिल्ली और ख़ासकर अजमेर के उर्स में शिरकत के लिए रक़म जमा करते हैं और तमन्ना करते हैं और इसे मग़फ़िरत की वजह और निजात का सबब समझते हैं। इस लानत पर माल का लगाना ऐसा है जैसे माल ख़र्च करके लानत को ख़रीदना और हासिल करना। जिसको रसूलुल्लाह सल्ल० ने लानत की वजह क़रार दिया। जिस काम पर ख़ुदा और रसूल की लानत भला उस पर जान व माल का ख़र्च करना निजात की वजह और सवाब की वजह हो सकता है। अफ़सोस कि आज मिज़ाज ही बदल गया है। बे दीनी की बातों को दीन समझकर करने लगे। भला इस्लाह और तौबा की उम्मीद हो सकती है। उर्स और मज़ारात पर भीड़ भाड़ क़व्वाली, सिमाअ् वग़ैरह यह सब गुनाह है और इसके लिए सफ़र करना और जाना गुनाह है। ज़रा सोचिए अगर मज़ारों पर उर्स करना सवाब का काम होता तो मदीना-ए-तय्यबा में सरकारे

दो-आलम सल्ल० के मज़ारे मुक़द्दस पर और सिद्दीक़े अकबर रज़ि०, उमर फ़ारूक़ रज़ि०, जलीलुल क़द्र सहाबा किराम रज़ि० के मज़ारात पर उर्स होता। इसी तरह हज़रात अंबियाए किराम अ़लैहि० के मज़ारात पर भी उ़र्स का इन्तिज़ाम होता। आप सल्ल० इसका हुक्म फ़रमाते। हज़रात सहाबा किराम रज़ि० के ज़माने में इस पर अ़मल होता। ख़ैरुल क़ुरून जिसमें नेकी के ग़लबे की आप सल्ल० ने गवाही दी उन कामों पर अ़मल होता। जब ये बातें नहीं तो मालूम हुआ कि ये सब दीन की बातें नहीं बल्कि जाहिलों की गढ़ी हुई बातें हैं। क़बाहतों (बुराईयों) से ख़ाली होने की सूरत में सिर्फ़ इबूरत के लिए मर्दों को तो इजाज़त हो भी सकती है मगर औ़रतों को तो किसी सूरत में जायज़ ही नहीं, हराम है।

ऐ माओ और बहनो! खुदा के वास्ते लानत और हराम काम करके अपने ऊपर जहन्नम की सज़ा मत वाजिब करो और खुदा व रसूल सल्ल० की लानत में गिरफ़्तार मत हो। जब सरकार-ए- दो आलम सल्ल० ने लानत का काम क़रार दिया है तो किसी के कहने और करने को मत देखो। कल क़्यामत में सरकार को क्या मुँह दिखाओगी। तुम्हारी जो बहनें इसमें गिरफ़्तार हैं उन्हें भी समझाओ और मना करो।

औ़रतों का अजनबी मर्दों के साथ बैठना हराम है

٨٤– عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ اِلَّا مَعَ ذِىْ رَحِمٍ مَّحْرَمٍ ط (بخاری، صفحہ ٧٨٧)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़बरदार कोई औ़रत मह्रम के अ़लावा किसी के पास न बैठे।

फ़ायदाः— औ़रतों का ग़ैर मेह्रम के साथ इस तरह बैठना और रहना कि वहाँ और दूसरे मेहरम और रिश्तेदार न हों हराम है। शैतान आँख, कान, दिल के ज़िना में मुब्तला कर देता है। कभी कभी इस तरह उठना बैठना और तन्हाई का मिलना हराम काम के होने की वजह बन जाता है।

इस दौर में ख़ासकर शहरी दुनिया में औ़रतें ख़ासकर नई उ़म्र की औ़रतें ग़ैरों के साथ बैठने और काम करने और मुलाज़मत में बिल्कुल एहतियात नहीं करतीं। ऐसी मुलाज़मत जहाँ ग़ैर मेहरम के साथ उठना, बैठना और मिलना पड़ता हो नाजायज़ और हराम है। ख़ुदा ही हिफ़ाज़त फ़रमाए। जब दुनियावी तालीम इसी मक़सद से दिलाई जाएगी तो उन गुनाहों का इर्तिकाब जो ग़ज़ब और लानते ख़ुदावन्दी की वजह है ज़रूर होगा। बग़ैर सख़्त ज़रूरत के ग़ैर मेहरम से बोलना दुरुस्त नहीं। बग़ैर पर्दे के तो और गुनाह की बात है। आज दुनिया की परेशानी बर्दाश्त करके इन गुनाहों से बच जाओ, कल को राहत की ज़िन्दगी जन्नत में मिलेगी।

अजनबी मर्द को देखना और ताकना भी मना है

٨٥– عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَهٗ مَيْمُوْنَةُ بِنْتُ الْحَارِثِ فَاَقْبَلَ اِبْنُ اُمِّ مَكْتُوْمٍ وَذٰلِكَ بَعْدَ اَنْ اَمَرَنَا

بِالْحِجَابِ فَدَخَلَ عَلَيْنَا فَقَالَ اِحْتَجِبَا مِنْهُ فَقُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَيْسَ هُوَ اَعْمٰى لَا يُبْصِرُنَا فَقَالَ اَفَعَمْيَا وَاِنْ اَنْتُمَا اَلَسْتُمَا تُبْصِرَانِهٖ ط (ابوداؤد، حسن الأسوه، صفحہ ۳۶۹)

तर्जुमाः– हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से मरवी है कि मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास थी और वहां पर मैमूना बिन्ते अल्-हारिस भी थीं। इब्ने मकतुम (नाबीना सहाबी) आ गए और यह वाक़िआ पर्दे के हुक्म के बाद का है। आप सल्ल० तशरीफ़ लाए और हम दोनों से फ़रमाया, इन से पर्दा करो। हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या वह नाबीना नहीं हैं। वह हमें नहीं देख सकते। आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम दोनों भी नाबीना हो? क्या तुम उनको नहीं देख सकती हो।

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि औरतों को अजनबी मर्दों से एहतियात करनी चाहिए। बग़ैर किसी शरई ज़रूरत के उनसे बोलना, उनको देखना, उनको ताकना दुरुस्त नहीं। औरतें इस में एहतियात नहीं करती हैं। खिड़की वग़ैरह से बिला झिझक उनको घूरती हैं और समझती हैं कि इसमें कोई हर्ज नहीं। इस हदीस से इसकी मुमानअत मालूम होती है। ख़्याल रहे कि जब देखना मना है तो उनके साथ बैठना, काम करना, हंसी मज़ाक़ करना किस तरह दुरुस्त हो सकता है और दफ़्तर में काम करने वाली मुलाज़िम औरतों का हाल देखिए। चाहे दुनिया की सहूलत मगर जहन्नम के आमाल हैं। खुदा की पनाह! यह सब मग़रिबी तहज़ीब का असर और उसकी लानत है।

देवर से बेपर्दगी और हंसी मज़ाक़ हराम है

٨٦– عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِيَّاكُمْ وَالدُّخُوْلَ عَلَى النِّسَآءِ فَقَالَ رَجُلٌ مِّنَ الْاَنْصَارِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَفَرَأَيْتَ الْحَمْوَ قَالَ الْحَمْوُ الْمَوْتُ ط (مشکوٰۃ، صفحہ ۲۶۸، بخاری جلد۲، صفحہ ۷۸۷)

तर्जुमाः– हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़बरदार औरतों के पास आने जाने से बचो। तो एक अंसारी रज़ि० ने आप सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! और देवर (यानी यह क्या भाभी के पास न जाए) उसके बारे में क्या हुक्म है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, वह तो मौत है (यानी इज़्ज़त या ईमान के एतिबार से)।

फ़ायदाः– ख़्याल रहे कि इस हदीसे पाक में देवर को औरत के हक़ में मौत कहा गया है यानी भाभी के लिए मौत है। जिस तरह मौत हलाकत की वजह है उसी तरह भाभी के लिए देवर हलाकत यानी दोज़ख़ और जहन्नम की वजह है। शरह बुख़ारी में है कि जिस तरह मौत से आदमी बचता है, उसी तरह देवर भाभी को एक दूसरे से बचने की ताकीद की गई है। असल में भाई की बीवी होने की वजह से शैतान यहाँ बहुत दाख़िल होता है। इसी वजह से हमारे माहौल में देवर का भाभी से हंसी मज़ाक़ और बेतकल्लुफ़ी बल्कि बेहयाई तक बातों के करने का माहौल है। यह सब हराम हैं। नाजायज़ है। देवर का भाभी से बेपर्दगी और हंसी मज़ाक़ एक हक़ समझा जाता है। यह ग़ैर मुस्लिमों के माहौल से पैदा हुआ है।

औ़रतों को भी चाहिए कि अपने देवर से पर्दा करें, हंसी मज़ाक़ तो दूर की बात बग़ैर ज़रूरत के बात भी न करें। मर्दों को भी चाहिए कि भाभी से पर्दा करें। आज देवर से पर्दा कर लो और उनसे हंसी मज़ाक़ बन्द करो। गुनाह की बात से बचो और कल जन्नत में मज़े की ज़िन्दगी गुज़ारो।

औ़रतों के लिए दो ही जगह

٨٧- عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِلْمَرْأَةِ سَتْرَانِ الْقَبْرُ وَالزَّوْجُ ط (کنز العمال، جلد۱۶، صفحہ ۴۱۳)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, औ़रतों के लिए दो ही मुक़ाम क़ाबिले सतर (पर्दे वाले) हैं। एक शौहर का घर, दूसरा क़ब्र।

फ़ायदाः– मतलब यह है कि औ़रत के लिए पर्दे की जगह जहाँ वह अमनो आ़फ़ियत से बग़ैर गुनाह के रह सके या तो शौहर का घर है या फिर मौत के बाद क़ब्र। इसके अ़लावा बाहर निकलना, बाज़ारों, पार्कों, रिश्तेदारों में बग़ैर ज़रूरत घूमना, यह पर्दे के ख़िलाफ़ है।

इससे मालूम हुआ कि जो औ़रतें मुलाज़मत करती हैं वह दुरुस्त नहीं, चूंकि इसमें अजनबी मर्दों से मेलजोल और उनसे रब्त ज़ब्त (ताल्लुक़) का मौक़ा मिलता है और बेपर्दगी होती है। आजकल शहर की औ़रतें रोज़ी रोटी के लिए मर्दों के साथ ऑफ़िस में मुलाज़मत करती हैं। ज़र्रा बराबर शर्म महसूस नहीं करतीं, यह बड़ी बेग़ैरती की बात है। औ़रतों को मुलाज़मत करना दुरुस्त नहीं। रोज़ी-रोटी की ज़रूरत हो तो घर में कोई घरेलू काम कर लें। इज़्ज़त

के साथ थोड़ी तकलीफ़ बर्दाश्त करके ज़िन्दगी गुज़ार लें और उसके बाद आख़िरत में हमेशा की राहत और जन्नत की नेमत हासिल होगी। आज थोड़ी सी वक़्ती सहूलत कल की जहन्नम की तकलीफ़ की वजह होगी।

बन संवरकर निकलने वाली औरत ज़ानिया है

٨٨– عَنْ اَبِىْ مُوْسٰى رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا اسْتَعْطَرَتِ الْمَرْاَةُ فَمَرَّتْ عَلَى الْقَوْمِ لِيَجِدُوْا رِيْحَهَا فَهِىَ زَانِيَةٌ ط (كنز العمال، جلد ١٦، صفحہ ٣٨٣)

तर्जुमाः– हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब औरत इत्र लगाकर लोगों के पास से गुज़रे ताकि लोग उसकी ख़ुशबू से महज़ूज़ हों (लज़्ज़त हासिल करें) तो वह ज़ानिया है।

फ़ायदाः– अरब के माहौल में इत्र लगाना औरतों के सजने संवरने में शुमार था। औरतों का इत्र लगाकर सड़कों और रास्तों पर गुज़रना ज़ाहिर यह है कि इसका मक़सद मर्दों को महज़ूज़ और लुत्फ़-अंदोज़ करना और मुतवज्जेह करना है और ऐसी ज़ीनत (सिंगार) इख़्तियार करना जिससे अजनबी मर्द मुतवज्जेह हों उनको ज़िना की दावत और ज़िना की तरफ़ उभारना है। इसी तरह पाउडर, क्रीम लगाकर और बन संवरकर बाज़ारों, पार्कों में जाना और सैर करना जो आज शाहरों में और रईस ज़ादियों में ख़ासकर राइज है, यह हराम है और ऐसी औरत ज़ानिया है। इस फ़ैशन का मक़सद ही यह

है कि लोग मुतवज्जेह हों, देखें और हमारे हुस्न से लुत्फ़ अंदोज़ हों। जवानों, औबाशों में हमारा तज़्किरा हो। खुदा की पनाह! ज़िना है। आज मुसलमानों में यह मनहूस हराम तरीक़ा अब राइज और आम हो गया है कि इसकी बुराई का एहसास नहीं। शहर के दीनदार तबक़ों में भी यह बात पाई जाती है, स्कूल के बहाने उनकी लड़कियाँ सजी संवरी फिरती हैं, जो बिलकुल नाजायज़ और हराम है। ऐसी तालीम जो नाजायज़ और हराम कामों को शामिल हो गज़बे इलाही की वजह है। कुंवारी औरतों का बन संवरकर निकलना आज समाज में बहुत ज़्यादा आम है। इस दौर में शहरों से और तालीम याफ़्ता घरानों से तो पर्दा उठता ही जा रहा है। इस्लामी पहचान और इस्लामी तहज़ीब आज उनको तमद्दुन (तरक़्क़ी) के ख़िलाफ़ नज़र आ रहा है। शादी से पहले तो पर्दा उनको भाता ही नहीं। एक ऐब और ज़िल्लत की बात समझते हैं। आज खुदा व रसूल सल्ल० के ख़िलाफ़ जेहन ग़ैरों से मिलने और मुतास्सिर होने की वजह से हुआ। ग़ैरों की औरतें बन संवरकर आज़ाद फिरती हैं और लोगों को कम से कम आँख और दिल के ज़िना की दावत देती हैं। उनके माहौल में यह सब फ़ख़्र और फ़ैशन की बात है। हमारे इस्लामी माहौल में तो यह लानत और खुदा के ग़ज़ब की वजह है। हमारा मज़हब अपनी तहज़ीब, कलचर और जिन्दगी गुज़ारने का एक मऊयार रखता है। ग़ैरों के यहाँ ज़िन्दगी का कोई क़ानून व मऊयार नहीं। अपने नफ़्स और जो माहौल है उसके ताबेअ् हैं। काश उन आज़ाद लोगों की समझ में आ जाए, आज बेपर्दगी और आज़ादी की वजह से उनकी औरतें इज़्ज़त व शराफ़त को खो चुकी हैं। माँ बाप की निगाहों के सामने यह दूसरों के साथ कंधे से कंधा मिलाए हाथों में हाथ दिए चली जाती हैं। उनके सामने हया और शराफ़त का

जनाज़ा निकालती हैं। खुद माँ-बाप भी कभी कभी अफ़सोस करते हैं मगर खुद उन्हीं ने उनको बेहयाई की आग में डाला है। अब किस तरह रुकेंगी?

खुद कर्दा रा इलाज नेसत
(अपने किये हुए का कोई इलाज नहीं)

देखिए क़ुरआन ने अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) को हुक्म दिया है:

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

पिछले जाहिलियत के दौर की तरह ज़ीनत (सिंगार) का इज़्हार करती हुई न निकलें।

जाहिलियत के ज़माने में औरतें सज संवरकर बग़ैर पर्दा निकलती थीं। अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियाँ) जो उम्मत की माएँ हैं जिनकी इज़्ज़त और पाकदामनी पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है, उनको यह हुक्म है। आम औरतों को तो इससे ज़्यादा एहतियात का हुक्म है।

औरतों के लिए इमारत (हुकूमत), दुनियावी ओहदा जायज़ नहीं

٨٩- عَنْ اَبِیْ بَکْرَةَ قَالَ لَمَّا بَلَغَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَهْلَ فَارِسَ قَدْ مَلَّکُوْا عَلَیْهِمْ بِنْتَ کِسْرٰی قَالَ لَنْ یُّفْلِحَ قَوْمٌ وَّلَّوْا اَمْرَهُمْ اِمْرَاَةً ط

(ترمذی، جلد۲، صفحہ۵۲، مشکوٰۃ، صفحہ۳۲۱، بخاری جلد۲، صفحہ۶۳۷)

तर्जुमाः— हज़रत अबू बक्रा रज़ि० ने कहा कि जब रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी ख़बर मिली कि फ़ारस

वालों ने किस्रा की बेटी को तख़्ते शाही पर बिठा दिया है तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, वह क़ौम कभी कामयाब नहीं हो सकती जिसने अपना हाकिम, वाली औ़रत को बनाया।

फ़ायदाः— इस हदीसे पाक में नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने औ़रतों को किसी क़ौमी मिल्ली बड़ी ज़िम्मेदारी जैसे हाकिम, क़ाज़ी, सदर, मैनेजर, प्रिन्सपल, तमाम वे औहदे जिसमें उसे क़ौम के दर्मियान फ़ैसले की नौबत आए मना क़रार दिया और फ़रमाया ऐसी क़ौम जो औ़रत को सरबराह बनाए कभी फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएगी।

इसकी असल वजह यह है कि औ़रत पर्दा, उसकी आवाज़ पर्दा, ग़ैर मर्दों से बातचीत करना, उनके बीच बैठना मना, तो औ़रत फिर किस तरह क़ौम और मिल्लत की निगहबानी और हुकूमत कर सकती है। फिर हदीसे पाक में उसे नाक़िसातुल अक़्ल (कम अक़्ल कहा गया है। अगर मान लिया जाए तालीम व तज्रिबे की वजह से समझ बूझ व अक़्ल भी आ जाए तब भी मर्दों पर उसे फ़ौक़ियत (बढ़ोतरी) नहीं हो सकती कि वह मर्दों पर हुकूमत करे। क़ुरआन पाक हैं

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ

तर्जुमाः— मर्दों को औ़रतों पर हाकिम और सरबराह बनाया गया है। (सूरः निसा, आयत 34)

इस से मालूम हुआ कि औ़रतों का किसी भी सियासी ओहदे पर आना, क़ौम और मिल्लत का सरबराह बनना, सदर, वज़ीरे आज़म, मैनेजर, प्रिन्सपल व इंचार्ज बनना शरअ़न नाजायज़ है कि इससे उसका पर्दा ख़त्म हो जाता है। अजनबी मर्दों में उठना बैठना, उनसे

बातें करना और बग़ैर पर्दे के कामों को करना होता है, ग़ैर मुस्लिमों की देखा देखी मुसलमान औरतों में भी ये गुनाह की बातें आ गई हैं। उनके लिए शरीअ़त कहाँ! उनकी जन्नत और मज़े का महल ही दुनिया है। हमारे लिए शरीअ़त है। ख़ुदा और रसूल का क़ानून है। उसके मातहत चलना है, ख़ुदा को हिसाब देना है, उसकी पैशी में हाज़िर होना है। ख़ुदा के लिए तमाम दुनिया के औहदों और मुलाज़मत को अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करने के लिए छोड़ दो, कल जन्नत में मज़े से हुकूमत करो, वर्ना बेपर्दगी की सज़ा बर्दाश्त करनी होगी। रोज़ी-रोटी की ज़रूरत हो तो घरेलू काम करके ज़िन्दगी गुज़ार लो या शौहर हो तो उसकी कमाई पर सब्र कर लो।

मोटे दुपट्टे का हुक्म

٩٠ — عَنْ اُمِّهٖ (عَلْقَمَةَ) قَالَتْ دَخَلَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عَبْدِ الرَّحْمَانِ عَلٰى عَآئِشَةَ وَعَلَيْهَا خِمَارٌ رَّقِيْقٌ فَشَقَّتْهُ عَآئِشَةُ وَكَسَتْهَا خِمَارًا كَثِيْفًا۔

(مؤطا امام مالک، مشکوۃ، صفحہ ٣٧٧)

तर्जुमाः— हज़रत हफ़सा रज़ि० बिन्त-ए-अब्दुर्रहमान हज़रत आयशा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गई तो उनपर बारीक दुपट्टा था। हज़रत आयशा रज़ि० ने उसे फाड़ दिया और मोटा दुपट्टा उनको पहना दिया।

फ़ायदाः— ऐसा बारीक दुपट्टा इस्तेमाल करना जिससे बाल और बदन की रंगत नज़र आए, सख़्त मना और नाजायज़ है। इसलिए हज़रत आयशा रज़ि० ने गुनाह से बचाने के लिए उसे फाड़ डाला। मालूम हुआ कि माहौल में बड़ी और नेक औरतों को तंबीह के लिए

ऐसा करना ठीक है और उसके बजाए अपनी तरफ़ से जितनी गुंजाइश हो, मोटा दुपट्टा दे दे।

दुपट्टा कैसा हो?

٩١- عَنْ عَآئِشَةَ قَالَتْ يَرْحَمُ اللّٰهُ نِسَآءَ الْمُهَاجِرَاتِ الْاُوَلِ لَمَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ "وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ" شَقَقْنَ بِرِدَآئِهِنَّ فَاخْتَمَرْنَ بِهٖ ط (بخاری، صفحہ ۷۰۰)

तर्जुमाः– हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं, उन अव्वलीन मुहाजिर (सबसे पहले हिजरत करने वाली) औरतों पर ख़ुदा की रहमतें नाज़िल हों, जब यह आयत وَلْيَضْرِبْنَ...الخ (कि अपने सीनों पर दुपट्टा डाल लिया करें) अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाई तो उन औरतों ने अपनी (मोटी) चादरों को काटकर दुपट्टा बना लिया। (और ज़रा सोच विचार नहीं किया)

फ़ायदाः– ऐसा दुपट्टा जिससे बाल, बदन की खाल नज़र आए, बदन और उसका रंग ज़ाहिर हो, पहनना जायज़ नहीं, आजकल नई तहज़ीब में दुपट्टा या तो बिलकुल ख़त्म हो गया है या है तो नुमाइश के तौर पर बारीक छोटा सा दुपट्टा जिससे न सतर होता है, न पर्दा। उससे तो नमाज़ भी ठीक नहीं होती। कुछ औरतें नमाज़ के वक़्त तो मोटा दुपट्टा इस्तेमाल करती हैं। बाक़ी वक़्त में बारीक। अगर घर में शौहर के अलावा पर्दे वाले शख़्स जैसे देवर, ससुर वग़ैरह हों तो यह तरीक़ा भी जायज़ नहीं।

बारीक साड़ी और कुर्ता जम्पर पहनने वाली जन्नत की खुश्बू भी न पाएगी

۹۲- عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ صِنْفَانِ مِنْ اَهْلِ النَّارِ لَمْ اَرَهُمَا قَوْمٌ مَّعَهُمْ سِیَاطٌ کَاَذْنَابِ الْبَقَرِ یَضْرِبُوْنَ بِهَا النَّاسَ وَنِسَآءٌ کَاسِیَاتٌ عَارِیَاتٌ مُمِیْلَاتٌ مَّآئِلَاتٌ رُءُوْسُهُنَّ کَاَسْنِمَةِ الْبُخْتِ الْمَآئِلَةِ لَا یَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلَا یَجِدْنَ رِیْحَهَا وَاِنَّ رِیْحَهَا لَتُوْجَدُ مِنْ مَّسِیْرَةِ کَذَا وَکَذَا ط (مسلم، جلد۲، صفحہ۲۰۴)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जहन्नम के दो गिरोह को मैंने अब तक नहीं देखा (कि उस दौर में उनका पाया जाना नहीं हुआ था) एक गिरोह उनका जिनके पास बेलों की दुम की तरह कोड़े होंगे जिससे लोगों को ज़ुल्मन मारेंगे। दूसरी जमाअ़त उन औ़रतों की होगी जो (ज़ाहिर में तो) कपड़े पहने हुए होंगी मगर नंगी होंगी, मर्दों को मुतवज्जेह करने वाली और उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होने वाली होंगी। उनके सर ऊँट के कौहान की तरह होंगे जो झुके हुए होंगे। (यानी सर के बालों को पीछे से जमा करके ऊपर को फ़ैशन के तौर पर उठा दिया करेंगी) ये औ़रतें न जन्नत में दाख़िल होंगी और न ही जन्नत की ख़ुश्बू पा सकेंगी। हालांकि जन्नत की ख़ुश्बू इतनी इतनी दूर से (यानी पाँच सौ साल की दूरी से) आती है।

फ़ायदाः— अल्लाह अल्लाह कितनी वईद है। किस क़द्र डर और ख़ौफ़ की बात है कि बारीक कपड़ों की वजह से जन्नत तो दूर की बात, जन्नत की ख़ुशबू तक नसीब नहीं। प्यारी माओ और बहनो!

ज़रा ख़ुदा का ख़ौफ़ करो, अपने ऊपर रहम करो, आज ऐसे लिबास में थोड़ा नफ़्स को मज़ा मिलता है। अच्छा लगता है कि लोग देखेंगे। यह तो ज़िना की तरफ़ लोगों को दावत देना और बुलाना है। आज का थोड़ा ही मज़ा तुमको जन्नत से ही नहीं बल्कि जन्नत की ख़ुश्बू से भी महरूम कर दे तो कैसी हलाकत की बात है।

बारीक दुपट्टा जिससे रंगत नज़र आए मना है

٩٣– عَنْ عَآئِشَةَ اَنَّ اَسْمَآءَ بِنْتَ اَبِیْ بَكْرٍ دَخَلَتْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهَا ثِيَابٌ رِقَاقٌ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَقَالَ يَآ اَسْمَآءُ اَنَّ الْمَرْاَةَ اِذَا بَلَغَتِ الْمَحِيْضَ لَنْ يَّصْلُحَ اَنْ يُّرٰى مِنْهَآ اِلَّا هٰذَا وَهٰذَا وَاَشَارَ اِلٰى وَجْهِهٖ وَكَفَّيْهِ ط (ابوداؤد، مشکوٰۃ، صفحہ ٣٧٧)

तर्जुमा:– हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत अस्मा रज़ि० बिन्ते अबी बक्र आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाईं और उनके जिस्म पर बारीक कपड़ा था। आप सल्ल० ने उनसे बेरुख़ी बरती और फ़रमाया, ऐ असमा रज़ि० लड़की जब बालिग़ हो जाए तो उसका जिस्म नज़र न आए, हाँ मगर यह और यह। और आप सल्ल० ने इशारा चेहरे और हाथ की तरफ़ किया।

फ़ायदा:– ख़्याल रहे कि बच्ची जब बालिग़ होने के क़रीब हो जाए तो उसके ज़िम्मे पर्दे के सारे हुक्म लागू हो जाते हैं। बहुत ही बेग़ैरती की बात है कि हमारे माहौल में उसके लिए पर्दा नहीं समझा जाता। ख़ासकर स्कूल जाने वाली लड़कियाँ, बालिग़ होने की पहचान

शुरू हो चुकी है या बालिग़ हो चुकी हैं और वे बग़ैर बुरक़े के घर से बाहर निकलती हैं। कुछ इलाक़ों में तो देखा गया है कि शादी से पहले बुरक़े को ज़रूरी नहीं बल्कि बुरा समझा जाता है। यह बड़े गुनाह की बात है। आजकल जारजट, मैकरो और न मालूम किस किस नाम से दुपट्टा निकला है जिसके बारीक होने की वजह से खाल की रंगत नज़र आती है। उसका पहनना बड़ा गुनाह है। ज़्यादा बारीक व पतला हो तो नमाज़ भी नहीं होती। खुदा की पनाह। घर में रहते हुए चेहरे और हाथ के अलावा बदन के किसी हिस्से का नज़र आना बड़े गुनाह की बात है। आमतौर पर गर्दन, गला और कलाइयों के छुपाने में बड़ी ग़फ़लत होती है। इससे एहतियात की ज़रूरत है कि गुनाह दोज़ख़ की आग में जाने की वजह न बन जाए।

बारीक कपड़ा हो तो नीचे अस्तर लगाइये

٩٤– عَنْ دِحْيَةَ بْنِ خَلِيْفَةَ قَالَ اَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقُبَاطِيٍّ فَاَعْطَانِيْ مِنْهَا قُبْطِيَّةً فَقَالَ اِصْدَعْهَا صَدْعَيْنِ فَاقْطَعْ اَحَدَهُمَا قَمِيْصًا وَاَعْطِ الْاٰخَرَ اِمْرَاَتَكَ تَخْتَمِرُ بِهٖ فَلَمَّا اَدْبَرَ قَالَ وَأْمُرْ اِمْرَاَتَكَ اَنْ تَجْعَلَ تَحْتَهٗ ثَوْبًا لَّا يَصِفُهَا ط

(ابوداؤد، مشکوٰۃ، صفحہ ۳۷۶)

तर्जुमाः– हज़रत दिह्या बिन ख़लीफ़ा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक क़िबती कपड़ा आया, (जो बारीक सफ़ेद होता था) आप सल्ल० ने वह कपड़ा मुझे दिया और फ़रमाया, इस के दो टुकड़े कर ले, एक का ख़ुद

कुर्ता बना लो, दूसरा अपनी बीवी को दे दो कि इसका दुपट्टा बना ले। जब वह जाने लगे तो आप सल्ल० ने फ़रमायाः अपनी बीवी से कह देना कि वह इसके नीचे दूसरा कपड़ा असतर लगाए ताकि बदन की बनावट मालूम न हो।

फ़ायदाः— औरतों का जिस्म पर्दा है। उसकी बनावट और रंगत का गै़र मर्दों पर ज़ाहिर होना हराम है और बड़े गुनाह की बात है। बारीक कपड़ा पहनना, बारीक साड़ी का पहनना, बारीक दुपट्टा जिससे बाल और बदन की रंगत नज़र आए हराम है। ऐसी औरत को आख़िरत में नंगी होने की सज़ा दी जाएगी। कुछ इलाक़ों में कुछ औरतें इतनी बारीक साड़ी पहनती हैं कि बदन की खाल और उसकी रंगत मालूम होती है। उनको अच्छा लगता है कि उनका बदन लोग देखें और उनको वे अच्छी लगें। अल्लाह अल्लाह! बड़ी हलाकत की बात है। ऐसी औरत जन्नत की बू भी ना पाएगी। ऐसी औरत को बहुत सख़्त सज़ा मिलेगी। ऐसी औरत मर्दों को आँख के ज़िना की दावत देती है तो यह कितनी बुरी बात है।

ऐसा बारीक लिबास न पहने, अगर कभी ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो जाए, कपड़ा बारीक हो या जालीदार हो तो अन्दर से मोटा अस्तर लगाएं ताकि गुनाह से बच जाएं। आज पर्दे का एहतिमाम कर लो, कल मज़े से बिला रोक टोक के जन्नत में आज़ाद फिरोगी। जैसा चाहोगी पहनोगी, जहाँ चाहोगी जाओगी।

औरतों को पाजामा पहनने पर रहमत व मग़्फ़िरत की दुआ

٩٥– عَنْ عَلِيٍّ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ كُنْتُ قَاعِدًا عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَقِيْعِ فِيْ يَوْمٍ دَجْنٍ مَطَرٍ فَمَرَّتْ اِمْرَأَةٌ.... مَعَهَا مُكَاذِىْ
فَهَوَتْ يَدُ الْحِمَارِ فِيْ وَهْدَةٍ مِّنَ الْاَرْضِ فَسَقَطَتِ الْمَرْأَةُ فَاَعْرَضَ
النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْهَا بِوَجْهِهٖ فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّهَا
مُتَسَرْوِلَةٌ فَقَالَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُتَسَرْوِلَاتِ مِنْ اُمَّتِيْ ثَلَاثًا يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
اتَّخِذُوا السَّرَاوِيْلَاتِ فَاِنَّهَا مِنْ اَسْتَرِ ثِيَابِكُمْ وَحَصُّوْا بِهَا نِسَآئَكُمْ اِذَا
خَرَجْنَ... قَالَ الشَّيْخُ اَحْمَدُ ... رَحِمَ اللّٰهُ الْمُتَسَرْوِلَاتِ ط

(مجمع،جلد۵،صفحہ۱۲۲،آداب بیہقی،صفحہ۳۵۸)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत है कि सख़्त बारिश के मौक़े पर मैं आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास मक़ामे बक़ी (जगह का नाम) में बैठा था कि एक औरत गुज़री जिस पर बोझ था। उसका गधा ज़मीन के गढे में गिर गया जिससे वह औरत गिर गई तो आप सल्ल० ने फ़ौरन उसकी तरफ़ से रुख़ फैर लिया (कि सतर पर निगाह न पड़ जाए) तो हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल० वह तो पाजामा पहने हुए है। इस पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत में पाजामा पहनने वाली औरतों की बख़्शिश फ़रमा। और आप सल्ल० ने यह दुआ तीन बार दी। ऐ लोगो! पाजामे का इस्तेमाल करो। यह तुम्हारे कपड़ों में सबसे ज़्यादा सतर (पर्दे) की वजह है। औरतों को तर्ग़ीब दो कि जब वे बाहर निकलें तो पाजामा पहनें। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने पाजामा पहनने वाली औरतों पर रहमत की दुआ फ़रमाई।

औरतों का पाजामा टख़ने से कितना नीचा रहे

٩٦– عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَبَرَ لِفَاطِمَةَ مِنْ عَقِبِهَا شِبْرًا وَّقَالَ هٰذَا ذَيْلُ الْمَرْاَةِ ط (مجمع الزوائد، جلد ۵، صفحہ ۱۲۷)

तर्जुमाः– हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को ऐड़ी की तरफ़ से एक बालिश्त ज़्यादा की इजाज़त दी और फ़रमाया, औरतों का कपड़ा इतना लटके यानी टख़ने को छुपा ले।

फ़ायदाः– औरत की पिंडली और टख़ना सतर में दाख़िल है। इसलिए उसका छुपाना ज़रूरी है। अगरचे पैर के खोलने की इजाज़त है लेकिन जहाँ औबाश आज़ाद ज़ेहन के लोग हों तांकने झांकने की आदत हो, ऐसे मुक़ाम पर औरत को अपना क़दम और पैर भी मोज़े से या कपड़ा ज़्यादा लटकाकर छुपा लेना लाज़िम है वैसे भी इस बुरे और फ़ित्ने के दौर में पैर में मोज़ा और हाथ में स्याह (काले) दस्ताने पहनकर निकलें।

औरतों को टख़नों का छुपाना लाज़िम है इसलिए पाजामा वग़ैरह लटका लेना चाहिए ताकि बेपर्दगी न हो। ख़्याल रहे कि जब टख़ने और पैर के छुपाने का यह एहतिमाम है तो चेहरा और कलाइयों के छुपाने की कितनी ताकीद होगी। अकसर बुर्क़ा पहनने के बाद भी चेहरा और ऊपरी हिस्से के छोटा होने की वजह से कलाइयाँ खुली रहती हैं, यह गुनाह की बात है। अब चेहरा और कलाइयों का खुलना बुर्क़े के फ़ैशन में दाख़िल है। ख़ुदा की पनाह! पर्दे के नाम

से भी शैतान और नफ़्स बेपर्दगी करा रहा है।

टख़्नों से नीचे कपड़ा लटकाना औरतों को मना नहीं बल्कि हुक्म है

٩٧– عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ جَرَّ ثَوْبَهٗ خُيَلَآءَ لَمْ يَنْظُرِ اللّٰهُ اِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَقَالَتْ اُمُّ سَلْمَةَ فَكَيْفَ تَصْنَعُ النِّسَآءُ بِذُيُوْلِهِنَّ قَالَ يُرْخِيْنَ شِبْرًا فَقَالَتْ اِذًا اَنْكَشَفَ اَقْدَامُهُنَّ قَالَ فَيُرْخِيْنَ ذِرَاعًا لَّا يَزِدْنَ عَلَيْهِ قَالَ التِّرْمِذِىْ وَفِى الْحَدِيْثِ رُخْصَةٌ لِّلنِّسَآءِ فِىْ جَرِّ الْاِزَارِ لِاَنَّهٗ يَكُوْنُ اَسْتَرَلَهُنَّ ط (ترمذی، صفحہ ٣٠٣)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो तकब्बुर व बड़ाई की वजह से अपने कपड़े को टख़्ने से नीचे लटकाएगा ख़ुदा-ए पाक क़ियामत के दिन उसपर निगाहे करम नहीं फ़रमाएगा। इसपर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा, औरतें अपना कपड़ा किस तरह रखेंगी। आप सल्ल० ने फ़रमायाः वह बालिश्त भर ज़्यादा रखेंगी। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा, अगर इससे भी पैर खुले रहें तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, फिर हाथ भर नीचे रखें इससे ज़्यादा नहीं। इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं, इस हदीस में औरतों को टख़्ने से नीचे कपड़ा रखने का हुक्म है ताकि उनके लिए ज़्यादा सतरपोशी हो सके।

फ़ायदाः– जानना चाहिए कि हदीसे पाक में टख़्नों से नीचे चाहे कोई कपड़ा हो पहनना मना है और इसकी सख़्त वईद है। यह वईद सुनकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० को शुब्ह हुआ कि औरतें इस

हुक्म में दाख़िल होंगी तो उनका टख़ना खुला रहेगा तो इससे पिंडली का हिस्सा खुल जाएगा। इस पर आप सल्ल० से सवाल किया कि औ़रतों को क्या हुक्म होगा तो आप सल्ल० ने बता दिया कि औ़रतें इस हुक्म में दाख़िल नहीं वे मर्दों से एक बालिश्त ज़्यादा लटकाएंगी जिससे टख़ना उनका छुप जाएगा। कुछ जाहिल लोग औ़रतों को भी मर्दों की तरह टख़ने से नीचे पहनने को मना कर देते हैं यह जहालत है।

औ़रतों को जूती का इस्तेमाल नाजायज़ है

٩٨– عَنِ ابْنِ اَبِیْ مُلَیْکَۃَ قَالَ قِیْلَ لِعَآئِشَۃَ اِنَّ امْرَأَۃً تَلْبَسُ النَّعْلَ قَالَتْ لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ الرَّجُلَۃَ مِنَ النِّسَآءِ ط

(ابوداؤد، مشکوٰۃ، صفحہ ۳۸۲)

तर्जुमाः– इब्ने अबी मुलैका से मरवी है कि हज़रत आ़यशा रज़ि० से पूछा गया कि औ़रत जूता पहन सकती है? उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्ल० ने लानत फ़रमाई है जो औ़रतें मर्द की मुशाबहत इख़्तियार करती हैं।

फ़ायदाः– जूती का इस्तेमाल औ़रतों के लिए मना है। उनके लिए चप्पल है। जूते के इस्तेमाल मर्दों के लिए ख़ास है। और जूती का इस्तेमाल ग़ैर मुस्लिमों, यहूद, नसारा की आ़दत में से है। औ़रतों को ऐसा पहनना और ओढ़ना जो मर्दों से मिलता हो हराम है। ख़ुदा व रसूल सल्ल० की लानत है। बहुत सी सही हदीसों में है कि उन औ़रतों पर लानत है जो मर्दों की मुशाबहत इख़्तियार करती हैं।

कभी कभी सर्दियों के दिनों में लड़कियाँ और औ़रतें जूती का इस्तेमाल कर लेती हैं। इसी तरह स्कूली लड़कियाँ जूतियों का इस्तेमाल करती हैं यह सब नाजायज़ है। इस्लामी घरानों में यह माहौल ग़ैर मुस्लिमों से आया है उनकी देखा देखी जिस तरह बहुत से नाजायज़ काम हमारे घरानों में दाख़िल हो गये हैं इसी तरह जूती का इस्तेमाल है।

प्यारी बहनो! ग़ैरों की आ़दत और तरीक़े को इख़्तियार करके ख़ुदा की लानत में गिरफ़्तार मत होओ। हमारा मज़हब मुकम्मल क़ानून, तहज़ीब तौर तरीक़े रखता है। ख़ुदा और रसूल सल्ल० के तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो। जिसका तरीक़ा इख़्तियार करोगी, क़ियामत में उसी के साथ हश्र होगा। ख़ुदा की मर्ज़ी और उसके क़ानून पर आज चल लो, कल ख़ुदा की बनाई हुई जन्नत के मज़े लूटो।

घुंघरूदार ज़ेवर पहनने वाली औ़रत पर लानत और ख़ुदा का ग़ज़ब (गुस्सा)

٩٩– عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ مَرْفُوْعًا اِنَّ اللّٰهَ یَبْغُضُ صَوْتَ الْخَلْخَالِ كَمَا یَبْغُضُ الْغِنَآءَ وَیُعَاقِبُ صَاحِبَهٗ كَمَا یُعَاقِبُ الزَّامِرَ وَلَا تَلْبَسْ خَلْخَالًا ذَاتَ صَوْتٍ اِلَّا مَلْعُوْنَةٌ ط (دیلمی، کنز العمال، جلد۱۲، صفحہ۳۹۳)

फ़ायदाः— औ़रत ख़ुद भी पर्दा है, औ़रत की आवाज़ भी पर्दा है और औ़रत के जिस्म से मुताल्लिक़ तमाम उमूर पर्दा है। हर ऐसी आवाज़ जो मर्द को औ़रत की तरफ़ मुतवज्जेह कर दे, लोग उसकी

तरफ़ झांकने लग जाएं उसकी आँख और दिल को मुतवज्जेह कर दे, दुरुस्त नहीं। इसीलिए ऐसा लिबास जिससे अजनबी मर्द की तवज्जोह हो जाए और उसके देखने का मैलान हो जाए जायज़ नहीं।

बजने वाला ज़ेवर यह जानवरों की ख़ासियत है कि उसके गले या पैर में घुंधरु डाल दिया जाता है ताकि वह उससे मस्त रहे। इनूसान की शराफ़त उससे बालातर है।

क़ुरआन पाक में भी وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ में ऐसे ज़ेवर को पहनने से मना किया गया है। इस आयत की तफ़सीर में है, ज़ेवर के अन्दर कोई ऐसी चीज़ डाली जाए जिससे वह बजने लगे या एक ज़ेवर दूसरे से टकराकर बजे या पाँव ज़मीन पर इस तरह मारे जिससे ज़ेवर की आवाज़ निकले और ग़ैर मेहरम मर्द सुनें। ये सब चीज़ें इस आयत की रु से नाजायज़ हैं। इसी वजह से बहुत से फ़ुक़हा ने फ़रमाया, जब ज़ेवर की आवाज़ ग़ैर मेहरमों को सुनाना इस आयत से नाजायज़ साबित हुआ तो खुद उस औरत की आवाज़ का सुनाना इससे भी ज़्यादा सख़्त और नाजायज़ होगा।

(मआरिफ़, पारा 18, पेज 118)

अकसर देहाती औरतें ऐसी चीज़ें हाथ और पैर में पहनती हैं जिनसे आवाज़ आती है, यह ठीक नहीं।

ज़ेवरों की ज़कात एहतिमाम और ताकीद से निकालें

١٠٠ — عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ أَتَتَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِيْ أَيْدِيْهِمَا سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ

فَقَالَ لَهُمَآ اَتُؤَدِّيَانِ زَكٰوتَهٗ فَقَالَتَا لَا فَقَالَ لَهُمَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَتُحِبَّانِ اَنْ يُّسَوِّرَكُمَا اللّٰهُ بِسِوَارَيْنِ مِنْ نَّارٍ قَالَتَا لَا قَالَ فَاَدِّيَا زَكٰوتَهٗ ط

(ترمذی،صفحہ۱۳۸،مشکوٰۃ،صفحہ۱۶۰،نسائی،صفحہ۳۴۳)

तर्जुमाः— हज़रत अम्र बिन शुऐब रज़ि० की रिवायत में है कि दो औरतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आईं और उनके हाथों में सोने के कंगन थे। आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग इसकी ज़कात निकालती हो। उन्होंने रसूले पाक सल्ल० से कहा नहीं, इस पर रसूले पाक सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे ये दोनों कंगन जहन्नम की आग के हो जाएँ। उन्होंने कहा नहीं, आप सल्ल० ने फ़रमायाः इसकी ज़कात दिया करो।

फ़ायदाः— अकसर ज़कात के मुताल्लिक़ औरतों से बड़ी बेपरवाही होती है। निसाब के बराबर अकसर ज़ेवरात की मिक़्दार हो जाती है। न तो औरतें क़ुरबानी करती हैं और न ज़कात निकालती हैं। अगर निकाली भी तो अंदाज़े से। ज़कात वाजिब होने के बाद न निकलाने पर सख़्त वईद है। जिसपर ज़कात वाजिब हुई है न निकालने की वजह से से उसे आग बनाकर बदन में दाग़ा जाएगा। ख़ुदा की पनाह! कैसी सख़्त सज़ा मिलेगी।

प्यारी माओ और बहनो! अपने माल और ख़ासकर ज़ेवरात को देख लो। साढ़े बावन तोले चाँदी की क़ीमत का सामान या सोने चाँदी का ज़ेवर निसाब के बराबर है तो ज़कात अदा करना वाजिब है। अपनी चीज़ों का हिसाब लगा ले और ज़कात निकाल दे। अगर अपने पास रुपया न हो तो शौहर से कहे वह उसकी ज़कात निकाल दे। अगर शौहर न निकाले और रुपया ज़कात के लिए न हो तो

कुछ ज़ेवर को बेचकर ज़कात निकाले। ग़फ़लत न करे कि कल क़यामत में रुसवाई हो और दोज़ख़ मे जलने की नौबत आए।

ज़कात न अदा करने पर जहन्नम की वईद

١٠١ — عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَاى فِيْ فَتْخَاتٍ مِّنْ وَّرَقٍ فَقَالَ مَا هٰذَا يَا عَائِشَةُ فَقُلْتُ صَنَعْتُهُنَّ اَتَزَيَّنُ لَكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ اَتُؤَدِّيْنَ زَكَاتَهُنَّ قُلْتُ لَا اَوْمَا شَاءَ اللّٰهُ قَالَ هِيَ حَسْبُكِ مِنَ النَّارِ ط

(ابوداؤد، صفحہ ۲۱۸، ترغیب، جلد ۱، صفحہ ۵۵۲)

عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ دَخَلْتُ اَنَا وَخَالَتِيْ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْنَا اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ فَقَالَ لَنَا اَتُعْطِيَانِ زَكٰوتَهٗ قَالَتْ فَقُلْنَا لَا فَقَالَ اَمَا تَخَافَانِ اَنْ يُّسَوِّرَكُمَا اللّٰهُ اَسْوِرَةً مِّنْ نَّارٍ اَدِّيَا زَكٰوتَهٗ ط

(ترغیب، جلد ۱، صفحہ ۵۵۲)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० नबी-ए करीम सल्ल० की पाक बीवी फ़रमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो मेरे हाथ में चाँदी के छल्ले देखे। पूछा यह क्या है? आयशा रज़ि० ने कहा, मैंने इन्हें ज़ीनत के लिए बनवाया है ताकि आप सल्ल० को दिखाऊँ। तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, इनकी ज़कात निकालती हो कि नहीं? मैंने कहा नहीं, या जो अल्लाह ने चाहा। तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारे जहन्नम जाने के लिए यह काफ़ी है।

हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं और ख़ाला रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और हमारे हाथों में सोने का कंगन था। आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम दोनों इसकी ज़कात निकालती हो? हमने कहा नहीं। तो आप सल्ल० ने फ़रमाया? क्या तुम ख़ौफ़ नहीं करतीं कि ख़ुदा-ए पाक इसकी वजह से आग के दो कंगन पहनाए, इनकी ज़कात अदा किया करो।

फ़ायदाः– सोना चाँदी किसी भी शक्ल में हो, चाहे रोज़ाना इस्तेमाल के ज़ेवर की शक्ल में हो, निसाब की मिक़्दार हो तो उसकी भी ज़कात निकालनी फ़र्ज़ है। अकसर औ़रतें इसमें बहुत बेपरवाही करती हैं। जिस्म, बक्स, लाकर्स में ज़ेवरात भरे पड़े रखती हैं मगर उनकी ज़कात नहीं निकालतीं। सालों गुज़र जाते हैं, ज़कात का ख़्याल भी नहीं आता। हिन्दुस्तान के माहौल में आम तौर से औ़रतों के पास निसाब के बराबर ज़ेवर पहुँच जाता है मगर वे इस पर ध्यान नहीं देतीं इस तरह वे अपने को जहन्नम का मुस्तहिक़ बनाती हैं। अगर ज़कात अदा करने की रक़म न हो तो शौहर से मांगें कि वह ज़कात निकाल दिया करे। अगर उससे न हो सके तो कोई सामान या ज़ेवर ही को ज़कात की क़ीमत के बराबर बेचकर ज़कात निकालें। ज़कात न निकाल सकती हों तो ज़ेवर निसाब से कम कर दें। ताकि कल दोज़ख़ में ख़ुद को जलने और राख़ होने से बचा सकें। आज ज़ेवरों की ज़कात वाजिब हो तो किसी आ़लिम से पूछकर निकाल दो। कल जहन्नम से बच जाओगी।

औरतों को नफ़्ली सद्क़ात व ख़ैरात का हुक्म

١٠٢ – عَنْ عَآئِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا عَآئِشَةُ اِسْتَتِرِىْ مِنَ النَّارِ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍط

(ترغیب،جلد۲،صفحہ۱۰)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० से मरवी है कि उनसे रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ आयशा! जहन्नम से बचाओ हासिल करो चाहे खजूर की गुठली ही सही।

फ़ायदाः— माहौल में औरतों का मिज़ाज तो कुछ इबादत रोज़ा, नमाज़ का देखा जाता है, मगर माली इबादत सद्क़ा, ख़ैरात का मिज़ाज और माहौल बिलकुल नहीं के बराबर है। पहली बात तो यह कि औरतों के पास माल वग़ैरह कम होता है और जो कुछ होता है तो भी ख़र्च नहीं करतीं। उनके ये सद्क़ात व ख़ैरात बेटी, नवासी, पोती वग़ैरह ही तक महदूद रहते हैं।

इसलिए औरतों को चाहिए कि वाजिब ज़कात के अलावा जितनी गुंजाइश हो थोड़ा बहुत आम सद्क़ा ख़ैरात करती रहें। मस्जिद, मद्रसे और ग़रीबों और एहले इल्म हज़रात को कुछ न कुछ देती रहें। और जब दें तो हरगिज़ यह न चाहें कि वह हमें उसका बदला दें। इससे ख़ैरात की तौफ़ीक़ नहीं होती। सद्क़ा, ख़ैरात को जहन्नम से छुटकारे में बहुत दख़ल है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने औरतों को ताकीद की है कि मामूली ख़ैरात ही सही दोज़ख़ के अज़ाब से निजात हासिल करो। अरब के माहौल में गुठली बहुत हक़ीर और

मामूली चीज़ होती है। कभी कभी अच्छे और उम्दा के बहाने से बिलकुल ख़ैरात से महरुम रह जाता है। इससे मना किया गया है जैसे नया कपड़ा न हो सके तो पुराना कपड़ा दे दे। पूरा खाना न हो सके तो थोड़ा ही सही, सिर्फ़ रोटी ही सही, सालन ही सही। मतलब यह है कि मामूली और कम की परवाह न करे। प्यारी माओ, बहनो! आज कुछ अल्लाह वास्ते ख़र्च करके कल अपने को जहन्नम से बचा लो।

औरतों को सदक़े की तर्ग़ीब (उभारना)

١٠٣ – عَنْ زَيْنَبَ اِمْرَأَةِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَتْ خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا مَعَاشِرَ النِّسَآءِ تَصَدَّقْنَ وَلَوْ مِنْ حُلِيِّكُنَّ فَاِنَّكُنَّ اَكْثَرُ اَهْلِ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط (ترمذی صفحہ ۱۳۸، مشکوٰۃ، صفحہ ۱۶۰، بخاری صفحہ ۱۹۸)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि० की बीवी ज़ैनब रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हम औ़रतों की जमाअ़त को ख़िताब फ़रमाते हुए कहाः कि ऐ औ़रतो! सद्क़ा करो, अगरचे ज़ेवर से हो क्योंकि क़यामत के दिन ज़्यादा तर जहन्नम में जाने वाली औ़रतें होंगी।

फ़ायदाः— बहुत सी हदीसों में औ़रतों को सद्क़ा की बड़ी तर्ग़ीब व ताकीद की गई है कि ज़्यादातर औ़रतों का मिज़ाज सद्क़ा ख़ैरात का नहीं होता है। ख़ासकर हमारे मुल्के में तो और भी कम है जिसकी कई वजह हैं। जिसकी एक वजह सदक़ा ख़ैरात के फ़ज़ाइल और उसके जो दीनी व दुनियावी फ़ायदे हैं वे उनको जानती नहीं,

उनमें न तो दीनी बयान होता है और न उनका दीनी किताबों के पढ़ने और देखने का मिज़ाज होता है। बच्चों और घरेलू कामों से उनको मौक़ा भी कहाँ मिलता है। एक अहम वजह यह है कि हिन्दुस्तान की औरतों के पास अपना रुपया भी कम होता है। शौहर के इख़्तियार में सब कुछ होता है। अगर अपनी रक़म होती भी है तो उनका मिज़ाज सद्क़ा ख़ैरात का नहीं होता है। इसमें हमारे मुल्क और माहौल को भी दख़्ल है। आप सल्ल० ने इसी मिज़ाज जिसकी असल वजह कंजूसी है कि इस्लाह फ़रमाते हुए सद्क़ात व ख़ैरात की ताकीद की है ताकि उसका सवाब हासिल करें। औरतों से गुनाह भी कम नहीं होते। तौबा, आमाले सालिहा की नौबत कम आती है। और सद्क़ा जहन्नम की आग से निजात देता है। खुदा के ग़ज़ब को बुझाता है। इसलिए आप सल्ल० ने दोज़ख़ से बचने की तर्कीब बताई कि सद्क़ा व ख़ैरात ख़ूब करो। थोड़ा ही दो मगर दो ताकि गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो सके। आप सल्ल० की तर्ग़ीब से उस वक़्त की औरतों ने अपने ज़ेवरात कान से निकालकर दे दिए, आज ज़ेवरात नहीं दे सकतीं तो मामूली सी चीज़ कम से कम अपने जोड़े ही दे दें। आज सद्क़ा कर लो, कल जहन्नम की आग से बच जाओगी।

बीबी ज़ैनब रज़ि० की ख़ैरात का वाक़िआ

104. हज़रत आयशा रज़ि० रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुछ बीवियों ने मालूम किया कि आपके बाद हममें से कौन सबसे पहले आप सल्ल० से मिलेगी। आप सल्ल० ने फ़रमायाः तुममें से जिसके हाथ सबसे ज़्यादा लम्बे

होंगे। उन्होंने लकड़ी से हाथ नापा तो हज़रत सौदा रज़ि० का हाथ लम्बा निकला। (वफ़ात सबसे पहले हज़रत ज़ैनब रज़ि० की हुई) तो बाद में उन्होंने समझा कि मतलब इससे सदक़ा ख़ैरात करना था। वह सदक़ा ख़ैरात दूसरी तमाम बीवियों से ज़्यादा देती थीं।

(मिश्कात, पेज 165)

हज़रत ज़ैनब रज़ि० की सवानेह में है कि हज़रत आयशा रज़ि० ने उनकी वफ़ात पर कहा था, अफ़सोस आज ऐसी औरत गुज़र गई जो बड़ी पसन्दीदा औसाफ़ वाली, इबादत गुज़ार और यतीमों और बेवाओं का ठिकाना थी। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने उनका सालाना ख़र्च भेजा तो सब माल पर एक कपड़ा डलवा दिया और बरज़ा बिन्ते राफ़ेअ् रज़ि० से कहा कि इस कपड़े के नीचे से हाथ डालकर फ़्लाँ यतीम को दे आओ। इसी तरह बग़ैर गिने मुट्ठी भर भरकर लोगों को दे दिया। आख़िर में कुछ बचा तो बरज़ा के हवाले कर दिया और अपने लिए कुछ नहीं रखा और दुआ की कि यह माल फिर न आए। एक बार हज़रत उमर रज़ि० ने बारह हज़ार दिरहम भेजे कि अपनी ज़रूरतों में ख़र्च करें। मिलते ही सबको बांट दिया। हज़रत उमर रज़ि० को मालूम हुआ तो एक हज़ार फिर भेज दिए और कहा कि इन्हें अपनी ज़रूरतों में ख़र्च करें, हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने उन्हें भी बांट दिया। (सीरतुल मुस्तफ़ा, पेज 324)

दस्तकारी (हाथ का हुनर) से माल हासिल करना और सदक़ा करना

हज़रत ज़ैनब रज़ि० सदक़ा ख़ैरात की इस दर्जा शौक़ीन थीं कि दस्तकारी के ज़रिए जो माल हासिल करतीं उसे सदक़ा कर देतीं। उनके बारे में उनकी सौतन उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा, ज़ैनब बड़ी

नेक, रात को जगाकर इबादत करने वाली, बहुत रोज़े रखने वाली और दस्तकार थीं। जिसके ज़रिए कमाया हुआ माल सद्क़ा ख़ैरात कर देती थीं। (सीरतुल मुस्तफ़ा, पेज 324)

हदये की ताकीद और उसका सवाब

١٠٥ – عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ تَهَادُوْا تَحَابُّوْا ط

(فیض القدیر شرح جامع صغیر، جلد۲، صفحہ۲۰۳)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, आपस में एक दूसरे को हदया (तोहफ़ा) लिया दिया करो, इससे मुहब्बत होती है।

फ़ायदाः– आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ताकीद फ़रमाई है कि आपस में एक दूसरे को लिया दिया करो इससे ताल्लुक़ात अच्छे होते हैं। माभूली बात है मगर इसके बड़े फ़ायदे हैं। एक दूसरे से अच्छा बर्ताव और अच्छा ताल्लुक़ रहता है तो बहुत अच्छी बात है। जैसे कभी किसी को सालन भिजवा दिया, कुछ मीठा पकाया तो पड़ौसन या रिश्तेदार, बहन भाई वग़ैरह को भिजवा दिया। कोई चीज़ ज़्यादा आ गई तो किसी को भिजवा दी। इसमें कोई ज़्यादा एहतिमाम और परेशानी भी नहीं और अच्छे ताल्लुक़ात का बेहतरीन ज़रिया है। आज हमारे समाज और माहौल में ये बातें ख़त्म होती जा रही हैं। इसी वजह से ख़ैर कम होता जा रहा है।

क़र्ज़ देने का सवाब

١٠٦ – عَنْ اَنَسٍ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ

وَسَلَّمَ رَأَيْتُ لَيْلَةَ أُسْرِىَ بِىْ عَلٰى بَابِ الْجَنَّةِ مَكْتُوْبًا اَلصَّدَقَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا وَالْقَرْضُ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ ط (ترغیب، جلد۲، صفحہ۴۱)

तर्जुमाः– हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने मेराज की रात में जन्नत के दरवाज़े पर लिखा देखा कि सद्क़ा ख़ैरात का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ का सवाब अट्ठारह गुना।

फ़ायदाः– इससे मालूम हुआ कि क़र्ज़ का सवाब ज़्यादा है। क़र्ज़ में गिरानी या क़र्ज़ के अदा न हो सकने का डर होता है या ताल्लुक़ात के ख़राब होने का अंदेशा रहता है। इस वजह से उसका सवाब ज़्यादा है। औरतों को चाहिए कि अगर कोई क़र्ज़ मांगे और गुंजाइश हो तो ज़रूर दें ताकि इस अज़ीम (बहुत ज़्यादा) सवाब को पा सकें। संदूक़ में रखने से बहतर है कि ज़रूरतमंद को क़र्ज़ दे दे और सवाब पायें। अगर कोई ग़रीबी या परेशानी की वजह से न दे सके तो माफ़ कर देने का बहुत सवाब है। ऐसी औरत को अ़र्श का साया मिलने और जहन्नम से हिफ़ाज़त की बशारत है।

(तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 46)

शौहर पर ख़र्च करने का सवाब

١٠٧ – عَنْ زَيْنَبَ... فَقُلْتُ سَلْ لَنَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ يُجْزِى عَنِّىْ اَنْ اَتَصَدَّقَ عَلٰى زَوْجِىْ وَاَيْتَامٍ فِىْ حَجْرِىْ مِنَ الصَّدَقَةِ وَقُلْنَا لَا تُخْبِرْنَا قَالَتْ فَدَخَلَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ مَنْ هِىَ قَالَ زَيْنَبُ قَالَ اَىُّ الزَّيَانِبِ هِىَ قَالَ اِمْرَأَةُ عَبْدِ اللّٰهِ فَقَالَ نَعَمْ يَكُوْنُ لَهَآ اَجْرُ الْقَرَابَةِ وَاَجْرُ الصَّدَقَةِ ط (طحاوی شریف، جلد۲، صفحہ۳۰۸)

तर्जुमाः— हज़रत ज़ैनब रज़ि० (इब्ने मसऊ़द रज़ि० की बीवी) से मरवी है कि मैंने (हज़रत बिलाल रज़ि० से) कहा कि ज़रा मेरे लिए रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मालूम कर लें कि क्या मुझे शौहर और उनकी औलाद पर ख़र्च करने का कुछ सवाब मिलेगा और मेरे बारे में न बताना। ज़ैनब रज़ि० कहती हैं कि वह गए और पूछा तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने कहा वह कौन है? कहा गया कि ज़ैनब है। तो आप सल्ल० ने पूछा, कौन ज़ैनब? कहा, अ़ब्दुल्लाह की बीवी। आप सल्ल० ने फ़रमाया, हाँ उसको दो गुना सवाब मिलेगा, एक रिश्तेदारी का, दूसरे सद्क़े का।

एक रिवायत में है कि हज्जतुल विदाअ़ में रसूलुल्लाह सल्ल० ने तक़रीर की "ऐ औ़रतों की जमाअ़त! सद्क़ा करो चाहे अपने ज़ेवरों से ही करो। तुम्हारी अकसर तादाद जहन्नम में जाएगी।" तो ज़ैनब रज़ि० आईं और पूछा कि मेरे शौहर ग़रीब हैं मैं उन्हें दे सकती हूँ? रसूले पाक सल्ल० ने फ़रमाया, हाँ तुमको दो गुना सवाब मिलेगा।

(मजुमा, हिस्सा 3, पेज 122)

फ़ायदाः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि० जो ज़ैनब रज़ि० के शौहर थे, ग़रीब थे, बीवी मालदार थी और इब्ने मसऊ़द रज़ि० की पहली बीवी से औलाद भी थी जो ज़ैनब रज़ि० ही की परवरिश में थी। उन्होंने सोचा कि ये तो घर के लोग हैं इन पर ख़र्च करने का क्या सवाब मिलेगा। इस वजह से आप सल्ल० से मालूम किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, सवाब ही नहीं बल्कि दो गुना सवाब मिलेगा। इससे मालूम हुआ कि औ़रत अगर शौहर पर ख़र्च करेगी और उसको घरेलू कामों में ख़र्च करने देगी तो इसका सवाब बीवी को औरों के मुक़ाबले में ज़्यादा मिलेगा। इसी तरह सौतेली औलाद

पर ख़र्च करने का सवाब भी दो गुना मिलेगा। बड़े अफ़सोस की बात है आज सौतेली औलाद के साथ निहायत ही ज़ालिमाना सुलूक किया जाता है। उनकी हक़ तलफ़ी की जाती है, बुरी निगाह से देखा जाता है। अपनी औलाद के मुक़ाबले में सौतेली औलाद को कोई हैसियत नहीं दी जाती यह बहुत ही बुरी बात है। सौतेली औलाद को तकलीफ़ देना बड़ा गुनाह है। इसमें ज़्यादातर औरतें गिरफ़्तार हैं। कल क़्यामत में बड़ी सख़्त सज़ा होगी, अपनी औलाद से ज़्यादा उनके साथ ख़ैर ख़्वाही का बर्ताव करना चाहिए।

मांगने वाले को ज़रूर कुछ दे दे चाहे मामूली चीज़ सही

١٠٨ – عَنْ أُمِّ بُجَيْدٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهَآ أَنَّهَا قَالَتْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الْمِسْكِيْنَ لَيَقُوْمُ عَلٰى بَابِيْ فَمَآ أَجِدُ لَهٗ شَيْئًا أُعْطِيْهِ إِيَّاهُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنْ لَّمْ تَجِدِيْ إِلَّا ظِلْفًا مُّحَرَّقًا فَادْفَعِيْهِ فِيْ يَدِهٖ ط (ترغیب، جلد٢، صفحہ٢٣)

तर्जुमाः— हज़रत उम्मे बुजैद रज़ि० से मरवी है कि मैंने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, कभी मांगने वाला दरवाज़े पर आ खड़ा होता है और उसे देने को कुछ नहीं पाती तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया अगर सिवाए जले खुर के कुछ न पाओ तो उसके हाथ में वही दे दो।

फ़ायदाः— ताकीद है कि किसी मांगने वाले को घर के दरवाज़े से वापस न किया जाए वह ज़रूरत की कुछ उम्मीद लेकर आया है मामूली चीज़ के अलावा कोई चीज़ देने के लायक़ न हो तो वही

मामूली चीज़ दे दो। ताकि ख़ाली हाथ वापस न जाए। जैसे दस बीस पैसे चवन्नी अठन्नी दे दे। बची हुई रोटी, बचा हुआ खाना दे दे, पक्का न हो कच्चा सही, ताज़ा न हो बासी सही। हो सकता है उसे दूसरे घर से कुछ न मिले, इस ग़रीब को कैसी परेशानी होगी कि वह बिल्कुल महरूम और नामुराद होकर लोटे।

अपनी तरफ़ से तो उसे कुछ दे दे, अगर वह मामूली समझकर न ले तो परेशान न हो। कभी कभी सद्क़ा ख़ैरात दुनिया में भी बहुत फ़ायदे मन्द साबित होता है। आज देकर ख़ुदा-ए पाक के ख़ज़ाने में जमा कर लो, कल को नफ़े के साथ मिलेगा।

सद्क़ात की तर्ग़ीब पर औरतों के सद्क़े का एक वाक़िआ

109. हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मैं ईद में हाज़िर हुआ, ख़ुत्बे से पहले ईद की नमाज़ हुई, बग़ैर अज़ान व इक़ामत के नमाज़ ख़त्म हुई तो आप सल्ल० हज़रत बिलाल रज़ि० के सहारे खड़े हुए। हम्दो सना के बाद वअ़्ज़ फ़रमाया, नसीहत फ़रमाई और उनको फ़रमाँबरदारी की तर्ग़ीब दी। फिर औरतों में तशरीफ़ ले गये, हज़रत बिलाल रज़ि० भी साथ में थे, वअ़्ज़ फ़रमाया, ख़ुदा से डरने का हुक्म फ़रमाया, और उनको नसीहत फ़रमाई, फ़रमाँबरदारी की तरफ़ उभारा और फ़रमाया, तुम औरतें सद्क़ा व ख़ैरात करो। तुम जहन्नम में ज़्यादा जलोगी। एक औरत ने पूछा, यह क्यों अल्लाह के रसूल! आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम कोसती ज़्यादा हो और शौहरों की नाशुक्री करती हो। औरतों ने अपने ज़ेवरों को, हारों को, बुन्दों को, अंगूठियों को निकालकर

हज़रत बिलाल रज़ि० के कपड़े पर फैंकना शुरू कर दिया और ख़ुदा की राह में दे दिया। (मुस्लिम, पेज 289, बुख़ारी, पेज 133)

फ़ायदाः– उन औरतों में कितना ख़ौफ़े ख़ुदा और ख़ुदा व रसूल की मुहब्बत और जहन्नम का किस क़द्र ख़ौफ़ था। रसूलुल्लाह सल्ल० की तर्ग़ीब-ए-सदक़े पर अपने महबूब ज़ेवरों को ख़ुदा की राह में निछावर करने लगीं। क्या आजकल की औरतें ऐसा कर सकती हैं। अगर यह नहीं कर सकतीं तो जो ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े संदूक़ में रखे सड़ते रहते हैं वही मिस्कीनों और ग़रीबों में ख़ैरात कर दें।

सदक़ा ख़ैरात की आदत डालें। आसान तरीक़ा है कि हमेशा कुछ न कुछ ख़ुदा की राह में देती रहें। कभी कपड़ा दे दिया, आदत बना लें, जब नया सिले तो पुराना ख़ैरात कर दें। खाना वग़ैरह ग़रीबों, मिस्कीनों, बेवाओं में भेजती रहा करें। दीनदारों की दावत कर दिया करें और इन कामों को ख़ुद न कर सके तो शौहरों से पूछकर कर लिया करें तब भी सवाब पाएंगी।

इससे मालूम हुआ कि औरतों को सद्क़ा ख़ैरात करने की तरफ़ रग़बत करनी चाहिए, ताकि जहन्नम और दोज़ख़ के अज़ाब के बीच यह ख़ैरात आड़ और रोक हो जाए। दोज़ख़ के अज़ाब से बचने का एक अहम ज़रिया सद्क़ा ख़ैरात है। अपनी ताक़त और वुस्अत (गुंजाइश) के मुताबिक़ जो हो सके करती रहें।

अपनी लड़की जिसको तलाक़ दे दी गई हो या बेवा हो गई हो पर ख़र्च

١١٠– عَنْ سُرَاقَةَ بْنِ مَالِكٍ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلَا

اَدُلُّكُمْ عَلٰى اَفْضَلِ الصَّدَقَةِ اِبْنَتُكَ مَرْدُوْدَةٌ اِلَيْكَ لَيْسَ لَهَا كَاسِبٌ غَيْرَكَ ط (مشکوٰۃ، صفحہ ۴۲۵، ابن ماجہ، صفحہ ۲۶۱)

तर्जुमाः— सुराक़ा बिन मालिक रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तुमको अफ़ज़ल तरीन सद्क़ा न बता दूँ। तुम्हारी बेटी जो तुम्हारी तरफ़ लोटकर आ गई हो (तलाक़ या बेवा होने की वजह से या शौहर के नाराज़ और भगा देने की वजह से) जिसका तुम्हारे अलावा कोई कमाने वाला न हो, उसपर ख़र्च करना बेहतरीन सदक़ा है।

फ़ायदाः— परेशान हाल जिसका कोई पुरसाने हाल न हो उस पर ख़र्च करना अफ़ज़ल तरीन सदक़ा है, ऐसी लड़की जिसको तलाक़ हो गई हो या बेवा (जिसके शौहर का इन्तिक़ाल हो गया हो) पर ख़र्च करना अफ़ज़ल तरीन सद्क़ा है। ज़ाहिर है कि अब उस बेचारी का कौन पुरसाने हाल होगा। एक हदीस में है कि जो शख़्स किसी मुसीबत ज़दा की फ़रियाद रसी करे उसके लिए बहत्तर दर्जे मग़्फ़िरत के लिखे जाते हैं। ज़ाहिर बात है कि उससे ज़्यादा कौन ग़मज़दा और मुसीबत ज़दा होगी कि ज़ाहिरी सहारा जो था वह टूट गया जिससे जोड़ा गया था वह रिश्ता टूट गया।

ऐसी नौबत आए कि किसी की लड़की को उसका शौहर तलाक़ दे दे या उसके शौहर का इन्तिक़ाल हो जाए तो उसे अपने घर बुलाकर उसे आराम पहुंचाए। और उसकी शादी करा दे। अगर शादी किसी मस्लेहत से मुनासिब न हो या शादी उर्फ़ या माहौल की वजह से न हो सके तो उस पर लअ्न तअ्न न किया जाए, न उसे मन्हूस कहा जाए और न उसे कोसा जाए। बल्कि उसे अपने लिए ख़ैरो बरकत का ज़रिया समझा जाए कि ख़ुदा ने सद्क़ा ख़ैरात का

मौक़ा दिया और उसका सवाब आम सद्क़ात से दो गुना दिया।

अगर माँ-बाप न हों जिसकी वजह से भाइयों के ज़िम्मे पड़ जाए तो भाइयों को भी चाहिए वे उसे हुस्ने सुलूक के साथ रखें। अपनी औलाद की तरह देखें। उसपर बग़ैर रंज के बखुशी ख़र्च करें कि खुदा-ए पाक ने दो गुना सवाब पाने का मौक़ा दिया। बहनों को भी चाहिए कि वे भाई के साथ रहने को बर्दाश्त करें, कमी ज़्यादती पर खुशी के साथ सब्र करें और हंसी खुशी, खुश अख़्लाक़ी के साथ इबादत करते हुए ज़िन्दगी गुज़ार दें।

रिश्तेदारों पर सदक़ा ख़ैरात का सवाब

١١١ – عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الصَّدَقَةُ عَلَى الْمِسْكِيْنِ صَدَقَةٌ وَّعَلٰى ذَوِى الرَّحِمِ ثِنْتَانِ صَدَقَةٌ وَّصِلَةٌ وَلَفْظُ ابْنِ خُزَيْمَةَ صَدَقَتَانِ صَدَقَةٌ وَّصِلَةٌ ط

(ترغیب، جلد۲، صفحہ۳۷)

तर्जुमाः— हज़रत सलमान इब्ने आमिर रज़ि० फरमाते हैं कि नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मिस्कीन पर ख़र्च करना सदक़े का सवाब है। और रिश्तेदारों पर ख़र्च करना सद्क़ा और सिला रहमी दोनों का सवाब है और इब्ने खुज़ैमा में है कि रिश्तेदार पर सदक़ा दो सदक़ों का सवाब है ख़ैरात का और सिला रहमी का।

फ़ायदाः— हदीस-ए-पाक में रिश्तेदारों पर सद्क़ा करने को दो गुना सवाब बताया गया है। इसमें सदक़े के साथ क़राबत (रिश्तेदारी) की रिआयत भी है। हदीस-ए-पाक में रिश्तेदारों के साथ

हुस्ने सुलूक की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। रिश्तेदारों के हालात मालूम होते हैं और उनसे कभी कभी घरेलू ज़िन्दगी में झगड़े भी होते रहते हैं इसलिए उन पर ख़र्च करने को तबीयत नहीं चाहती है इसमें नफ़्स की मुख़ालफ़त भी है।

ज़्यादातर औरतें क़रीबी रिश्तेदारों के हालात से कुछ झगड़ों की वजह से सदक़ा ख़ैरात नहीं करतीं तो यह घाटे की बात है। इन शैतानी और नफ़्सानी ख़्यालात को छोड़ दें और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए रिश्तेदारों पर गुंजाइश के मुताबिक़ सदक़ा ख़ैरात का सिलसिला जारी रखें। ख़ुदा ने चाहा तो इसका बदला इस दुनिया में भी बेहतर नज़र आएगा।

पड़ोसियों की रिआयत और उन पर सदक़ा व ख़ैरात का हुक्म

١١٢ – عَنْ اَبِىْ ذَرٍّ قَالَ قَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اَبَا ذَرٍّ اِذَا طَبَخْتَ مِرْقَةً فَاَكْثِرْ مَآءَ الْمِرْقَةِ وَلَقَاهَدْ جِيْرَانَكَ اَوْ اَقْسِمْ جِيْرَانَكَ ط

(الادب المفرد، صفحہ ٢٧)

तर्जुमाः– हज़रत अबू ज़र रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू ज़र! जब तुम गोश्त पकाओ तो उसमें पानी ज़्यादा डाल दो और अपने पड़ोसियों को दो।

फ़ायदाः– पड़ोसियों की रिआयत, उनकी ख़बरगीरी और उनके साथ अच्छे सुलूक की बहुत सी रिवायतें हैं। अफ़सोस आजकल का माहौल बिल्कुल इरशादाते नबवी सल्ल० और इस्लाम की तालीमात के ख़िलाफ़ चल रहा है। अगर पड़ोसी अमीर ताक़तवर, माहौल में

इज़्ज़त वाला है, चाहे इस्लाम व तक़्वे की ज़िन्दगी से ख़ाली हो तो उसके साथ लोग अच्छा बर्ताव करते हैं। अगर माहौल में कुछ ग़रीब हो, ताक़तवर न हो, इलाक़े का न हो, रिश्ते नाते का ताल्लुक़ न हो और चाहे दीने इस्लाम के एतिबार से बेहतर हो तो उसे नीचा समझकर तकलीफ़ वाला बर्ताव करते हैं। एहसान सुलूक का बर्ताव तो दूर की बात, ज़ुल्म व सख़्त तकलीफ़ पहुंचाते हुए फ़ासिक़ाना जुम्ले और ख़ुदा के ग़ज़ब को भड़का देने वाले जुम्ले कहते हैं, क्या कर लेंगे, कौन है उनका। अल्लाह अल्लाह कैसा ज़ालिमाना व जाबिराना जुम्ला है। अरे कोई नहीं अल्लाह पाक तो है। जिसने पैदा किया और यहाँ ला बसाया वह तो उसका मुहाफ़िज़, निगहबान और वकील है। आप सल्ल० ने पड़ोसी के साथ रिआयत का हुक्म दिया है, कोई अच्छी चीज़ या जो रोज़ाना नहीं पकती है वह पके, जैसे इस माहौल में पाये पकें या गन्ने के रस की खीर इसी तरह मौसमी चीज़ पके तो उस मौक़े पर ख़्याल रखे। इस हुस्ने ताल्लुक़ात की वजह से बहुत सी नामुनासिब बातें दरगुज़र और बर्दाश्त कर ली जाती हैं और सवाब अलग मिलता है और खाने में बरकत होती है।

सदक़ा जारिया और उसकी एहमियत

١١٣ – عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِذَا مَاتَ الْاِنْسَانُ اِنْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهٗ اِلَّا مِنْ ثَلٰثَةٍ اِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِیَةٍ اَوْ عِلْمٍ یُّنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ یَّدْعُوْلَهٗ ط

(مسلم صفحہ ۴۱، مشکوٰۃ صفحہ ۳۲، الادب المفرد صفحہ ۲۵)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि आदमी जब मर जाता है तो उसके आमाल का सवाब ख़त्म हो जाता है मगर तीन चीज़ें ऐसी हैं जिनका सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है। एक सदक़ा-ए-जारिया, दूसरे वह इल्म जिससे लोगों को फ़ायदा पहुंचता रहे, तीसरे नेक औलाद जो उसके मरने के बाद दुआ करती रहे।

फ़ायदाः– आदमी मर जाता है तो उसका अमल तो ख़तम हो जाता है इसलिए सवाब का सिलसिला भी ख़त्म हो जाता है। मगर सदक़ा-ए-जारिया का सवाब इन्सान को मरने के बाद भी मिलता रहता है। सदक़ा जारिया ऐसा सदक़ा है जिसका नफ़ा बाक़ी रहने वाला है। जैसे मस्जिद मद्रसा बनवा दिया, या किसी दीनी काम के लिए जायदाद मकान वक़्फ़ कर दिया। अगर ख़ुदा-ए पाक गुंजाइश दे तो ऐसा सदक़ा ज़रूर करे। कुछ औरतों के पास काफ़ी माल होता है, बड़ी जायदाद होती है मरने के बाद आल औलाद, रिश्तेदार अगर दीनदार न हों तो गुनाहों का ज़रिया बना लेते हैं। अगर जायदाद हो तो मद्रसा, मस्जिद में वक़्फ़ कर दें, माल हो तो मद्रसा मस्जिद वग़ैरह में कोई तामीर करा दें तो बड़े नफ़े की बात होगी कि उसके सवाब का सिलसिला जारी रहेगा।

आदमी को ऐसी ही नेकी करनी चाहिए, जिससे सवाब का सिलसिला नसलों तक चलता रहे ताकि मरने के बाद उसके जिस अमल का सिलसिला बन्द हो जाए तो उस सदक़ा-ए जारिया का सवाब उससे चलता रहे। जिस तरह आदमी दुनियावी तिजारत में यह चाहता है कि ऐसा काम हो जिससे नफ़े का सिलसिला हमेशा चलता रहे इसी तरह सवाब में भी ऐसा सिलसिला तलाश करे जिसके सवाब का सिलसिला चलता रहे ताकि मरने के बाद जब नेक अमल

करने का दरवाज़ा बन्द हो जाए तो उसके सवाब का दरवाज़ा सदक़ा-ए जारिया की वजह से जारी रहे।

किसी को आग या माचिस वग़ैरह देने का सवाब

١١٤ـ عَنْ عَآئِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا ...فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَعْطٰى نَارًا فَكَاَنَّمَا تَصَدَّقَتْ بِجَمِيْعِ مَا اَنْضَجَتِ النَّارُ ط

(مجمع الزوائد، صفحہ ۱۳۶)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जिसने किसी को आग दी तो वह ऐसा है जैसे उसने आग पर पके पूरे खाने का सदक़ा किया। (यानी उसका सवाब पाया)

फ़ायदाः— घरेलू ज़िन्दगी के एतिबार से कभी कभी आग, माचिस, बर्तन वग़ैरह की ज़रूरत पेश आ जाती है वक़्त पर न मिलने से बड़ी परेशानी होती है, यह मामूली या कम क़ीमत की होती है, मगर दुनियावी ज़रूरतों में होती है, इसके देने का बहुत सवाब है।

कुछ औरतें बड़ी कंजूस तबीयत की होती हैं। मामूली चीज़ सख़्त ज़रूरत की वजह से मांगने जाओ जैसे आग, माचिस की तीली, नमक वग़ैरह तो इन्कार कर देती हैं और कुछ तो ताने भरे जुम्ले कह देती हैं। बड़ी बुरी और बहुत ज़्यादा सवाब से महरूमी की बात है। इसी तरह मेहमान आ जाने पर कोई तकिया, बिस्तर, चारपाई मांग ले, या चाक़ू, कुलहाड़ी, कुदाल वग़ैरह ज़रूरत के मुताबिक़ मांग

ले होने पर न देना मना है। क़ुरआन पाक में ख़ुदा-ए-पाक ने ऐसे अख़्लाक़ से मना फ़रमाया। क़ुरआन पाक की आयत وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ "वे मामूली मामूली चीज़ों के देने से इन्कार कर देते हैं" की तफ़सीर में लिखा है कि हज़रत आयशा रज़ि० से मरवी है कि उन्होंने नबी-ए पाक सल्ल० से पूछा, वे क्या चीज़ें हैं जिनका इन्कार दुरुस्त नहीं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, पानी, आग और नमक।

(अह्कामुल क़ुरआन, पेज 313)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० से मन्क़ूल है कि इससे मुराद वे चीज़े हैं जिनका आपस में लेना देना होता है जैसे कुलहाड़ी, बर्तन, डोल और जो इन जैसी हो। इसलिए इन चीज़ों का न देना और मना करना शरअ़न और अख़्लाक़न दोनों बुरी बात है।

शौहर के माल से सदक़ा ख़ैरात का सवाब

١١٥ – عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا تَصَدَّقَتِ الْمَرْاَةُ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا كَانَ لَهَآ اَجْرُهَا وَلِزَوْجِهَا مِثْلَ ذٰلِكَ لَا يَنْقُصُ كُلُّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِنْ اَجْرِ صَاحِبِهٖ شَيْئًا لَهٗ بِمَا كَسَبَ وَلَهَا بِمَآ اَنْفَقَتْ ط (ترغیب، جلد۲، صفحہ۶۱، بخاری، صفحہ۱۹۲)

तर्जुमाः— नबी-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब औरत अपने शौहर के घर का माल सदक़ा करे तो उसको भी सवाब मिलता है और उसके शौहर को भी इतना ही सवाब मिलता है। दोनों में से किसी के सवाब में कमी नहीं होती। शौहर को कमाने का और औरत को ख़र्च करने का

सवाब मिलता है।

फ़ायदा:— मतलब यह है कि घर में खाना वग़ैरह जो बनता है वह शौहर ही के माल से बनता है। अब यह खाना वग़ैरह औरत शौहर की आ़म इजाज़त से खिला दे, कोई फ़क़ीर, मांगने वाला आ जाए उसे दे दे। इसी तरह सालन रोटी वग़ैरह बच जाए, पड़ोसी वग़ैरह को दे दे तो उसमें जहाँ मर्द को सवाब मिलता है, कि उस के पैसे से तैयार हुआ है इसी तरह औ़रत को भी सवाब मिलता है। इसी तरह घरेलू कोई सामान जिसकी अब कोई ख़ास ज़रूरत नहीं और देने से शौहर को नाराज़गी भी न हो औ़रत दे दे और सदक़ा कर दे तो उसको भी सवाब मिलेगा।

इस हदीसे पाक में इसकी ताकीद है कि औ़रत इन चीज़ों को जो शौहर की रक़म से बनी हों और उनके सदक़ा ख़ैरात करने का आम माहौल हो और शौहर की नाराज़गी भी न हो तो औ़रतों को चाहिए कि सदक़ा ख़ैरात कर दिया करें, इसमें हर एक को सवाब मिलेगा। यह न सोचें कि जिसका है उसी को सिर्फ़ सवाब मिलेगा।

एहसान औ़र बर्दाश्त करने वाले का शुक्रिया

١١٦— وَعَنْ جَابِرٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ اَعْطَا عَطَآءً فَوَجَدَ فَلْيَجْزِ بِهِ فَاِنْ لَّمْ يَجِدْ فَلْيُثْنِ فَاِنَّ مَنْ اَثْنٰى فَقَدْ شَكَرَ وَمَنْ كَتَمَ فَقَدْ كَفَرَ ط (ترغیب،جلد۲،صفحہ۷۷)

तर्जुमा:— हज़रत जाबिर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जिसे कुछ दिया गया, उसे गुंजाइश हो तो वह भी

उसे दे। अगर न पाए तो उसकी तारीफ़ ही करे जिसने तारीफ़ की वह ऐसा है जैसे उसने शुक्र अदा कर दिया। और जिसने छुपाया (तारीफ़ तक न की) वह ऐसा है जैसे उसने नाशुक्री की।

फ़ायदाः— अगर कोई शख़्स किसी को कुछ दे चाहे औलाद हो या भाई बहन, रिश्तेदार हो तो चाहिए कि देने वाले को भी यह कुछ न कुछ पेश करे। अगर न पेश कर सके तो उसकी तारीफ़ करे उसे अच्छे कलिमात से याद करे। जैसे उन्होंने हमारी बड़ी ख़ैर ख़्वाही की, उन्होंने करम फ़रमाई की, उन्होंने हमें दिया वग़ैरह। अकसर औरतें देने वाले की तारीफ़ या उसे अच्छे लफ़्ज़ों से याद नहीं करतीं, छुपाती हैं बल्कि उलटे और कहती हैं कि क्या दिया। हमको किसी ने कुछ नहीं दिया। यह नाशुक्री की बात है। ख़ुदा व रसूल को पसन्द नहीं, जो भी दे उसका एहसान मानना चाहिए और उसका ज़बान से भी शुक्रिया अदा करना चाहिए।

हज़रत उसामा रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जिसने किसी को कुछ दिया और उसने جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا कह दिया तो वह ऐसा है जैसे कि उसने उसकी ख़ूब तारीफ़ कर दी। एक रिवायत में है कि जिसने एहसान का ज़िक्र किया उसने शुक्र किया। एक रिवायत में है कि जो बन्दे का शुक्र गुज़ार नहीं होता वह ख़ुदा का शुक्रगुज़ार भी नहीं होता। (तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 77-78)

फ़ायदाः— ज़्यादातर औरतों के माहौल में देखा गया है कि अगर किसी से कोई भलाई पहुंचे, कोई चीज़ मिले तो लेकर रख लेती हैं,उसकी तारीफ़ और उसका ज़िक्रे ख़ैर नहीं करतीं, सबसे पहले अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करना चाहिए और भलाई करने वाले को جَزَاكَ اللّٰهُ "ख़ुदा तुमको जज़ाए ख़ैर दे", कहना चाहिए कि

उसके हक़ में दुआए ख़ैर है।

औरत घर में से कुछ ख़र्च करे तो उसको भी सवाब

۱۱۷ – عَنْ عَآئِشَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا نَفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ طَعَامِ بَيْتِهَا غَيْرَ مُفْسِدَةٍ كَانَ لَهَآ اَجْرُهَا بِمَآ اَنْفَقَتْ وَلِزَوْجِهَآ اَجْرُهُ بِمَا كَسَبَ وَلِلْخَازِنِ مِثْلُ ذٰلِكَ لَا يَنْقُصُ بَعْضُهُمْ اَجْرَ بَعْضٍ شَيْئًا ط (بخاری، صفحہ ۱۹۲)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, औरत जब बग़ैर इसराफ़ और नुक़सान पहुंचाए शौहर के घर की खाने पीने की चीज़ों को सदक़ा ख़ैरात करे तो उसको ख़र्च करने का सवाब मिलेगा। और शौहर को भी कि उसने कमाया है सवाब मिलेगा और देने वाले ख़ादिम को भी सवाब मिलेगा। और एक दूसरे के सवाब में कोई कमी नहीं की जाएगी।

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ ... قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَآ اَنْفَقَتْ مِنْ غَيْرِ اَمْرِهٖ فَاِنَّ نِصْفَ اَجْرِهٖ لَهَا ط

(مسلم، جلد ۲، صفحہ ۳۳۰، کنز العمال، جلد ۱۶، صفحہ ۴۰۶)

तर्जुमाः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, बग़ैर शौहर के हुक्म दिए भी जो औरत ख़र्च करे तो उसपर भी उसे आधा सवाब मिलेगा।

फ़ायदाः— इस हदीस पाक में औरत को घर से शौहर के माल से

ख़र्च के सवाब का ज़िक्र किया गया है। किसी को खाना खिलाया जाता है या किसी की दावत की जाती है तो माल तो शौहर का होता है मगर औ़रत खाना बनाती है, औ़रत की मेहनत होती है तो उसे भी पूरा सवाब मिलता है। किस क़द्र अल्लाह का फ़ज़्ल है कि हर एक को नवाज़ा, ख़ादिम और दस्तरख़्वान पर लाकर खिलाने वाले को भी सवाब दिया। इसलिए औ़रत को चाहिए कि दूसरों को खाना खिलाने के लिए जब खाना बनाया जाए या कोई मेहमान वग़ैरह आ जाए उसके लिए रोज़ाना से ज़्यादा खाना बनाने की नौबत आ जाया करे तो परेशानी महसूस न करे, उकताहट ज़ाहिर न करे, खुशी खुशी बनाए और सवाब पाए। इसी तरह जो सालन रोटी वग़ैरह बच जाए किसी पड़ोसी या और किसी को दे देगी तो उसका भी आधा सवाब मिलेगा। इस तरह की इजाज़त आम तौर पर शौहर की तरफ़ से होती है। इसलिए हर बार इजाज़त की ज़रूरत नहीं। अपनी मर्ज़ी से दे दिया करो।

तुम नहीं दोगी तो ख़ुदा भी नहीं देगा

١١٨- عَنْ اَسْمَآءَ بِنْتِ اَبِیْ بَکْرٍ قَالَتْ قَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَنْفِقِیْ اَوْ اَنْفَحِیْ اَوِ انْضَحِیْ وَلَا تُحْصِیْ فَیُحْصِیَ اللّٰہُ عَلَیْکِ وَلَا تُوْعِیْ فَیُوْعِیَ اللّٰہُ عَلَیْکِ ط

(بخاری جلد۱، صفحہ۱۹۲، مسلم، ترغیب، جلد۲، صفحہ۵۱)

तर्जुमाः— हज़रत अस्मा रज़ि० से रिवायत है कि उनसे नबी ए पाक सल्ल० ने फ़रमाया, ख़र्च करती रहो और गिनकर मत रखो वर्ना अल्लाह भी तुझे गिनकर देगा।

फ़ायदाः— हज़रत अस्मा रज़ि०, हज़रत आयशा रज़ि० की बहन

हैं और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की माँ, तक़रीबन एक सौ साल की उमर पाई, बड़ी आ़बिदा, ज़ाहिदा और ख़र्च करने वाली थीं, उनको रसूलुल्लाह सल्ल० ने सद्क़ा ख़ैरात की तर्ग़ीब देते हुए फ़रमाया, ख़ूब ख़र्च करती रहा करो, गिन गिनकर माल जमा करने के चक्कर में मत रहना, कभी कभी जमा किया हुआ माल अपनी ज़ात पर तो ख़र्च नहीं हो पाता और दूसरा के पल्ले पड़ जाता है। और वह उसे बग़ैर सोचे समझे फ़ुज़ूल ख़र्च करता है और उसे सवाब पहुंचाने की सूरत नहीं इख़्तियार करता। नतीजा यह निकलता है कि यह बर्ज़ख़ में अफ़सोस और हसरत करता रहता है। काश! मैं अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता तो आज उसका बदला पाता। और इसका मतलब यह भी हो सकता है कि ख़ैरात करते वक़्त गिन गिनकर मत दो कि कहीं ज़्यादा न हो जाए बल्कि ख़ूब दो और उसकी गिनती को मत देखो। दिल खोलकर दो और उसका हिसाब मत रखो इसका नतीजा यह निकलेगा कि ख़ुदा ए पाक भी तुमको बेहिसाब देगा। अगर कंजूसी और कमी के साथ दोगी तो ख़ुदा-ए पाक भी कमी के साथ देगा। देख लो तुम्हारा किसमें फ़ायदा है।

एहसान जतलाने से सदक़ा, ख़ैरात का सवाब ख़त्म हो जाता है

١١٩ — يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى

तर्जुमाः— ऐ ईमान वालो! अपने सदक़ा ख़ैरात का सवाब एहसान जतलाकर या उसे तकलीफ़ देने वाली बात कहकर ख़त्म और बर्बाद न करो। (सूरः बक़रः आयतः 264)

फ़ायदाः– किसी को कुछ दिया या उसके साथ कोई भलाई और नेकी की फिर किसी मौक़े पर एहसान जतलाया। जैसे इस तरह कहा, हमने तुम्हारे साथ यह यह किया, इतना इतना दिया, हम न देते तो तुमको हाथ पसारना पड़ता, हमने दिया तो काम चला, न देते तो फिरते रहते, इसमें एहसान जतलाना, और बातों के ज़रिए से उसे तकलीफ़ भी पहुंचाना है। इस तरह कहने और करने से सदक़ा और ख़ैरात का सवाब जो ख़ुदा तआ़ला के यहां से मिलता वह बर्बाद हो जाता है।

इब्ने मुन्ज़िर ने हज़रत ज़ह्हाक से इस आयत की तफ़सीर में लिखा है जिसने किसी को कुछ दिया, फिर उसका एहसान जतलाया, या जिसे दिया था उसे तकलीफ़ दी (बुरा भला कहा, कोई चुभता जुमला कह दिया) तो उसका सारा सवाब बेकार जाएगा।

(दुर्रे मन्सूर, हिस्सा 2, पेज 44)

औ़रतों में अकसर यह आदत होती है, पहली बात तो यह कि वे किसी पर एहसान और सदक़ा ख़ैरात नहीं करतीं हैं, अल्लाह के वास्ते किसी को देती नहीं हैं। अगर कभी किसी को कुछ देती हैं, तो लड़ाई झगड़े के मौक़े पर या उनकी तरफ़ से कोई फ़ायदा न पहुंचने की सूरत में ताना दे देती हैं, एहसान जतला देती हैं और समझती हैं कि मैंने ठीक किया कह दिया। हालांकि अपनी सारी नेकी जो उससे मिली थी ख़त्म और बर्बाद कर दी। प्यारी माओ और बहनो! किसी पर भलाई करो, अल्लाह के लिए करो, बदले के लिए न करो, एहसान करके भूल जाओ, कभी एहसान मत जतलाओ, बदले की उम्मीद हरगिज़ मत रखो कि न मिलने पर एहसान जतलाने की नौबत आए, आज दुनिया में एहसान मत जतलाओ ताकि कल क़यामत में सवाब पाओ।

औरतें जहन्नम में ज़्यादा जाएंगी

١٢٠- عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ... اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ اَقَلَّ سَاكِنِى الْجَنَّةِ النِّسَآءُ ط

(بخاری، جلد۲، صفحہ۷۸۳، مسلم، جلد۲صفحہ۳۵۲)

तर्जुमाः— हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जन्नत में रहने वाली औरतें कम होंगी। (यानी मर्दों के मुक़ाबले में औरतें जहन्नम में ज़्यादा जाएंगी)।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ يَقُوْلُ قَالَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَطْلَعْتُ فِى الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ اَكْثَرَ اَهْلِهَا الْفُقَرَآءَ وَاَطْلَعْتُ فِى النَّارِ فَرَأَيْتُ اَكْثَرَ اَهْلِهَا النِّسَآءَ ط

(بخاری، جلد۲، صفحہ۷۸۳، مسلم، جلد۲، صفحہ۳۵۲)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने जन्नत को देखा तो उसमें ज़्यादातर फ़ुक़रा (ग़रीबों) को पाया और जहन्नम को देखा तो उसमें ज़्यादातर औरतों को पाया।

फ़ायदाः— बहुत सी हदीसों में यह आया है कि आप सल्ल० ने जहन्नम को जब कई अलग अलग मौक़ों पर देखा तो जहन्नम में औरतों को ज़्यादा पाया, मर्दों के मुक़ाबले में औरतें जहन्नम में ज़्यादा नज़र आईं। ऐसा क्यों? हदीस पाक में आप सल्ल० से खुद इसकी वजह मन्क़ूल है कि जहन्नम में ज़्यादा होने की वजह औरतों की ज़बान की बे एहतियाती है। चुग़ली करना, कोसना, तंज़ भरी बातें करना, बुरा भला जिस तरह चाहे कह देना, ताना देने में कोसने में

किसी का कोई लिहाज़ न करना और शौहर की नाशुक्री करना। चाहे शौहर की तरफ़ से खाने कपड़े और दूसरी ख़्वाहिशों के कामों में कितनी ही रिआ़यत की गई हो मगर कभी कोई झगड़ा हो जाए, लड़ाई की नौबत आ जाए तो कह देती है, क्या दिया, कभी चैन व सुकून की ज़िन्दगी नही पाई। प्यारी माओ और बहनो! हरगिज़ ऐसा जुम्ला न निकालो, यह शैतानी जुम्ला खुदा के ग़ज़ब की वजह और जहन्नम में धकेलने वाला है।

औरतों के ज़्यादा जहन्नम में जाने की वजह

١٢١ – عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ.. رَأَيْتُ اَكْثَرَ اَهْلِهَا النِّسَآءَ قَالُوْا لِمَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ بِكُفْرِهِنَّ قِيْلَ يَكْفُرْنَ بِاللّٰهِ قَالَ يَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ وَيَكْفُرْنَ الْاِحْسَانَ لَوْ اَحْسَنْتَ اِلَى اِحْدَاهُنَّ الدَّهْرَ ثُمَّ رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا قَالَتْ مَا رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ ط (بخاری، جلد۲، صفحہ۷۸۳)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने जहन्नम में ज़्यादा औरतों को देखा है। लोगों ने कहा यह किस वजह से, आप सल्ल० ने फ़रमाया, नाशुक्री की वजह से, पूछा गया, खुदा की नाशुक्री की वजह से? आप सल्ल० ने फ़रमाया, शौहर की नाशुक्री की वजह से। उनके एहसान की नाशुक्री करती हैं कि तुम पूरी ज़िन्दगी एहसान करते रहो, फिर तुमसे कोई (नाराज़गी वाली) बात हो जाए तो कह देंगी, मैंने इनसे कभी भलाई नहीं देखी।

फ़ायदाः— बहुत सी हदीसों में आप सल्ल० से यह मन्क़ूल है कि

आप सल्ल० ने जहन्नम को देखा तो उसमें ज़्यादातर अमीर (मालदार) और औरतों को पाया। इसकी वजह आप सल्ल० ने खुद बयान फ़रमाई कि ज़्यादातर औरतें शौहर की नाशुक्री क़रती हैं, और शौहर के एहसान को ज़रा सी बात पर भूल जाती हैं, यानी नाशुक्री और एहसान फ़रामोशी का माद्दा उनमें ज़्यादा होता है।

ऐ प्यारी माओ और बहनो! इन दोनों चीज़ों से तौबा कर लो, अल्लाह पाक ने जैसा शौहर मुक़द्दर किया है अगर उससे तकलीफ़ और परेशानी हो तो सब्र की ज़िन्दगी गुज़ार कर लो। सारी ख़्वाहिशें दुनिया में पूरी नहीं होतीं और शौहर की तरफ़ से जो मिल जाए उसकी क़द्र करो। कभी भूल से भी न कहो, हमको क्या मिला, हमको आराम नहीं पहुचा, बल्कि यह कहो अल्लाह का शुक्र है जो कुछ मिला, जो कुछ अल्लाह ने दिया, सब ठीक है। ऐ अल्लाह शुक्र है तेरा। शौहर से कहो जो भी आपने दिया बेहतर दिया, अच्छा दिया। हमें एतिराफ़ है, क़द्र है। ताकि कल जहन्नम में जाने की वजह न बनो।

औरतें जहन्नम में जाने से कैसे बचेंगी

١٢٢- عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ شَهِدْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْعِيْدِ فَبَدَأَ بِالصَّلٰوةِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ بِغَيْرِ اَذَانٍ وَّلَا اِقَامَةٍ ثُمَّ قَامَ مُتَوَكِّئًا عَلٰى بِلَالٍ فَاَمَرَ بِتَقْوَى اللّٰهِ وَحَثَّ عَلٰى طَاعَتِهٖ وَوَعَظَ النَّاسَ وَذَكَّرَهُمْ ثُمَّ مَضٰى حَتّٰى اَتَى النِّسَآءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ فَقَالَ تَصَدَّقْنَ فَاِنَّ اَكْثَرَكُنَّ حَطَبُ جَهَنَّمَ فَقَامَتْ اِمْرَاَةٌ فِىْ سِطَةِ النِّسَآءِ سَفْعَآءُ الْخَدَّيْنِ فَقَالَتْ لِمَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ لِاَنَّكُنَّ تُكْثِرْنَ الشَّكَاةَ

وَتَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ فَجَعَلْنَ يَتَصَدَّقْنَ مِنْ حُلِيِّهِنَّ يُلْقِيْنَ فِيْ ثَوْبِ بِلَالٍ مِّنْ اَقْرُطِهِنَّ وَخَوَاتِيْمِهِنَّ ط

(مسلم، جلد١، صفحہ٢٩٠)

तर्जुमाः— हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि मैं ईद के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ था। आप ने बग़ैर अज़ान और इक़ामत के ख़ुत्बे से पहले नमाज़ पढ़ी। फिर हज़रत बिलाल रज़ि० पर टेक लगाए हुए (वअ़्ज़ में) ख़ुदा से तक़्वे का हुक्म दिया और उसकी फ़रमाँबरदारी की तरफ़ रग़बत दिलाई। लोगों को नसीहत की, फिर औ़रतों की तरफ़ तशरीफ़ ले गये। उनको वअ़्ज़, नसीहत फ़रमाते हुए फ़रमाया, तुम सदक़ा ख़ैरात करो, इसलिए कि तुम जहन्नम में ज़्यादा जलने वाली हो। औ़रतों के बीच से एक बुढ़ी और कमज़ोर औ़रत उठी जिसके गाल पिचके हुए थे। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! यह किस वजह से? आप सल्ल० ने फ़रमाया, इस वजह से कि तुम औ़रतें शिकायत बहुत करती हो, और शौहर की नाशुक्री बहुत करती हो। तो औ़रतें अपने अपने ज़ेवरों को सदक़ा करने लगीं और हज़रत बिलाल रज़ि० के कपड़े में कान के बुन्दे और अंगूठियाँ डालने लगीं।

फ़ायदाः— इस हदीस-ए-पाक से मालूम हुआ कि औ़रत की नाशुक्री की तलाफ़ी या वे काम जिनकी वजह से जहन्नम वाजिब हो जाती है, सदक़ा व ख़ैरात से उसकी भरपाई हो सकती है। यक़ीनन सदक़ा, ख़ैरात उन बहुत बड़ी नेकियों और नेक कामों में से हैं जिसकी वजह से जहन्नम से छुटकारा और निजात मिल सकती है। हर एक काम की ख़ासियत होती है यानी उस काम का कुछ चीज़ों पर ख़ास असर पड़ता है। لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ को ज़्यादा पढ़ने से दुख का

दूर होना। इस्तिग़फ़ार से रोज़ी में बरकत। हुस्ने सुलूक से उम्र में बरकत। सूरह मुल्क सोते वक़्त पढ़ने से क़ब्र के अज़ाब से छुटकारा। चाश्त की नमाज़ से रोज़ी में बरकत। दुरूदे पाक ज़्यादा पढ़ने से क़ियामत में आप सल्ल० से नज़दीकी।

इसी तरह सदक़ा ख़ैरात से ख़ुदा के ग़ज़ब का ठंडा होना और जहन्नम से निजात मिलना, आने वाली बलाओं का दूर होना। इसीलिए हज़रत आयशा रज़ि० को आप सल्ल० ने एहतिमाम से फ़रमाया, एक खजूर की गुठली ही सही ख़ैरात करके जहन्नम की आग से बचो। आप सल्ल० ने यह नहीं फ़रमाया, दो रक्अत नमाज़ पढ़कर आग से बचो, यक़ीनन नमाज़ अहम तरीन इबादत है। इसका सवाब बहुत है मगर सदक़ा ख़ैरात को मुसीबतों, तकलीफ़ों और जहन्नम से निजात में एक ख़ास असर है। हदीस-ए-पाक में है:

"सदक़ा ख़ैरात सत्तर बलाओं और दुखों को दूर करता है, इसमें कम दर्जा जुज़ाम और बरस (कोढ़ की बीमारी) है।

(जामे सग़ीर, पेज 317)

एक हदीस में है, सदक़ा गुनाहों को इस तरह ख़त्म कर देता है जैसे पानी आग को। (तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 11)

एक हदीस में है, सदक़ा ख़ुदा के ग़ज़ब (ग़ुस्से) को ठंडा करता है। (तर्ग़ीब, पेज 12)

एक हदीस में है सदक़ा जहन्नम से आड़ है।

(तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 17)

एक हदीस में है सदक़ा जहन्नम से छुटकारा है।

(तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 20)

इस वजह से आप सल्ल० ने औरतों को जहन्नम से छुटकारे के

लिए सदक़ा ख़ैरात की तर्ग़ीब दी है। आप सल्ल० के ज़माने की औरतों ने उसे समझा। इसलिए उन्होंने अपने ज़ेवरात तक राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिए।

हमारे माहौल में औरतों का मिज़ाज बिल्कुल सदक़ा ख़ैरात का नहीं है। शैतान कहाँ चाहता है कि औरतें जहन्नम से छुटकारा पाएँ। इसलिए उनको सदक़ा व ख़ैरात करने नहीं देता है। सदक़े की कोई मिक़्दार तै नहीं, जो भी हो सके जितना भी हो सके बराबर करती रहे। अपना कपड़ा, जोड़ा वग़ैरह अच्छी हालत में हो किसी को दे दिया। कभी कुछ अच्छा पका पड़ोसी को, ग़रीब मिस्कीन को भेज दिया। बीमारी और पैदाइश वग़ैरह के मौक़े पर किसी को कुछ दे दिया। लड़की की शादी ब्याह में किसी को दे दिया। पास में न हुआ तो शौहर से मांगकर किसी को कुछ दे दिया। आज सदक़ा जो कुछ हो सके कर लो, कल जहन्नम से बच जाओगी और जन्नत के मज़े लूटोगी।

पड़ोसी को परेशान करने की वजह से जहन्नम

123. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि एक शख़्स ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, फ़्लाँ औरत नमाज़, ख़ैरात और रोज़ा बहुत रखती है, मगर अपनी ज़बान से पड़ोसी को तकलीफ़ देती है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, वह जहन्नम में होगी।

(मिश्कात, पेज 424, तर्ग़ीब, पेज 356)

फ़ायदाः— पड़ोसियों के हुक़ूक़ और उनकी रिआयत के बारे में क़ुरआन पाक और हदीसों में बड़ी एहमियत और ताकीद मन्क़ूल है

और उन्हें तकलीफ़ देने पर सख़्त वईद मन्क़ूल है।

एक हदीस में है, क़यामत के दिन सबसे पहले दो पड़ोसियों का मुक़द्दमा पेश किया जाएगा। (तर्ग़ीब, पेज 354)

एक हदीस में है जिसने पड़ोसी से लड़ाई की उसने मुझ से लड़ाई की। (तर्ग़ीब, पेज 354)

एक हदीस में है जिसके ज़रर (तकलीफ़) से पड़ोसी न बच सके वह जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता। (तर्ग़ीब, पेज 352)

एक हदीस में है पड़ोसी के साथ बुराई क़यामत की निशानी है। (इब्ने अबी दुनिया, पेज 232)

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि पड़ोसियों का हक़ सिर्फ़ यही नहीं कि उनको तकलीफ़ न दी जाए बल्कि उनका हक़ यह है कि उनकी तकलीफ़ को बर्दाश्त किया जाए।

एक हदीस में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद आया है कि जानते हो पड़ोसी का क्या हक़ है (वह यह है कि) अगर तुझ से मदद चाहे तो उसकी मदद कर। क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दे। अगर मोहताज हो तो उसकी मदद करे। अगर बीमार हो तो बीमारपुर्सी कर। अगर वह मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाए, अगर उसको ख़ुशी हासिल हो तो मुबारक बाद दे। अगर मुसीबत पहुंचे तो ताज़ियत करे। बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके मकान के पास अपना मकान ऊँचा न करे जिससे उसकी हवा न रुक जाए, अगर कोई फल ख़रीदे तो उसको भी हदिया दे। अगर यह न हो सके तो फल छुपाकर घर में लाकर दे कि वह न देखे और उसको तेरी औलाद लेकर बाहर न निकले ताकि पड़ोसी के बच्चे उसे देखकर रंजीदा न हों। अपने घर के धुँए से उसको

तकलीफ़ न पहुंचा। (फ़ज़ाइले सदक़ात, पेज 106)

निन्नानवे (99) औरतों में एक औरत जन्नत में जाएगी

١٢٤ – عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ .... مِنْ تِسْعٍ وَتِسْعِيْنَ امْرَأَةً وَاحِدَةً فِى الْجَنَّةِ وَبَقِيَّتُهُنَّ فِى النَّارِ ط (ابوالشيخ، كنزالعمال، صفحه٣٩٥)

तर्जुमाः— हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की रिवायत में है निन्नानवे (99) औरतों में एक औरत जन्नत में जाएगी और बाक़ी जहन्नम में।

फ़ायदाः— अल्लाह, अल्लाह! खुदा की पनाह, किस क़द्र औरतें जहन्नम में जाएंगी। बड़ी इब्रत की बात है। इसकी माक़ूल वजह यह है कि सीधी सादी कमज़ोर अक़्ल और दीनी और शरीअ़त के कामों में मज़बूत न होने की वजह से शैतान के जाल और उसके मकरो फ़रेब में जिससे वह जहन्नम का शिकार करता है औरतें ज़्यादा फंस जाती हैं। नफ़्स के मज़े में गिरफ़्तार होकर गुनाह में मुब्तला रहती हैं। गुनाह का एहसास नहीं होता इसलिए तौबा व इस्तिग़फ़ार भी सच्चे दिल से नहीं करतीं। अकसर नेकियों के मुक़ाबले में गुनाह की बातें ज़्यादा करती हैं। औरतों के माहौल में जो गुनाह होते हैं, उनमें से कुछ ज़िक्र करते हैं, ताकि खुश नसीब औरतें उन कामों से जो जहन्नम में ले जाने वाले हैं बच सकें।

1. मज़ारों पर जाना और वहाँ धागा छल्ला बांधना।
2. मज़ारों पर जाना और उनसे मुरादों को मांगना, ये दोनों गुनाह ही नहीं शिर्क हैं।

3. उ़र्स और मज़ारात-ए-मुक़द्दसा पर जाना, जैसे, अजमेर जाना, हाजी अ़ली के मज़ार पर जाना। हदीस-ए-पाक में ऐसी औ़रतों पर लानत की गई है।
4. फ़ाल खुलवाना, तावीज़ गन्डे वालों के पास जाकर फ़ाल खुलवाती हैं कि घर में बरकत नहीं, शौहर नाराज़ रहते हैं, दुकान नहीं चलती, तबीयत ख़राब रहती है इस तरह की बातों में फ़ाल खुलवाती हैं जो सरासर नाजायज़ और हराम है। इन जाहिल तावीज़ गन्डे वालों को कहाँ ग़ैब का इल्म। सिर्फ़ लोगों को ठगने के लिए उलटी सीधी बातें बता देते हैं।
5. हर परेशानी और नुक़्सान में जिन्नात और जादू का असर जानना और उससे बचने के लिए उलटे सीधे तावीज़ गन्डे वालों के पास जाना और उनसे शरीअ़त के ख़िलाफ़ नक़्श वग़ैरह हासिल करना।
6. जादू, सहर, करतब, टोटका, वाही तबाही वाला अक़ीदा रखना। अगर वाक़ई आसेब व सहर का असर हो और किसी नेक आदमी जो इस फ़न से वाक़िफ़ हो और उसकी तहक़ीक़ हो तो फिर क़ुरआन व हदीस में जो दुआएँ हैं, उनसे शिफ़ा हासिल करे, या किसी नेक आदमी से मशरूअ़ तावीज़ ले। ग़लत और झूठे तावीज़ात और अ़मलियात में पड़कर अक़ीदा फ़ासिद न करे और ईमान न खोए। अकसर औ़रतें तावीज़ गन्डे में पड़कर ईमान व अक़ीदा ख़राब कर बैठती हैं।
7. औ़रतें अकसर क़रीबी रिश्तेदारों से किसी मुख़ालफ़त और आपसी लड़ाई की वजह से बहुत दुश्मनी रखती हैं। बोलना चालना, मिलना जुलना छोड़ देती हैं। हालांकि नफ़्सानी वजह से किसी मोमिन से तीन दिन से ज्यादा सलाम और कलाम

(बोलना) छोड़ना नाजायज़ है। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० से मरवी है कि किसी आदमी के लिए यह हलाल नहीं कि अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा ताल्लुक़ तोड़े रखे कि अगर मुलाक़ात हो जाए तो यह उससे बचे और वह उससे बचे और इनमें बेहतर वह है जो पहले सलाम करे। (बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 897)

8. लान, तान, कोसना बहुत करती हैं। ज़रा सी मामूली बात पर भी लड़ाई झगड़ा शुरू कर देती हैं। यहाँ तक कि अपनी औलाद तक को कोसती रहती हैं जो नाजायज़ है। मना करने पर भी नहीं रुकती हैं। और कहती हैं दिल जलता है तो कहना पड़ता है। इस गुनाह की वजह से जहन्नम में जलना पड़े तो क्या जवाब होगा।

9. ज़्यादातर औरतें नमाज़ छोड़ती हैं। कभी बच्चों का बहाना, कभी और बहाने बनाती रहती हैं। कुछ औरतें पढ़ती हैं तो वक़्त का लिहाज़ नहीं करतीं। काम धाम में लगी रहती हैं, जब फ़ारिग़ होती हैं तब पढ़ती हैं बड़ी बुरी बात है। तमाम काम से पहले नमाज़ पढ़नी चाहिए। अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत है। अज़ान होते ही नमाज़ की आदत डाल लें। देर करने से कभी कभी मकरूह और क़ज़ा का वक़्त हो जाता है।

10. अकसर औरतों को देखा गया है कि फ़ज्र की नमाज़ पढ़ती ही नहीं या पढ़ती हैं तो क़ज़ा पढ़ती हैं। रात को देर से सोती हैं और सुबह को देर तक सोती रहती हैं यहां तक कि सूरज निकल आता है तब उठती हैं। किस क़द्र अफ़सोस की बात है। हदीस-ए-पाक में है उस वक़्त उठने वाले के कान में शैतान पैशाब कर देता है। कुछ औरतें तो ऐसी हैं देर से उठती हैं

और नमाज़ ऐसे वक़्त में पढ़ती हैं कि सूरज के निकलने का वक़्त होता है। अकसर औ़रतें सुबह के वक़्त में नमाज़ का वक़्त होने और न होने का ख़्याल नहीं करतीं, बस पढ़ लेती हैं चाहे नमाज़ फ़ासिद हो या सही इससे मतलब नहीं। उनको सूरज निकलने और छुपने का वक़्त ही नहीं मालूम होता। हालांकि हर मुसलमान चाहे मर्द हो या औ़रत, नमाज़ के वक़्त का जानना और उसका ख़्याल रखना कि कौन सही, कौन मक्रूह, कौन फ़ासिद वक़्त है ताकि नमाज़ में इसकी रिआ़यत करे और फ़ासिद वक़्त में नमाज़ पढ़ने से बेकार न जाए।

11. अकसर औ़रतें ज़ेवरात की वजह से साहिबे निसाब होती हैं। निसाब इस दौर में चार हज़ार पर पूरा हो जाता है और ज़ेवरात इस मिक़्दार, या इससे ज़्यादा ज़रूर होते हैं। इसके बावुजूद ज़कात ज़ेवरों की नहीं निकालतीं इसकी एक वजह यह भी होती है कि अकसर उनके हाथ में नक़्द रुपया नहीं होता। यह उ़ज़्र शरअ़न मोतबर नहीं। इस अहम फ़र्ज़ की अदायगी के लिए या तो शौहर से मांग लें या उनसे कह दें कि वह इतनी मिक़्दार ज़ेवरात की ज़कात निकाल दें। जिस तरह और चीज़ हस्बे ज़रूरत मांगकर पूरा कर लेती हैं इसी तरह यह शरई ज़रूरत भी तक़ाज़ा और मांगकर पूरा कर लिया करें। अगर शौहर न ध्यान दे तो इस फ़र्ज़ को अदा करने के लिए और गुनाह से बचने के लिए कुछ ज़ेवरों को बेचकर ज़कात अदा करें या ज़ेवरात की मिक़्दार निसाब से कम कर लें। या बेटी वग़ैरह को दे दें या बेचकर अपनी ज़रूरत में ख़र्च कर लें।

12. माल या ज़ेवर की वजह से औ़रतें साहिबे निसाब होने के बावुजूद क़ुरबानी नहीं करती हैं। हालांकि साहिबे निसाब

(जिसकी मिक़्दार इस ज़माने में चार हज़ार के क़रीब है) होने से क़ुरबानी फ़र्ज़ हो जाती है। इस कौताही की एक वजह यह भी है कि उनके हाथ में नक़्द रुपया नहीं होता। इससे न ज़कात, न क़ुरबानी साकित होती है। या तो शौहर से मुतालबा करके अपने नाम की क़ुरबानी कराए या फिर ज़ेवर की कुछ मिक़्दार बेचकर क़ुरबानी करे। इसी तरह हमेशा करना होगा। यहां तक कि निसाब से कम हो जाए।

मस्अलाः– अगर ज़कात, सदक़ा और क़ुरबानी की सूरत नहीं बन पाती है इधर किसी मस्लेहत और आईंदा वक़्ती ज़रूरत की वजह से ज़ेवर का रखना भी ज़रूरी मालूम होता है तो फिर यह तदबीर करे कि तमाम चाँदी को सोना बना ले और सोने पर ज़कात उस वक़्त तक वाजिब नहीं होती जब तक कि साढ़े सात तौला न हो जाए। इस तरह ये फ़र्ज़ उनके ज़िम्मे वाजिब न होंगे और गुनाह से बच जाएंगी। और इस तरह के मस्अले किसी अच्छे आलिम से पूछ लिया करें, या मसाइल की किताब में देख लिया करें।

13. हैज़ (माहवारी) और इस्तिहाज़ा जो हैज़ के अलावा बीमारी का ख़ून होता है। इसके बारे में मसाइल न जानने की वजह से बड़ी कौताही होती है। हैज़ के अलावा इस्तिहाज़ा का जो ख़ून (बीमारी की वजह से) निकलता है इसमें अकसर औरतें नमाज़ नहीं पढ़ती हैं। बीमारी का ख़ून निकलने में भी माहवारी के ख़ून की तरह नमाज़ छोड़ देती हैं। इस तरह कितनी फ़र्ज़ नमाज़ों को छोड़ने वाली हो जाती हैं। हालांकि हैज़ (माहवारी) के अलावा अगर किसी और वजह से ख़ून निकले तो उससे नमाज़ साक़ित नहीं होती पढ़नी पड़ती है। इसके मसाइल बड़े बारीक हैं। बहिश्ती ज़ेवर में देखकर अमल करें या अपने शौहर

के ज़रिए किसी आलिम से मालूम करा लिया करें। इसमें शरमाएं नहीं, यह शर्म जहन्नम में जाने की वजह है।

14. औरतें जनाबत (नापाकी) के ग़ुस्ल में अकसर देर कर देती हैं यहां तक कि नमाज़ भी क़ज़ा हो जाती है। इसलिए अगर रात में किसी वजह से नापाक हो गईं ग़ुस्ल की ज़रूरत पड़ गई तो सुबह ग़ुस्ल करके सुबह की नमाज़ नहीं पढ़ती हैं बल्कि दिन चढ़े ग़ुस्ल करती हैं और किसी भी नमाज़ का क़ज़ा कर देना, वक़्त पर न पढ़ना बड़ा गुनाह है। ग़ुस्ल की ज़रूरत पर सुबह सवेरे ग़ुस्ल करके सुबह की नमाज़ को पढ़ ले। ग़ुस्ल का इन्तिज़ाम रखना वाजिब है। उस वक़्त ठंडे पानी से नुक़सान देता हो तो गर्म पानी का इन्तिज़ाम रखना वाजिब है ताकि नमाज़ वक़्त पर अदा कर सके।

15. अकसर जब कुछ औरतें जमा होती हैं तो एक दूसरे की ग़ीबत, चुग़ली, शिकायत, बहुत सी बेकार बातें करती हैं जो गुनाह की बात है। किसी के बारे में ऐसी बात कहना जो उसके सामने न कह सके, पीठ पीछे ज़िक्र करना चुग़ली है। अकसर ग़ीबत का अहसास नहीं होता, यह बहुत बड़ा गुनाह है। इसको क़ुरआन पाक में अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाने के बराबर बताया गया है। माँ के साथ ज़िना करने से भी ज़्यादा बुरा गुनाह है। औरतों को चाहिए कि अपनी मेहफ़िल में चुग़ली, शिकायत की बातें न करें और न होने दें, कोई दूसरी औरत ऐसा करे तो उठ जाए। इन कामों से बहुत ज़्यादा एहतियात करें कि ये जहन्नम के काम हैं।

16. लड़ने और झगड़ने का माद्दा औरतों में बहुत ज़्यादा होता है। मामूली बात को बड़ी बात बनाकर लड़ने लग जाती हैं। लड़ना

झगड़ना अच्छी बात नहीं, बर्दाश्त करना चाहिए।

शौहर जिसकी फ़रमाँबरदारी और निगरानी में ज़िन्दगी गुज़ारनी है जिसकी इज़्ज़त बीवी के ज़िम्मे वाजिब है, उससे भी लड़ लेती हैं। और सवाल जवाब ही नहीं झगड़ने लग जाती हैं। हालांकि शौहर अगर नामुनासिब बात कह दे तब भी झगड़ना नहीं चाहिए सुनकर बर्दाश्त करे, हाँ संजीदगी और अदब व एहतिराम से यह कह दे कि आपका यह कहना ठीक नहीं, आपकी बात बज़ाहिर सही नहीं, वैसे आपकी बात क़ुबूल है मगर मेरी राए यह है। इस तरह बात नहीं बढ़ेगी। एक दूसरे के दिल में दुश्मनी नहीं पैदा होगी। शौहर के दिल में भी इज़्ज़त और लिहाज़ होगा और आपसी ताल्लुक़ात की खुशगवारी भी बाक़ी रहेगी।

17. अकसर औरतों को देखा गया है कि शुरू उम्र और जवानी में नमाज़ नहीं पढ़ा करती हैं, उम्र का एक हिस्सा गुज़रने के बाद नमाज़ पढ़ती हैं। ऐसा माहौल और जहालत की वजह से होता है नमाज़ तो बालिग़ होने से पहले शुरू कर देना लाज़िम है और बालिग़ होने के बाद से तो फ़ौरन नमाज़ का पढ़ना फ़र्ज़ हो जाता है। अगर पहले से आदत नहीं रहेगी तो बालिग़ होने के बाद भी पढ़ने की आदत न रहेगी।

18. वे औरतें जो नमाज़ की पाबन्द होती हैं, वे सफ़र के मौक़े पर नमाज़ों को छोड़ देती हैं या क़ज़ा कर देती हैं। सफ़र में नमाज़ का वक़्त आ जाता है तो पढ़ती ही नहीं। ख़्याल रहे नमाज़ का क़ज़ा करना ठीक नहीं। पर्दे का लिहाज़ करके वुज़ू कर लें। गाड़ियों में वुज़ू आराम से किया जा सकता है, बग़ैर किसी सख़्त ज़रूरत के नमाज़ क़ज़ा करना बड़ा गुनाह है।

19. औरतों में कंजूसी बहुत होती है कपड़े, रुपया वग़ैरह रखे रहती

हैं मगर किसी ज़रूरतमंद, मांगने वाले को अपनी चीज़ नहीं देती हैं। मौक़े के लिहाज़ से गुंजाइश की रिआयत करते हुए सदक़ा ख़ैरात करते रहना चाहिए, ऐसा न करना कंजूसी है जो जहन्नम के कामों में से है।

20. अगर ग़लती और किसी की हक़ तल्फ़ी हो जाए तो उसे माफ़ नहीं करातीं, शर्म करती हैं। किसी इन्सान को तुमसे तकलीफ़ पहुंचे या उसकी हक़ तल्फ़ी हो तो फ़ौरन ज़बान से माफ़ी मांग लो, ताकि कल क़्यामत में न फंसो।

21. कोई गुनाह या अल्लाह की नाफ़रमानी होने पर न शर्मिंदगी का एहसास होता है और न इस्तिग़फ़ार और नमाज़े तौबा पढ़कर ख़ुदा से माफ़ी मांगती हैं। याद रखो कोई गुनाह हो जाए, ख़ुदा की नाफ़रमानी हो जाए फ़ौरन तौबा करो, नमाज़े तौबा पढ़कर माफ़ करा लो, ताकि कल क़्यामत में इसकी सज़ा में जहन्नम से बचाव हो सके। बड़े गुनाहों पर तौबा न होने की शक्ल में जहन्नम की सज़ा वाजिब हो जाती है।

माँ के हक़ को ठुकराके बीवी की फ़रमाँबरदारी क़्यामत की निशानी

١٢٥ – عَنْ عَلِيِّ بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا فَعَلَتْ اُمَّتِیْ خَمْسَ عَشَرَةَ خَصْلَةً حَلَّ بِهَا الْبَلَآءُ قِيْلَ وَمَا هِیَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ اِذَا كَانَ الْمَغْنَمُ دُوَلًا وَّالْاَمَانَةُ مَغْنَمًا وَّالزَّكٰوةُ مَغْرَمًا وَّاَطَاعَ الرَّجُلُ زَوْجَتَهٗ وَعَقَّ اُمَّهٗ وَبَرَّ صَدِيْقَهٗ وَجَفَا اَبَاهُ وَارْتَفَعَ الْاَصْوَاتُ فِی الْمَسَاجِدِ وَكَانَ زَعِيْمُ الْقَوْمِ اَرْذَلُهُمْ وَاُكْرِمَ الرَّجُلُ

مَخَافَةَ شَرِّهٖ وَغَرِبَتِ الْخُمُوْرُ وَلَبِسَ الْحَرِيْرُ وَاتَّخَذَ الْقَيْنَاتُ وَالْعَنَ
اٰخِرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَوَّلَهَا فَلْيَرْ تَقِبُوْا عِنْدَ ذٰلِكَ رِيْحًا حَمْرَآءَ اَوْ خَسْفًا اَوْ
مَسْخًا

(ترمذی، جلد۲ صفحہ۴۵)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब मेरी उ़म्मत में ये पन्द्रह (15) चीज़ें होने लग जाएं तो उनपर हादसे और परेशानियों का सिलसिला शुरू हो जाएगा। पूछा गया वे क्या चीज़ें हैं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, जब माले ग़नीमत को अपना माल समझा जाए, और अमानत के माल को माले ग़नीमत समझा जाने लगे, ज़कात को बोझ और तावान और आदमी अपनी बीवी की फ़रमांबरदारी करने लग जाए और माँ से तोड़ करे, और दोस्तों के साथ भलाई करने लग जाए, और बाप के साथ रिआ़यत और ख़िदमत का मामला छोड़ दे और मस्जिदों में आवाज़ बुलन्द होने लगे, और क़ौम का बड़ा रज़ील (कमीना) शख़्स हो जाए और लोगों का इकराम उसके शर (बुराई) से बचने के लिए क्या जाने लगे। शराब आ़म हो जाए, रेशम इस्तेमाल होने लगे, गाने वालियाँ आ़म हो जाएँ, बाद के लोग पहले लोगों को बुरा कहने लग जाएँ, तो ऐसे वक़्त में सुर्ख़ आँधी का, ज़मीन के धसने का, चेहरों के बिगड़ने का इन्तिज़ार करो।

फ़ायदाः— देखिए आज इस दौर में लोग माँ-बाप के मुक़ाबले में यहां तक कि खुदा व रसूल के मुक़ाबले में किस तरह बीवी की ग़ुलामी करते हैं ताकि उनका हज़्ज़े नफ़्स (नफ़्सानी ख़्वाहिश) पूरा हो, चाहे माँ-बाप की हक़तल्फ़ी और ज़ुल्म क्यों न हो।

औरतों के लिए भी वअ़्ज़ (नसीहत) का सिलसिला होना चाहिए

١٢٦ - عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ اَنَّ النِّسَآءَ قُلْنَ لِلنَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِجْعَلْ لَّنَا یَوْمًا فَوَعَظَهُنَّ فَقَالَ اَیُّمَا امْرَاَةٍ مَّاتَ لَهَا ثَلٰثَةٌ مِّنَ الْوَلَدِ کُنَّ بِهَا حِجَابًا مِّنَ النَّارِ فَقَالَتْ اِمْرَاَةٌ وَّاثْنَانِ قَالَ وَاِثْنَانِ ط

(بخاری، جلد١، صفحہ ١٦٧، مسلم، جلد٢، صفحہ ٣٣٠)

तर्जुमाः— हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि औरतों की जमाअ़त ने नबी-ए पाक सल्ल० से दरख़्वास्त की कि कोई दिन हम लोगों के वअ़्ज़ (नसीहत) का मुक़र्रर फ़रमा लीजिए। चुनांचे आप सल्ल० ने तक़रीर फ़रमाई और फ़रमाया, जिसकी तीन औलाद का इन्तिक़ाल हो जाए तो वह जहन्नम से रोक बन जाएंगे। किसी औरत ने कहा, अगर दो हों तो? आप सल्ल० ने फ़रमाया, दो पर भी। (सवाब मिलेगा)

फ़ायदाः— अकसर औरतों में दीनी मालूमात कम हैं। इसकी एक माक़ूल वजह यह है कि मर्दों को बाहर आने जाने, जुमा, ईद और दूसरे जलसों में शरीक होने का मौक़ा मिलता है, जिससे दीन की बातें इरादे से और बग़ैर इरादे से सामने आती रहती हैं।

औरतें बेचारी घर की देखभाल और बच्चों में लगी रहती हैं। कहाँ से दीन की बातें कान में आएंगी। घरों में औरतों का माहौल दीनी नहीं, दीनी किताब के पढ़ने, फिर ख़रीदने का न ज़ेहन, न मौक़ा और फ़ुर्सत। इस वजह से औरतों में दीनी मालूमात कम होती हैं। मालूमात की कमी की वजह से दीनी मिज़ाज नहीं वर्ना दीनी बातें

सुनें तो मर्दों के मुक़ाबले में उनमें अ़मल का जज़्बा ज़्यादा रहता है।

इसलिए वअ़्ज़ (नसीहत) और इस्लाह करने वालों को चाहिए कि औ़रतों में दीनी, इस्लाही बयान का सिलसिला रखें। नुबुव्वत के दौर की औ़रतों ने तो ज़रूरत को समझकर दरख़्वास्त की। अब कहाँ चाहत? न दुनिया से फ़ुर्सत इसलिए अहले इ़ल्म को चाहिए कि उनमें वअ़्ज़ (नसीहत) का सिलसिला जारी रखें।

औ़रतों के लिए भी बैअ़त सुन्नत है

١٢٧ – عَنْ عَآئِشَةَ قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَايِعُ النِّسَآءَ بِالْكَلَامِ بِهٰذِهِ الْاٰيَةِ لَاتُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَمَا مَسَّتْ يَدُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَ اِمْرَأَةٍ اِلَّا امْرَأَةً يَمْلِكُهَا ط (بخاری، جلد۲، صفحہ۱۰۷)

तर्जुमाः– हज़रत आ़यशा रज़ि० से मरवी है कि नबी-ए पाक सल्ल० औ़रतों को इन क़ुरआनी कलिमात को कहलवाकर बैअ़त फ़रमाते थे कि वे अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी और आप सल्ल० ने किसी का हाथ नहीं छुआ, हाँ मगर बीवी, बाँदी का।

फ़ायदाः– मालूम हुआ कि जिस तरह मर्द हज़रात बैअ़त होते हैं, इसी तरह औ़रतों को भी किसी अल्लाह वाले, बुज़ुर्ग हस्ती से बैअ़त हो जाना चाहिए।

हमारे मुल्क में मर्दों की बैअ़त वग़ैरह का तो कुछ सिलसिला है कि वे मशाइख़ अल्लाह वालों से ताल्लुक़ रखते हैं, बैअ़त हो जाते हैं। जिसकी बरकत से दीनी ताल्लुक़ रहता है। मगर औ़रतों का अकाबिरीन (बुज़ुर्गों) से बैअ़त होने का सिलसिला कम है। औ़रतों को

चाहिए कि शौहर की इजाज़त से बैअ़त हो जाएं। इसके बड़े फ़ायदे हैं। दीन पर, आख़िरत की बातों पर अ़मल करना आसान हो जाता है। तिलावत व अज़्कार का शौक़ और उसमें रग़बत होती है। नाफ़रमानी और गुनाहों से बचने का जज़्बा पैदा हो जाता है। ख़्याल रहे कि यह जो समझा जाता है कि बूढ़ी औ़रतों क़ो बैअ़त होना चाहिए, यह जहालत है। अच्छे आमाल की रग़बत और शौक़ बूढ़ियों से ज़्यादा जवानों में होना चाहिए। जवानी इबादत, शौक़े आख़िरत के आमाल में गुज़रे इसकी बड़ी फ़ज़ीलत है। वे जवान जिनकी जवानी इबादत, ज़िक्र, तिलावत में ज़्यादा गुज़रे अर्श के साए के मुस्तहिक़ होंगे।

औ़रतों का जिहाद हज है

١٢٨– عَنْ عَآئِشَةَ اُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ قَالَتْ اِسْتَأْذَنْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِى الْجِهَادِ فَقَالَ جِهَادُكُنَّ الْحَجُّ ط (بخاری، صفحہ ۴۰۳، مشکوٰۃ)

तर्जुमाः– उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ि० फ़रमाती हैं मैंने आप सल्ल० से जिहाद में जाने की इजाज़त चाही तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम औ़रतों का जिहाद हज है।

عَنْ عَآئِشَةَ اُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَهُ نِسَآءُهٗ عَنِ الْجِهَادِ فَقَالَ نِعْمَ الْجِهَادُ الْحَجُّ ط (بخاری، صفحہ ۴۰۳، مشکوٰۃ)

तर्जुमाः– हज़रत उम्मुल मोमिनीन आ़यशा रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० से आप की औ़रतों ने जिहाद के बारे में मालूम किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, बेहतरीन जिहाद (तुम्हारे लिए) हज है।

फ़ायदाः— जिहाद जैसे काम में पर्दा वग़ैरह जो औ़रतों पर फ़र्ज़ है पर अ़मल नहीं हो सकता है और मर्दों के साथ मिले बग़ैर यह फ़रीज़ा अदा नहीं हो सकता है। औ़रतों में क़ुव्वत, बहादुरी और हिम्मत भी नहीं। इस वजह से शरीअ़त ने जिहाद उनसे उठा दिया। अब जिहाद के सवाब से औरतें महरूम हो गईं। इसलिए शरीअ़त ने उसका बदल हज क़रार दिया है। (माख़ूज़, फ़त्हुल बारी)

और इस में इस तरफ़ भी इशारा है कि औ़रतों को घर में रहना ज़रूरी है। सफ़र और बाहर फिरना मना है। हाँ सिर्फ़ हज एक मशरूअ़ सफ़र है। दूसरी हदीस में है हज के बाद घर में रहने को लाज़िम पकड़ ले यानी कोई सफ़र न करें। आप सल्ल० की प्यारी बीवियों ने इसी पर अ़मल किया।

हज्ज-ए-बैतुल्लाह की सआ़दत के बाद ख़ुसूसियत से घर लाज़िम पकड़ें

١٢٩ـ عَنْ اُمِّ سَلْمَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ قَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ حَجَّةِ الْوِدَاعِ هِيَ هٰذِهِ الْحَجَّةُ ثُمَّ الْجُلُوْسُ عَلٰى ظُهُوْرِ الْحَصْرِ فِي الْبُيُوْتِ ط (مجمع، صفحہ ۲۱۷، طبرانی، ابویعلی، حسن الاسوہ، صفحہ ۵۱۸)

तर्जुमाः— हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से मरवी है कि हम अज़वाज-ए-मुतह्हरात (पाक बीवियों) से हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बस तुम्हारे लिए यही हज है। इसके बाद घरों की चटाइयों पर बैठने को लाज़िम पकड़ लेना यानी घर से बाहर मत निकलना।

फ़ायदाः— ख़्याल रहे कि औ़रतों के लिए यह काम फ़ज़ीलत

वाला है कि वे घर में पर्दे के साथ ख़ुदा की इ़बादत, शौहरों की ख़िदमत, घरेलू कामों और औलाद की तर्बियत के काम अंजाम दें। घरों से बाहर निकलना, चाहे किसी वजह से हो। जैसे ऑफ़िस में काम करना, नौकरी करना वग़ैरह। इसके मक़सदे पैदाइश के ख़िलाफ़ है। अगर सफ़र है तो सिर्फ़ हज का। इस सआ़दत के बाद घर की चटाई को लाज़िम पकड़ लें। यानी बग़ैर सख़्त ज़रूरत के जिसकी शरअ़ ने इजाज़त दी है घर से बाहर क़दम न निकालें। लेकिन अफ़सोस कि आज मग़रिबी तहज़ीब से और ग़ैरों की देखा देखी शरअ़ का यह हुक्म ठुकराया जा रहा है। औरतें मर्दों की तरह बाहर बाज़ारों में निकल पड़ी हैं और अपनी इ़ज़्ज़त का पर्दा चाक कर दिया है। ख़ुदा के वास्ते मग़रिबी मलऊ़न तहज़ीब से बचो। नौकरी और ऑफ़िसों की आमदनी को क़ुरबान करके थोड़े पर सब्र कर लो। कल जन्नत के मज़े लूटो। आज माली फ़रावानी और ऐश की ख़ातिर मर्दों की तरह बेपर्दगी इख़्तियार करोगी तो कल दोज़ख़ की सज़ा भुगतोगी। सोच लो आज वक़्त है।

औरतों के लिए भी ऐतिकाफ़ सुन्नत है

۱۳۰ـ عَنْ عَآئِشَةَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرَ اَنْ يَّعْتَكِفَ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ فَاسْتَأْذَنَتْهُ عَآئِشَةُ فَاَذِنَ لَهَاط

(بخاری، صفحہ ۲۷۴)

तर्जुमाः— हज़रत आ़यशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० ने रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशूरे के ऐतिकाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया। इस पर हज़रत आ़यशा रज़ि० ने भी ऐतिकाफ़ की इजाज़त चाही तो आप सल्ल० ने इजाज़त दे दी।

عَنْ عَآئِشَةَ قَالَ اِعْتَكَفَتْ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِمْرَاَةٌ مِّنْ اَزْوَاجِهٖ مُسْتَحَاضَةٌ ط

(بخاری، جلد۱، صفحہ۲۷۳)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० से मरवी है कि इस्तिहाज़ा की हालत में आप सल्ल० की एक बीवी ने एतिकाफ़ किया।

फ़ायदाः— जिस तरह मर्दों पर एतिकाफ़ है उसी तरह औरतों के लिए भी एतिकाफ़ सुन्नत है। आप सल्ल० ने हमेशा हर रमज़ान में एतिकाफ़ फ़रमाया है। आप सल्ल० के साथ पाक बीवियों ने भी एतिकाफ़ किया है। औरतें एतिकाफ़ घर में करेंगी। अगर पहले से कोई जगह नमाज़ व तिलावत के लिए तय हो तो उसी जगह पर एतिकाफ़ करेंगी। अगर ऐसा न हो तो कोई जगह किनारे पर तय कर ले। वहाँ बिस्तर, तस्बीह, कलाम पाक, मुसल्ला वग़ैरह रख लें और पाख़ाना, पेशाब के अलावा और किसी ज़रूरत से न निकलें। औरतों को तो एतिकाफ़ आसान है। वहीं बैठीं घर का ज़रूरी काम भी कर सकती हैं और बता भी सकती हैं। ज़्यादा जानकारी के लिए मेरा रिसाला "आदाबे एतिकाफ़" देखें, उसमें तफ़सील है।

औरतों को भी मिस्वाक करना सुन्नत है

۱۳۱— عَنْ عَآئِشَةَ قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَاكُ فَيُعْطِيْنِى السِّوَاكَ لِاَغْسِلَهُ فَاَبْدَاُبِهٖ فَاَسْتَاكُ ثُمَّ اَغْسِلُهُ وَاَدْفَعُهُ اِلَيْهِ ط

(مشکوۃ، صفحہ۴۵، ابوداؤد)

तर्जुमाः— हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० मिस्वाक फ़रमाते और फिर मुझे मिस्वाक धोने को देते तो पहले मैं मिस्वाक कर लेती, फिर धोकर आप सल्ल० को दे देती।

फ़ायदाः– मिस्वाक की फ़ज़ीलत और सुन्नत जिस तरह मर्दों को है उसी तरह औरतों को भी है। मिस्वाक से नमाज़ का सवाब सत्तर गुना बढ़ जाता है।

अफ़सोस कि औरतें इस फ़ज़ीलत से नादानी और माहौल में इसका रिवाज न होने की वजह से महरूम रहती हैं। रमज़ान में तो कुछ कर भी लेती हैं और दिनों में ग़ायब। इस हदीसे पाक से मालूम हुआ कि औरतें भी मिस्वाक करेंगी। औरतों को चाहिए कि इस सुन्नत की आदत डालें और अपनी नमाज़ों का सवाब बढ़ाएँ। औरतों के लिए पीलू की मिस्वाक बेहतर है वह नरम और उसके रेशे मुलायम होते हैं और जल्दी सूखते नहीं। एक मिस्वाक कई हफ़्ते तक इस्तेमाल की जा सकती है। मिस्वाक के फ़ज़ाइल और फ़ायदों के लिए मेरी किताब 'शमाइले कुबरा', हिस्सा 6 पढ़िए।

जन्नत में ले जाने वाले कुछ आमाल का बयान

औरतों में आम तौर पर इबादत, तिलावत, ज़िक्र और दुआ वग़ैरह का मिज़ाज बहुत कम होता है। पहली बात तो यह है कि उनको घरेलू कामों और मसरूफ़ियत की वजह से मौक़ा कम मिलता है और बच्चों की परवरिश और देखभाल से ही फ़ुर्सत नहीं मिलती। मगर फिर भी उनको वक़्त निकाल कर आख़िरत के ये आमाल करते रहना चाहिए। जिस तरह घरेलू काम के लिए वक़्त निकाल कर मौक़ा पाकर कर लिया जाता है। इसी तरह नवाफ़िल, तिलावत, ज़िक्र वज़ाइफ़ को भी वक़्त और मौक़ा निकालकर अदा करते रहना चाहिए। ज़रा मौक़ा लगा, फ़ुर्सत मिली, तिलावत में लग गई। ज़रा कुछ ख़ाली नज़र आई, ज़िक्र व तस्बीह में लग गई। काम से फ़ुर्सत

मिली नमाज़ का वक़्त देखा नवाफ़िल में लग गई, इशराक़ और अव्वाबीन (मग़रिब की नमाज़ के बाद 6 रकअ़त नफ़्ल) का वक़्त तो आसानी से मिलता है।

मगर आख़िरत के आमाल से ग़फ़्लत और मिज़ाजे इबादत न होने की वजह से औरतें अक्सर नवाफ़िल व ज़िक्र, तिलावत तो दूर की बात फ़र्ज़ों तक को छोड़ देती हैं। बड़े अफ़सोस और घाटे की बात है। इबादत व ज़िक्र व तिलावत का मिज़ाज जन्नती होने की निशानी है। नवाफ़िल और ज़िक्र वग़ैरह के कुछ फ़ज़ाइल ज़िक्र किए जाते हैं ताकि इन फ़ज़ाइल से औरतों को उन आमाल की तरफ़ रग़बत पैदा हो और फ़ुर्सत व वक़्त निकालकर, मौक़ा पाकर इन आमाल व अज़्कार की फ़ज़ीलत बताएँ, कि उनसे जन्नत के दर्जे बुलन्द होते हैं। وَاللهُ الْمُوَفِّقُ (खुदा ही तौफ़ीक़ देने वाला है)

नमाज़े इशराक़

132. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ने के बाद बैठा खुदा का ज़िक्र (या तिलावत वग़ैरह) करता रहा यहां तक कि सूरज निकल आया, फिर उसने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी तो उसे एक हज और उमरा का सवाब मिलेगा। फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया कि पूरे हज व उमरे का। (तिर्मिज़ी, तर्ग़ीब)

133. हज़रत सहल बिन मुआ़ज़ रज़ि० अपने वालिद से रिवायत करते हैं आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उसी जगह बैठा (ज़िक्र तिलावत, इस्तिग़फ़ार वग़ैरह कुछ भी करता रहा) फिर इश्राक़ की दो रकअ़तें पढ़े और इस

दर्मियान ज़बान से (कोई दुनियावी बात न निकाले) तो उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं चाहे समुन्द्र के झाग के बराबर हों।

(मुसनद अहमद, तर्गीब, पेज 165)

फ़ायदाः— मतलब यह है कि फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद बेहतर यह है कि उस जगह से हटे नहीं (और अगर हट जाए कोई काम करे तब भी कोई हरज नहीं) सूरज निकलने तक बैठी ज़िक्र व तिलावत वग़ैरह करती रहे, फिर ज़रा सूरज बुलन्द हो जाए तो दो रकअ़त इशराक़ की पढ़ ले तो मक़्बूल हज व उमरा का सवाब पाएगी। ग़रीबों का यह हज है। वक़्त निकाल कर पढ़ लिया करो। रोज़ न हो सके तो हफ़्ते में एक दो मर्तबा पढ़ लिया करो। यह वक़्त बहुत मक़्बूलियत का है। अगर घरेलू काम की वजह से नमाज़ के बाद बैठने का मौक़ा न मिले तो काम से फ़ारिग़ होकर पढ़ लिया करो। ताकि यह सवाब कल क़्यामत के दिन काम आए और चार रकअ़त पढ़ने की फ़ज़ीलत यह है कि दिन भर के कामों का अल्लाह तआ़ला कफ़ील हो जाता है। जैसा वक़्त, मौक़ा और गुंजाइश देखो पढ़ लो। आ़दत बना लोगी तो नमाज़ पढ़नी आसान होगी।

नमाज़े अव्वाबीन

135. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद छः रकअ़त नफ़्ल पढ़े और उनके दर्मियान कोई दुनिया की बात न करे तो उसे बारह साल की इबादत का सवाब मिलेगा।

(तिर्मिज़ी, पेज 58, तर्गीब, पेज 404)

हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो मग़रिब के बाद छः रकअ़त (नफ़्ल नमाज़) पढ़ेगा।

उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे ख़्वाह समुन्दर के झाग के बराबर क्यों न हों।(तर्ग़ीब, हिस्सा 1, पेज 404, मज़्मउज़्-ज़वाइद, हिस्सा 2, पेज 233)

हज़रत आयशा रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया जो मग़रिब के बाद बीस रक्अत (नफ़्ल) पढ़ेगा, उसके लिए ख़ुदा जन्नत में घर बनाएगा। (इब्ने माजा, तर्ग़ीब, पेज 404)

फ़ायदाः— मग़रिब के बाद जो छः रकआत नफ़्ल पढ़ी जाती हैं उनको अव्वाबीन कहते हैं। मग़रिब की दो रकअत सुन्नत के बाद छः रकअतें हैं। अगर मौक़ा ज़्यादा न हो दो रकअत सुन्नत के बाद चार रकअत पढ़ने पर भी सवाब मिल जाता है। ख़ुदा के बरगुज़ीदा बन्दों ने इन नमाज़ों का बड़ा एहतिमाम किया है।

सलातुत्तस्बीह

134. यह वह नमाज़ है जिसे आप सल्ल० ने अपने चचा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० को नवाज़ते हुए फ़रमाया, क्या तुम्हें तोहफ़ा दूँ, एक बख़्शिश करूँ, एक चीज़ बताऊं, तुम्हें दस चीज़ का मालिक बनाऊँ, जब तुम इस काम को करोगे तो हक़ तआ़ला शानुहू तुम्हारे सब गुनाह पहले और पिछले नए और पुराने ग़लती से किए हुए या जानबूझ कर किए हुए छोटे और बड़े छुपकर किए हुए या खुल्लम खुल्ला किए हुए सब ही माफ़ फ़रमा देंगे। एक दूसरी हदीस में फ़रमाया, अगर तुम सारी दुनिया के लोगों से ज़्यादा गुनहगार होगे तो भी तुम्हारे गुनाह माफ़ हो जाएंगे। सलातुत् तस्बीह बड़ी अहम नमाज़ है। जिसका अंदाज़ा ऊपर वाली हदीस से हो सकता है। उ़लमाए उम्मत, मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा और सूफ़ी हज़रात हर ज़माने में इसका एहतिमाम फ़रमाते रहे। "*मिर्क़ात*" में लिखा है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० हर जुमे को पढ़ा करते थे। हदीस में

इस नमाज़ के दो तरीक़े बताए गए हैं।

पहला तरीक़ाः यह है कि खड़े होकर अल्हम्दु शरीफ़ और सूरत के बाद पन्द्रह बार ये चारों कलिमे **सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर** पढ़े। फिर रुकू में **सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम** के बाद दस मर्तबा पढ़ें। फिर रुकू से खड़े होकर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** के बाद दस मर्तबा पढ़े, फिर दोनों सज्दों में सुब्हा-न रब्बियल आला के बाद दस मर्तबा पढ़े। दोनों सज्दों के बीच जब बैठे दस मर्तबा पढ़े। फिर जब दूसरे सज्दे से उठे तो अल्लाहु अकबर कहता हुआ उठे और बजाए सीधा खड़ा होने के बैठ जाए और दस मर्तबा पढ़कर बग़ैर अल्लाहु अकबर कहे हुए सीधा खड़ा हो जाए। इसी तरह चौथी रक्अत के बाद पहले इन कलिमों को दस मर्तबा पढ़े फिर अत्तहिय्यात पढ़े।

दूसरा तरीक़ाः यह है कि (पहली रक्अत में) **सुब्हा-नक्कल्लाहुम्-म** के बाद अल्हम्दु से पहले पन्द्रह (15) मर्तबा पढ़े फिर सूरत के बाद दस मर्तबा पढ़े। बाक़ी सब तरीक़े बदस्तूर (यानी रुकू, उससे उठने में, दोनों सज्दों में और सज्दों के बीच में बैठने पर दस दस बार पढ़ें) अलबत्ता इस सूरत में न दूसरे सज्दे के बाद बैठने की ज़रूरत है और न (चौथी रक्अत में) अत्तहिय्यात के साथ (यानी उससे पहले) पढ़ने की। (फ़ज़ाइले ज़िक्र, पेज 75)

इस नमाज़ को बेहतर है कि हर जुमे को किसी वक़्त या महीने में एक मर्तबा या शबे बरात और शबे क़द्र के मौक़े पर, रमज़ान मुबारक के आख़री अशरे में पढ़ लिया करे, ताकि उसका अज़ीम सवाब कल क़ियामत में पाए।

नमाज़े तहज्जुद

135. इस नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत और बड़े बरकात हैं। हदीसों में इसके बड़े फ़ज़ाइल मज़कूर हैं। हज़रात अंबिया, औलिया, सूफ़िया, क़ुतुब, ग़ौस और उलमा-ए-रब्बानिय्यीन, ख़ुदा के चहीते, लाडले, प्यारे बन्दों ने इस की पाबन्दी की है। इसी की बरकत से विलायत और अल्लाह के क़रीब होने की दौलत से नवाज़े गए। बग़ैर इस नमाज़ के विलायत का दर्जा नहीं पाया जा सकता। जन्नत के दाख़िले और ख़ुदा की मारिफ़त व मुहब्बत में इस नमाज़ को बहुत दख़्ल है। हर उम्मत के सालिहीन की अलामत है। फ़ुर्सत और मौक़ा हो तो हर दिन पढ़ने की आदत डालो। नहीं तो हर हफ़्ते में एक बार पढ़ लिया करो या जब भी रात को मौक़ा मिल जाए, नींद टूट जाए, इसे पढ़ लो। इस नमाज़ के बाद दुआएँ बहुत क़ुबूल होती हैं। यह वक़्त बहुत क़ीमती है। आसमान-ए-दुनिया में ख़ुदाए पाक उतरते हैं। (यानी उनकी ख़ास तवज्जोह) उनकी मुरादों को, दुआओं को क़ुबूल फ़रमाते हैं। हो सके तो इस वक़्त को सोकर ग़फ़्लत में दुनिया के ऐश में न गुज़ारो बल्कि ख़ुदाए पाक को याद कर लो। इस्तिग़फ़ार कर लो। गुनाहों की माफ़ी मांग लो। नमाज़ न पढ़ सको तो बैठकर ख़ुदा का ज़िक्र कर लो। यह भी न हो सके तो बिस्तर पर पड़े पड़े ही उसे याद कर लो। गुनाहों से तौबा, अजूज़ो इन्किसारी का इज़्हार कर लो। आख़िरत के सवाब के अलावा दुनिया में भी इसके बहुत से फ़ायदे और बरकतें हैं। रमज़ान के दिनों में तो इसे हरगिज़ मत छोड़ो। सहरी पकाने और खाने उठती हो, उसी में वक़्त निकालकर कुछ रकअत पढ़ लिया करो। शायद कि यही रात की ख़ामोश इबादत कल क़यामत में मग़फ़िरत और निजात का ज़रिया बन जाए।

बरिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० आप सल्ल० से मरवी है, अफ़ज़ल तरीन नमाज़, फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तहज्जुद की नमाज़ है।

हज़रत मालिक अश्अरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, जन्नत में एक ऐसा बालाख़ाना है जिसका अन्दर बाहर से और बाहर अन्दर से नज़र आता है (यानी शीशे का महल)। अल्लाह ने यह उन लोगों के लिए तैयार किया है जो लोगों को खाना खिलाते हैं, सलाम को आम करते हैं और लोग सो रहे होते हों तो नमाज़ पढ़ते हैं। (तर्ग़ीब, पेज 424)

हज़रत अस्मा रज़ि० की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, क़्यामत के दिन एक जगह पर लोगों का हश्र होगा। एक मुनादी आवाज़ देगा, वे लोग कहाँ हैं जिनके पहलू बिस्तर से जुदा रहते थे। (यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते थे) तो ये लोग खड़े हो जाएंगे और ये लोग कम तादाद में होंगे। ये लोग बिला हिसाब के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। बाक़ी लोगों का हिसाब होगा।

(तर्ग़ीब, हिस्सा 1, पेज 226)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० की एक रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, मेरी उम्मत के इज़्ज़तदार लोग वे हैं जो रातों को नमाज़ पढ़ने वाले हैं। (तर्ग़ीब, पेज 11)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० की रिवायत में है कि हुज़ूर पाक सल्ल० ने फ़रमाया, तुम पर तहज्जुद की नमाज़ लाज़िम है कि तुमसे पहले नेक लोगों का तरीक़ा रहा है, तुम्हारे रब के क़रीब होने का ज़रिया है, गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, गुनाहों से रोक है और जिस्मानी बीमारियों से हिफ़ाज़त की वजह है। (तर्ग़ीब, हिस्सा 1, पेज 428)

हज़रत सहल बिन सअ़्द रज़ि० की रिवायत में है कि जान लो

मोमिन की शराफ़त रात की नमाज़ में है और उसकी इ़ज़्ज़त लोगों से इस्तिग़ना में है। (तर्ग़ीब, हिस्सा 1, पेज 431)

फ़ायदाः– इस नमाज़ का कोई ख़ास तरीक़ा नहीं है और न कोई ख़ास सूरत है। जिस तरह दो रक्अ़त नफ़्ल और सुन्नत पढ़ी जाती हैं। बैठकर भी यह नमाज़ पढ़ी जा सकती है। कम से कम दो रक्अ़त है। इसका आख़िरी वक़्त वह है जो सहरी के ख़त्म होने का है। सुबह सादिक़ तक है न कि सुबह की अज़ान तक कि कभी कभी सुबह की अज़ान सुबह सादिक़ के कुछ बाद या देर से होती है। कुछ लोगों को देखा गया है कि अज़ान तक पढ़ते रहते हैं, यह जहालत है। सुबह सादिक़ का वक़्त जन्तरियों में लिखा होता है, देख लिया जाए या किसी आ़लिम से पूछ लिया जाए।

हाजत की नमाज़ (सलातुल हाजत)

136. जब कोई ज़रूरत पेश आ जाए और कोई फ़िक्र या परेशानी सामने आ जाए तो बजाए उदास होने के हाजत की नमाज़ पढ़कर दुआ़ मांगे।

हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम में से किसी को कोई ज़रूरत पेश आ जाए तो अच्छी तरह वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ो। (नमाज़ के बाद सलाम फेरकर) दुरूद-ए-पाक पढ़ो। फिर यह दुआ़ पढ़ो (और अपनी ज़रूरत खुदा-ए पाक से मांगो, अगर वह ज़रूरत तुम्हारे हक़ में नफ़े वाली होगी तो इन्शाअल्लाह ज़रूर अल्लाह तआ़ला पूरा करेगा)।

لَآ اِلٰــهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ط سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ط
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ

وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَّا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ط (ترغيب، جلد ١، صفحہ ٤٧٦)

तर्जुमाः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि० से रिवायत है कि सलातुल हाजत बारह रक्अ़त दो-दो रक्अ़त पढ़े। आख़िरी रक्अ़त के तशह्हुद में दुरूद पाक और दुआ़ए मासूरा के बाद सज्दे में चला जाए और सात मर्तबा सूरह फ़ातिहा, सात मर्तबा आयतुल कुर्सी, फिर दस मर्तबा यह पढ़े।

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

फिर यह दुआ़ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ بِمُعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَمُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَاسْمِكَ الْاَعْظَمِ وَجَدِّكَ الْاَعْلٰى وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّةِ ط

फिर दिल ही दिल में अपनी हाजत पेश करे। (ज़बान से अल्फ़ाज़ न निकाले वर्ना नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी) फिर सिर उठाए और सलाम फेर दे। आप सल्ल० ने फ़रमाया, बेवक़ूफ़ों को यह नमाज़ न सिखाओ इसके ज़रिए से जो दुआ़ की जाती है क़ुबूल होती है। (तर्ग़ीब, हिस्सा 1, पेज 478)

तिलावते क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल, फ़ायदे और बरकात

137. हज़रत अबू उमामा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने

फ़रमाया, क़ुरआन पाक की तिलावत करो, यह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वाले की सिफ़ारिश करेगा। (मिश्कात, पेज 184, मुस्लिम)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया जो क़ुरआन का एक हर्फ़ पढ़ेगा उसे एक नेकी और हर एक नेकी का सवाब दस नेकी के बराबर मिलेगा।

(मिश्कात, पेज 186, तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू ज़र रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, तिलावते क़ुरआन का एहतिमाम किया करो, यह दुनिया में नूर है और आख़िरत में ज़ख़ीरा। (इब्ने हिब्बान, फ़ज़ाइले क़ुरआन, पेज 29)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, जो क़ुरआन की तिलावत करेगा उसके लिए आख़िरत में नूर होगा। (मुस्नद अहमद, फ़ज़ाइले क़ुरआन, पेज 42)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ, शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरह बक़रह की तिलावत की जाती है।

(मिशकात, हिस्सा 1, पेज 184)

हज़रत अ़ता बिन रबाह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स शुरू दिन में सूरह यासीन पढ़ेगा उसकी दिन की तमाम ज़रूरतें पूरी होंगी। (दारमी, मिश्कात, पेज 188)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, क़ुरआन में एक ऐसी सूरत है जो तीस आयतों वाली है वह (पढ़ने वाले की) सिफ़ारिश करेगी यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत हो जाएगी। वह सूरत तबारकल्लज़ी है। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, मिश्कात)

फ़ायदाः— क़ुरआन की तिलावत तमाम ज़िक्र और औराद में

अफ़ज़ल है। इसकी तिलावत और इसका एहतिमाम व इल्तिज़ाम बेशुमार दीनी व दुनियावी फ़ायदों और बरकतों की वजह है। ख़ुदाए पाक की नज़दीकी हासिल होती है। परेशानी और हादसे दूर होते हैं। सहूलत और बरकत वाली ज़िन्दगी हासिल होती है। घर में पढ़ने से शैतानों, जिन्नात, जादू, बीमारी से हिफ़ाज़त रहती है। आज ज़्यादातर घरों में हादसों और परेशानी की शिकायत है। इसकी एक वजह क़ुरआन की तिलावत का न होना है। अफ़सोस कि आज इन आमाल से यक़ीन उठ चुका है। ऐ माओ और प्यारी बहनो! हमेशा सुबह कम से कम एक पारा या आधा पारा पढ़ने का एहतिमाम कर लो। सूरह यासीन का मामूल रखो। बरकत वाली ज़िन्दगी हासिल होगी।

दुआएँ, अज़्कार व वज़ीफ़े

औरतों की एक ख़ास दुआ, दुआ-ए आयशा रज़ि०

हज़रत आयशा रज़ि० को आप सल्ल० ने ख़ास तौर पर इस दुआ की तालीम फ़रमाई:

١٣٨ – عَنْ اُمِّ كُلْثُوْمٍ بِنْتِ اَبِىْ بَكْرٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ دَخَلَ عَلَىَّ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنَا اُصَلِّىْ وَلَهٗ حَاجَةٌ فَاَبْطَأْتُ عَلَيْهِ قَالَ عَائِشَةُ عَلَيْكِ بِجَمِيْلِ الدُّعَاءِ وَجَوَامِعِهٖ فَلَمَّا انْصَرَفْتُ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا جَمِيْلُ الدُّعَاءِ وَجَوَامِعُهٗ قَالَ قُوْلِىْ ط

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ

النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَاَسْئَلُكَ مِمَّا سَأَلَكَ بِهٖ مُحَمَّدٌ وَّاَعُوْذُبِكَ مِمَّا تَعَوَّذَ مِنْهُ مُحَمَّدٌ وَّمَا قَضَيْتَ لِيْ مِنْ قَضَآءٍ فَاجْعَلْ عَاقِبَتَهٗ رُشْدًا ط

(حاکم، جلد ۱، صفحہ ۵۲۱، الادب المفرد، صفحہ ۱۹۲)

तर्जुमाः– हज़रत आ़यशा रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० हमारे पास तशरीफ़ लाए और मैं नमाज़ पढ़ रही थी और रसूलुल्लाह सल्ल० को कोई हाजत थी मुझे देर हो गई। आप सल्ल० ने कहा, ऐ आ़यशा! बेहतरीन और जामे दुआ़ इख़्तियार करो (यानी नमाज़ के बाद जो दुआ़ मांगोगी तो ऐसी जामे और बेहतरीन दुआ़ मांगना) मैं फ़ारिग़ हुई तो आप सल्ल० से कहा, वह कौन सी बेहतरीन और जामे दुआ़ है तो आप सल्ल० ने फ़रमाया। यह दुआ़ मांगो।

दुआ़ का तर्जुमा यह हैः

ऐ अल्लाह मैं दुनिया और आख़िरत की तमाम भलाइयों का सवाल करता हूँ। जिनका मुझे इल्म हो या न हो और दुनिया व आख़िरत की तमाम बुराइयों से पनाह मांगता हूँ चाहे उनका मुझे इल्म हो या न हो और आप से सवाल करता हूँ जन्नत का और उस क़ौल व अ़मल का जो जन्नत से क़रीब कर देने वाला हो और जहन्नम से पनाह मांगता हूँ और उस क़ौल व अ़मल से जो जहन्नम से क़रीब कर दे। और उन तमाम चीज़ों का सवाल करता हूँ जिनका रसूलुल्लाह सल्ल० ने आप से किया और उन तमाम चीज़ों से पनाह मांगता हूँ जिनसे मुहम्मद सल्ल० ने पनाह मांगी है और जो फ़ैसला मेरे लिए आप फ़रमाएँ उसमें अच्छाई का पहलू रखें।

परेशानी के मौक़े पर औरतों को एक दुआ की तल्क़ीन

١٣٩ — عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ جَآءَتْ فَاطِمَةُ اِلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ تَسْئَلُهُ خَادِمًا فَقَالَ لَهَا قُوْلِیْ "اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیْءٍ مُّنْزِلَ التَّوْرَاتِ وَالْاِنْجِیْلِ وَالْقُرْاٰنِ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰی ط اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ کُلِّ شَیْءٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِیَتِهٖ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَیْسَ قَبْلَكَ شَیْءٌ وَّاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَیْسَ بَعْدَكَ شَیْءٌ وَّاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَیْسَ فَوْقَكَ شَیْءٌ وَّاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَیْسَ دُوْنَكَ شَیْءٌ اِقْضِ عَنِّی الدَّیْنَ وَاَغْنِنِیْ مِنَ الْفَقْرِ ط (ترمذی، جلد۲، صفحہ۱۸۶)

फ़ायदाः— हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को ख़ादिम न होने की वजह से परेशानी थी। थकन और मशक़्क़त का सामना करना पड़ता था। इसलिए एक ख़ादिम का मुतालबा किया तो आप सल्ल० ने यह दुआ तालीम फ़रमाई। इससे मालूम हुआ कि इस दुआ की ख़ासियत है कि इससे औरतों की घरेलू मशक़्क़त व परेशानी दूर होती है। मशक़्क़त और परेशानी वाले हालात में सहूलत और आसानियाँ पैदा होती हैं। हर औरत के लिए मुनासिब है कि दुआ-ए फ़ातिमा का विर्द सुबह व शाम की दुआओं के साथ कर लिया करे ताकि परेशानी दूर होकर सहूलत और आसानी पैदा हो।

तर्जुमाः— ऐ अल्लाह! ऐ सातों आसमान के रब! अर्शे अज़ीम के रब! हमारे रब और हर चीज़ के रब! तौरात, इंजील व क़ुरआन के नाज़िल करने वाले। गुठली और दाने को फाड़कर निकालने वाले आप से हर चीज़ की बुराई से पनाह माँगता हूँ

जिसकी पेशानी आपके इख़्तियार में है। आप ही अव्वल हैं आपसे पहले कुछ नहीं। आप ही आख़िर हैं आप के बाद कुछ नहीं, आप ही ज़ाहिर हैं, आपके ऊपर कुछ नहीं, आप ही बातिन हैं आपके अलावा कुछ नहीं। हमारे क़र्ज़ को दूर फ़रमा दीजिए और फ़क्र को ग़िना से बदल दीजिए।

और ज़्यादा दुआओं के लिए "اَلدُّعَاءُ الْمَسْنُوْن" देखिए। हर क़िस्म, वक़्त और मौक़े की दुआएँ मुफ़ीद मालूमात के साथ ज़िक्र हैं।

कलिमा-ए-तय्यिबा और उसके फ़ज़ाइल

बेहतरीन ज़िक्र

140. हज़रत जाबिर रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, बेहतरीन ज़िक्र **ला इला-ह इल्लल्लाह** है। (तर्ग़ीब, पेज 415)

फ़ायदाः— तमाम ज़िक्रों में इसको फ़ज़ीलत हासिल है।

ईमान ताज़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो। पूछा कि हम लोग ईमान को किस तरह ताज़ा करेंगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया, **ला इला-ह इल्लल्लाह** ख़ूब कसरत से पढ़ो। (तर्ग़ीब, पेज 415)

फ़ायदाः— गुनाह और दुनिया की गंदगियों की वजह से ईमान पर जैसे एक तरह का ग़ुबार बैठ जाता है और उस पर मैल आ जाता है। इसे **ला इला-ह इल्लल्लाह** की कसरत से नया और साफ़ करने का हुक्म दिया गया है। इसी लिए अल्लाह के बुज़ुर्ग बन्दे औलिया अल्लाह हर वक़्त इसका विर्द रखते हैं ताकि ईमान

तरोताज़ा रहे।

मौत से पहले ला इला-ह इल्लल्लाह की कसरत से पढ़ने का हुक्म

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, **ला इला-ह इल्लल्लाह** की कसरत किया करो, इससे पहले कि तुम्हारे और उसके बीच कोई रुकावट आ जाए यानी मौत।

(तर्ग़ीब, पेज 416)

न मौत के वक़्त देहशत (डर), न क़ब्र में वेहशत (घबराहट)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, **ला इला-ह इल्लल्लाह** वालों पर न मौत के वक़्त कोई देहशत और न क़ब्र में कोई ख़ौफ़ और वेहशत होगी, बल्कि इसके ज़िक्र की वजह से वे अमन और सुकून में होंगे। (तर्ग़ीब, पेज 417)

गुनाह मिट जाते हैं

हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो बन्दा भी सुबह व शाम किसी वक़्त **ला इला-ह इल्लल्लाह** कहता है तो उसके नामा-ए आमाल से गुनाह मिट जाते हैं। (तर्ग़ीब, पेज 316)

अ़र्शे अ़ज़ीम की हरकत बन्दे की मग़फ़िरत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के सामने एक नूर का सुतून है। जब बन्दा **ला इला-ह इल्लल्लाह** कहता है तो वह सुतून हरकत करने लगता है

तो अल्लाह तआ़ला उसे ख़ामोश रहने का हुक्म देते हैं। वह कहता है, कैसे ख़ामोश रहूँ, आपने इसके कहने वाले की मग़फ़िरत नहीं फ़रमाई। अल्लाह तआ़ला कहते हैं, मैंने मग़फ़िरत कर दी। तब वह ख़ामोश हो जाता है। (बज़्ज़ार, तर्ग़ीब, पेज 416)

हदीसे पाक में इस ज़िक्र की बड़ी फ़ज़ीलत और अहमियत व ताकीद है इसलिए सुबह व शाम सौ (100) मर्तबा विर्द का मामूल बना लिया जाए, बेहतर यह है कि सुबह व शाम किसी नमाज़ के बाद इसका मामूल बना लिया जाए।

सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही के फ़ज़ाइल

एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ

141. हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो **सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही** (एक सौ मर्तबा) पढ़ेगा, एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ (उसके आमाल नामे में) लिखी जाएंगी। (तिबरानी, तर्ग़ीब, पेज 421)

गुनाह माफ़ चाहे समुन्दर के झाग के बराबर हों

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो **सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही** सौ मर्तबा पढ़ेगा उसके गुनाह माफ़ हो जाएंगे अगरचे समुन्दर के झाग के बराबर क्यों न हों।

तीसरे कलिमे की फ़ज़ीलत

142. हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह पाक को ये चार कलिमे बहुत ही ज़्यादा महबूब हैं:

❶ सुब्हानल्लाहि ❷ अल्हम्दु लिल्लाहि

❸ ला इला-ह इल्लल्लाहु ❹ अल्लाहु अकबर

जन्नत के पौधे

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जन्नत के पौधे **सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर** हैं। (तर्ग़ीब, हिस्सा 3, पेज 424)

जन्नत चटियल मैदान है, उसके बाग़ इन कलिमों से बनते हैं। एक कलिमा कहने से एक पेड़ लगता है।

गुनाह झड़ जाते हैं

हज़रत अनस रज़ि० से मन्क़ूल है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, **सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर** से गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं जिस तरह पेड़ से पत्ते झड़ जाते हैं। (तर्ग़ीब, पेज 423, तिर्मिज़ी)

चौथे कलिमे की फ़ज़ीलत

143. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शै-इन क़दीर.** हर दिन सौ मर्तबा पढ़ेगा उसके आमाल नामे में दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और सौ नेकियाँ लिखी जाएंगी और सौ गुनाह माफ़ होंगे और पूरे दिन शैतान से हिफ़ाज़त रहेगी और उस दिन उससे बेहतर कोई अ़मल करने वाला न होगा। हाँ मगर यही अ़मल उसने उससे ज़्यादा किया हो। (तर्ग़ीब, हिस्सा 3, पेज 449, बुख़ारी, पेज 947)

फ़ायदाः— देखिए थोड़ा अ़मल और सवाब कितना! आख़िरत के अ़लावा दुनियावी फ़ायदा भी है।

सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार

144. हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, यह सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार है, जो इसे यक़ीन करते हुए शाम को पढ़ेगा, अगर उसी रात इन्तिक़ाल कर गया तो जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और सुबह को यक़ीन के साथ पढ़ा फिर उसी दिन इन्तिक़ाल कर गया तो जन्नत में दाख़िल होगा।

(बुख़ारी, पेज 933)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ
عَلَيَّ وَاَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ ط

(ابن ماجہ، صفحہ ۲۷۶، ابوداؤد، صفحہ ۶۹۱، بخاری، صفحہ ۹۳۳)

तर्जुमाः— ऐ अल्लाह! आप ही मेरे रब हैं। आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आप ही ने मुझे पैदा किया है, मैं आपका बन्दा हूँ और जहाँ तक हो सकता है आपके अहद और वादे पर हूँ, मैं अपने किए हुए की बुराई से पनाह मांगता हूँ। आपकी जो नेमतें मुझ पर हैं उनका भी इक़रार करता हूँ और जो मेरे गुनाह हैं उनका भी इक़रार करता हूँ। मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए, आपके अ़लावा कोई गुनाह माफ़ करने वाला नहीं।

फ़ायदाः— इस दुआ़ को ज़बानी याद करे और ख़्याल करके सुबह व शाम पढ़ लिया करे ताकि जन्नत जैसी अ़ज़ीम दौलत के लायक़ हो सके।

इस्तिग़फ़ार और उसके फ़ायदे

145. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो मर्द व औरत दिन में सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करता है तो अल्लाह पाक उसके सात सौ गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं। (तर्ग़ीब, हिस्सा 3, पेज 471)

आप सल्ल० सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार करते थे

हज़रत अग़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ लोगो! इस्तिग़फ़ार करो, मैं दिन में सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ।

(मिश्कात, पेज 203)

हर ग़म से निजात और ग़ैब से रोज़ी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जिसने इस्तिग़फ़ार को लाज़िम कर लिया, (यानी ज़रूर पढ़ने का मामूल बना लिया) अल्लाह पाक हर ग़म और रंज से उसे निजात देगा और हर परेशानी का हल होगा और उसे रिज़्क़ ऐसी जगह से मिलेगा कि उसने सोचा भी न होगा।

(तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 468)

फ़ायदाः– रोज़ी की सहूलत और बरकत के लिए कसरत से इस्तिग़फ़ार करना बहुत फ़ायदेमंद है।

जो अपने नामा-ए आमाल से ख़ुश होना चाहे

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो यह चाहता हो कि उसका नामा-ए आमाल उसे ख़ुश कर दे वह कसरत से इस्तिग़फ़ार किया करे। (तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 469)

फ़ायदाः— इस्तिग़फ़ार के बहुत से दीनी और दुनियावी फ़ायदे और बरकतें हैं। हर इन्सान गुनाह में मुब्तला रहता है। गुनाहों की वजह से मुसीबतें और हादसे पेश आते हैं इसलिए हमेशा इस्तिग़फ़ार करते रहने की आदत बना ले। रोज़ाना सुबह व शाम सत्तर या सौ मर्तबा पढ़ लिया करे। न ही सके तो सोते वक़्त इसका विर्द रखे। इस्तिग़फ़ार ज़्यादा पढ़ने से परेशानियाँ दूर होती हैं और उनके हल का रास्ता निकलता है। रिज़्क़ की परेशानी और तंगी दूर होती है। ग़ैब से बिला गुमान उसके अस्बाब पैदा होते हैं।

औरतों के कुछ ख़ास ज़िक्र

146. हज़रत उम्मे हानी रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा आप सल्ल० तशरीफ़ लाए, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं बूढ़ी हो गई हूँ, कमज़ोर हूँ, कोई ऐसा अमल बता दीजिए कि मैं उसे बैठी बैठी करती रहूँ। आप सल्ल० ने फ़रमाया, सुब्हानल्लाहि 100 मर्तबा पढ़ा करो, इसका सवाब ऐसा है जैसे तुमने सौ अरब गुलाम आज़ाद किए। अल्हम्दुलिल्लाहि 100 मर्तबा पढ़ा करो, इसका सवाब ऐसा है जैसे तुमने सौ घोड़े साज़ो सामान के साथ जिहाद में सवारी के लिए दिए। अल्लाहु अकबर सौ मर्तबा पढ़ा करो, यह ऐसा है जैसे तुमने 100 ऊँट की क़ुरबानी की और वे क़ुबूल हो गए और ला इला-ह इल्लल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो। इसका सवाब तमाम आसमान और ज़मीन के बीच को भर देता है। इससे बढ़कर किसी का कोई अमल नहीं जो मक़्बूल हो। (इब्ने माजा, तर्ग़ीब, पेज 426)

फ़ायदाः— देखिए कितना आसान काम है और किस क़द्र अज़ीम सवाब।

हज़रत उम्मे सलैम कहती हैं कि मैंने आप सल्ल० से अर्ज़ किया,

कोई अ़मल मुझे तालीम फ़रमा दीजिए जिसके ज़रिए मैं नमाज़ में (सलाम के बाद) दुआ़ करूं। आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया, **सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, अल्लाहु अकबर** दस दस मर्तबा पढ़ लिया करो, जो चाहो इसके बाद दुआ़ किया करो। (तिर्मिज़ी)

हज़रत जुवैरिया रज़ि० से मन्क़ूल है कि आप सल्ल० उनके पास से सुबह की नमाज़ के बाद तशरीफ़ ले गए। फिर जब चाश्त के वक़्त तशरीफ़ लाए तो देखा कि उसी तरह बैठी ज़िक्र कर रही हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, जिस हाल में तुम से जुदा हुआ था उसी हाल में तुमको ज़िक्र करती हुई पा रहा हूँ (यानी इस क़द्र लम्बे वक़्त तक ज़िक्र करती रहीं) आप सल्ल० ने फ़रमाया, ये चार कलिमे मैंने तीन मर्तबा कहे हैं। इसका सवाब तुम वज़न करोगी तो तुम्हारे ज़िक्र के बराबर हो जाएगा, वे ये हैं। **सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही अ़-द-द ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही व ज़ि-न-त अ़र्शिही व मिदा-द कलिमातिही.** (मुस्लिम, मिश्कात, पेज 201, तर्ग़ीब)

तस्बीहे फ़ातिमी

147. यह एक बहुत ही मशहूर और मारूफ़ तस्बीह है, जो बहुत ही फ़ज़ीलतों व ख़ूबियों वाली है। आप सल्ल० ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को घरेलू काम में मशक़्क़त व परेशानी की वजह से ख़ादिम तलब करने पर खुसूसियत के साथ यह तस्बीह बताई थी। जिसका ज़िक्र अहादीसे पाक में बहुत मिलता है।

आप सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुमको ख़ादिम से बेहतर (वज़ीफ़ा) न बता दूँ। जब तुम दोनों बिस्तर पर जाओ तो 33 मर्तबा सुब्हानल्लाहि और 33 मर्तबा अल्हम्दु लिल्लाहि और 33 मर्तबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। यह तुम दोनों के लिए ख़ादिम से बेहतर

है। (बुख़ारी, पेज 935

एक रिवायत में 34 मर्तबा अल्लाहु अकबर है, इस तरह 100 पूरे हो जाएंगे।

फ़ायदाः– तस्बीहे फ़ातिमी की बहुत ताकीद और फ़ज़ीलत है और इसके बड़े फ़ायदे और बरकतें हैं। हाफ़िज़ इब्ने तैमिया ने कहाः जो इस पर हमेशगी और पाबन्दी इख़्तियार करेगा, उसे मशक़्क़त के कामों में थकान न होगी। मुल्ला अ़ली क़ारी रह० ने लिखा है कि तज्रिबे से यह साबित है कि इन तस्बीहों का सोते वक़्त पढ़ना थकान को दूर करता है और ताक़त को ज़्यादा करता है। औरतों के लिए ख़ासकर यह तस्बीह बहुत फ़ायदेमंद है। सवाब के अ़लावा घरेलू काम में इसकी बरकत से सहूलत होती है। (फ़ज़ाइले ज़िक्र, पेज 168)

148. सुबह व शाम का वह ज़िक्र और दुआ़ जो सवाब के साथ परेशानियों को भी दूर करती है

1. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० की रिवायत में है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स सुबह व शाम इसको दस मर्तबा पढ़ लिया करेगा, उसे दस नेकियाँ मिलेंगी, दस गुनाह माफ़ होंगे, दस गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और वह शैतान और तमाम मुसीबतों और परेशानियों से महफ़ूज़ रहेगा।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط (ترغيب، صفحہ ۲۵۵)

2. हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो इसे सुबह पढ़ ले तो शाम तक और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक किसी मुसीबत, हादसे और परेशानी में गिरफ़्तार न

होगा (ग़ैब से उसकी हिफ़ाज़त और बचाव के अस्बाब पैदा होंगे।)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّآ اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ. مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ط وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْمًا ط اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ط اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ O

(الدعا للطبرانی، صفحہ ۲۴۳)

कफ़्फ़ारा-ए मज्लिस की दुआ

149. आजकल अकसर मज्लिसें जहाँ कुछ औरतें बैठती हैं वहाँ नामुनासिब, शरअ के ख़िलाफ़ और सिर्फ़ दुनियावी कामों की बातें होती हैं। आख़िरत का, दीन व सुन्नत का कोई ज़िक्र नहीं होता। ऐसी मज्लिस पर हदीसे पाक में वईद और मनाही आई है। क़्यामत के दिन ऐसी मज्लिस हसरत और अफ़सोस की वजह होगी। इसलिए हर मज्लिस में उठने से पहले कफ़्फ़ारा-ए-मज्लिस की दुआ पढ़ ले तो मज्लिस का कफ़्फ़ारा हो जाए और क़्यामत के दिन हसरत और अफ़सोस से महफ़ूज़ हो जाए, लेकिन ख़्याल रहे कि अगर किसी की चुग़ली की, पीठ पीछे बुराई की या तकलीफ़ पहुंचाई तो उससे ज़बान से माफ़ी मांगनी होगी सिर्फ़ यह दुआ काफ़ी नहीं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जिस किसी मज्लिस में नामुनासिब बातें हो जाएँ तो उठने से पहले यह दुआ पढ़ ले तो उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

(तिर्मिज़ी, हिस्सा 2, पेज 181)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ط

तर्जुमाः– पाक है तू ऐ अल्लाह और मैं आपकी तारीफ़ बयान करता हूँ, गवाही देता हूँ आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आपसे मग़फ़िरत चाहता हूँ और तौबा करता हूँ। (तर्ग़ीब, पेज 411)

दरुदे पाक के कुछ फ़ज़ाइल और बरकतें

150. हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो मुझ पर एक मर्तबा दरुद भेजेगा, अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा, दस गुनाहों को माफ़ करेगा और दस दर्जों को बुलन्द करेगा। (जिलाउल अफ़्हाम, पेज 24 ज़ादुल अबरार)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, क्यामत के दिन सबसे ज़्यादा क़रीब मुझसे वह शख़्स होगा जो सबसे ज़्यादा दरूद पढ़ता होगा। (तर्ग़ीब, हिस्सा 2, पेज 500)

हज़रत जाबिर रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमायाः जो शख़्स हर दिन मुझ पर सौ बार दरूद पढ़ेगा, उसकी सौ ज़रूरतें पूरी होंगी। सत्तर आख़िरत से मुताल्लिक़, तीस दुनिया से मुताल्लिक़ होंगी। (जिलाउल अफ़्हाम, पेज 34, ज़ादुल अबरार, पेज 43)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, जो मुझ पर जुमे के दिन (अस्र की नमाज़ के बाद) अपनी जगह से उठने से पहले यह दरूद पढ़ेगा, उसके अस्सी साल के गुनाह माफ़ होंगे और अस्सी साल की इबादत का सवाब लिखा जाएगा। (अल्-क़ौलुल बदीअ़, पेज 51)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا ط

फ़ायदाः– दरूदे पाक की बड़ी फ़ज़ीलत है। बेशुमार दीनी और दुनियावी फ़ायदों और बरकतों की वजह है। हर दिन सुबह व शाम सौ-सौ मर्तबा या कम से कम दस-दस मर्तबा का रोज़ाना पढ़ने का मामूल बना लिया जाए, इसी तरह और दूसरे औराद, ज़िक्र, तस्बीह व तिलावत का रोज़ाना मामूल बना लिया जाए। इसमें सुस्ती न की जाए जिस तरह और दुनियावी काम करती हैं उसी तरह जन्नत के उन कामों के लिए भी वक़्त निकालें कि मरने के बाद राहत और आराम की ज़िन्दगी मिले। हर वक़्त ज़बान को इन औराद से तर रखें। कभी दुरूद पढ़ लिया, कभी इस्तिग़फ़ार कर लिया, कभी तस्बीह पढ़ ली ताकि कल जन्नत के मज़े और राहत की ज़िन्दगी हासिल हो सके। अल्लाह पाक हम सबको जन्नत के कामों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन!

दरूदे पाक के दीनी और दुनियावी फ़ायदों और बरकतों को जानने के लिए हमारी किताब "ज़ादुल अबरार" और दुआ़ओं की तफ़सीली मालूमात के लिए "अद्-दुआ़उल मस्नून" देखिए।

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ هٰذِهِ الرِّسَالَةَ لِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاجْعَلْهَا لَنَا ذُخْرًا وَّوَسِيْلَةَ نَجَاتٍ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ بِفَضْلِكَ وَكَرَمِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ط

मुहम्मद इरशाद क़ासमी

15 मुहर्रमुल हराम, 1421 हि०